विक्रम संवत् 2081 ▪ अगहन (मार्गशीर्ष)/पौष मास (10) ▪ 01 दिसम्बर 2024 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

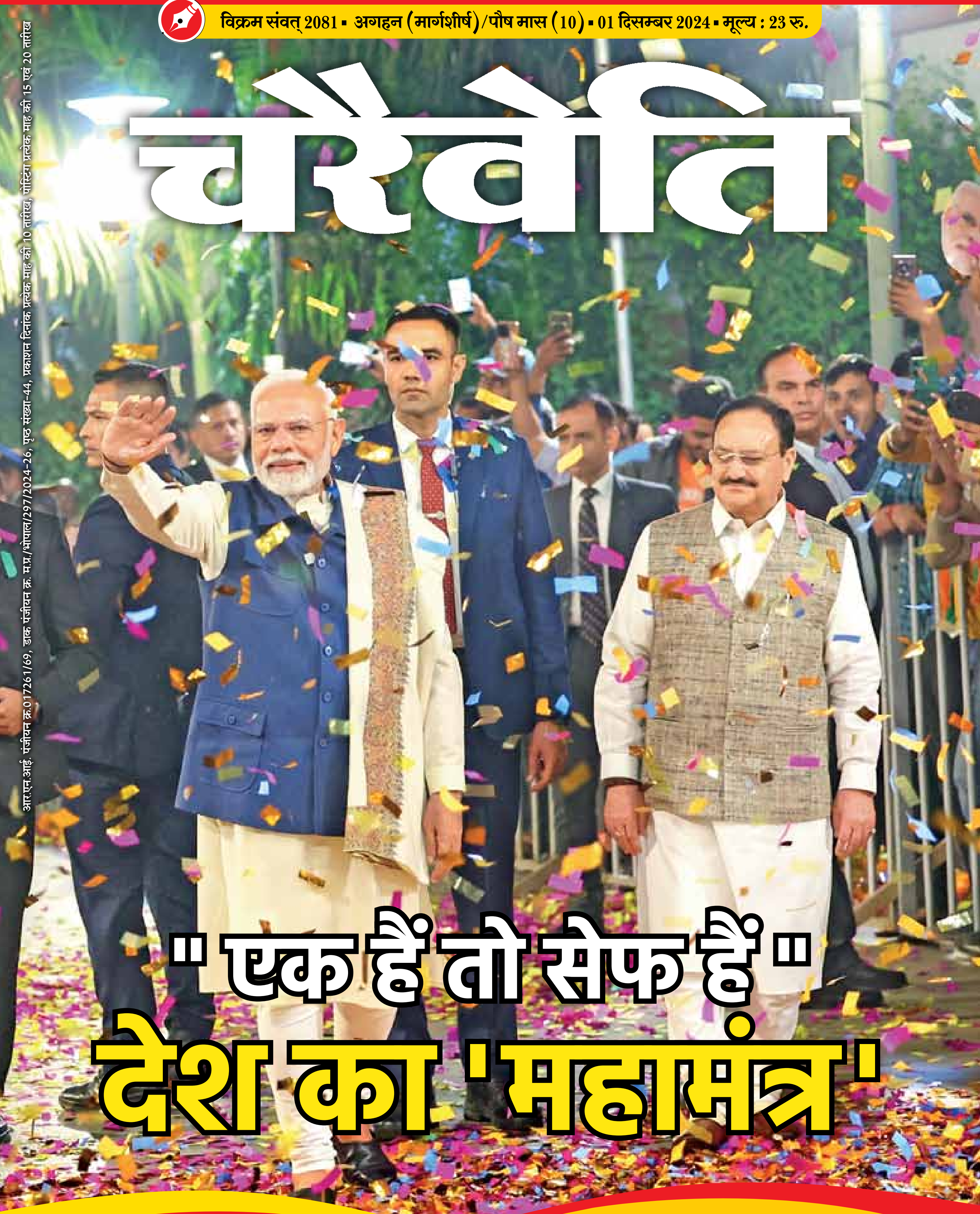

"एक हैं तो सेफ हैं"

देश का 'महामंत्र'

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को नाइजीरिया के दूसरे सर्वोच्च सम्मान-ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर से सम्मानित किया गया।

- गुयाना में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को गुयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार - द ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुयाना के जॉर्जटाउन स्थित सरस्वती विद्या निकेतन स्कूल में प्रार्थना की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पहले बोडोलैंड महोत्सव का उद्घाटन किया।

- गुयाना के जॉर्जटाउन में भारतीय समुदाय द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

- भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने भाजपा को जानें के तहत सिंगापुर की सत्तारूढ़ पार्टी के नेताओं से बातचीत की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ब्राजील में जी20 शिखर सम्मेलन के तीसरे सत्र में भाग लिया।

- भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने गुरुद्वारा श्री दशमेश दरबार जी में पूजा-अर्चना की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** ▪ **संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ एक हैं तो सेफ हैं

» **कवर स्टोरी** ▪ 05

▪ 'एक हैं तो सेफ हैं' देश का 'महामंत्र' विकास, सुशासन और सामाजिक...

▪ **अभूतपूर्व जीत** 09

» भाजपा को अभूतपूर्व आशीर्वाद: जगत प्रकाश नड्डा ...

» उद्धव को जनता ने सबक सिखाया - डॉ. मोहन यादव

▪ **संगठन पर्व कार्यशाला** 12

» 90 प्रतिशत बूथ समितियों का गठन ऐतिहासिक...

▪ **संविधान दिवस** 13-18

» संविधान वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक...

» भाजपा ही संविधान की सच्ची रक्षक - जगत प्रकाश नड्डा

» कांग्रेस ने संविधान का गला घोंटा - हितानंद जी

▪ **द साबरमती रिपोर्ट** 19

» 'द साबरमती रिपोर्ट' सच्चाई सामने लाई - डॉ. मोहन यादव

▪ **प्रकाश पर्व** 20

» सद्कर्मों की प्रेरणा देने के लिए सिख मार्ग सबसे अच्छा...

▪ **जनजातीय गौरव दिवस** 21-27

» जनजातीय गौरव दिवस - अन्याय को दूर करने का ईमानदार...

» भगवान बिरसा मुंडा देश के गौरव - विष्णुदत्त शर्मा

» जल, जंगल और जमीन का अधिकार जनजातीय समाज का...

» मोदी जी ने दिया बिरसा मुंडा को सम्मान - डॉ. महेन्द्र सिंह

▪ **विकास की ओर मध्य प्रदेश** 27

» जहां रोजगार मिलेगा, मध्यप्रदेश वहां पहले खड़ा दिखाई ...

▪ **संविधान दिवस** 28

» संविधान दिवस मनाना मोदी जी की देन - अजय जामवाल...

▪ **नारी सशक्तिकरण** 30

» नारी सशक्तिकरण में अग्रणी मध्यप्रदेश...

▪ **मन की बात** 32

» प्रवासी भारतीयों ने विभिन्न देशों में अपनी पहचान बनाई ...

▪ **पुण्यतिथि** 36

» प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर...

▪ **जयंती** 37-40

» धर्मो रक्षति रक्षित:पं. मदन मोहन मालवीय

» सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद...

» ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है : लालकृष्ण आडवाणी

» मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस

▪ **विचार प्रवाह :** पं. दीनदयाल उपाध्याय 41

» भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. स्नान दान अमावस्या 2. चन्द्रदर्शन 4. विनायकी चतुर्थी व्रत 6. विवाह पंचमी, नाग दिवाली 7. चम्पा षष्ठी, बैगन छठ 8. नंदा सप्तमी 11. मोक्षदा एकादशी 13. प्रदोष व्रत,अनंग त्रियोदशी 14. व्रत पूर्णिमा,दत्त पूर्णिमा, पिशाचमोचनी यात्रा, रोहिणी व्रत 15. स्नानदान पूर्णिमा 18. गणेश चतुर्थी व्रत 23. रूक्मिणी अष्टमी 26. सफला एकादशी व्रत 27. सुरूप द्वादशी 28. प्रदोष व्रत 29. शिव चतुर्दशी व्रत 30. स्ना. दा. श्रा. सोमवती अमावस्या

• मुख्य जयंती-दिवस

3. भोपाल गैस त्रासदी,अधिवक्ता दि. 4. स्वामी ब्रहम्मानंद लोधी जयंती 6. गुरू तेगबहादुर श. दिवस, डॉ. अम्बेडकर पुण्यतिथि 7. सशस्त्र सेना झंडा दिवस 10. वीर नारायण सिंह ब.दि. 11. ओशो जन्मोत्सव 13. दादा धूनीवाले निर्वाण दिवस 14. मणिक प्रभु ज., ऊर्जा संरक्षण दिवस 18. म. छत्रसाल परमधाम वास दिवस 22. श्रीनिवास रामानुजन ज., गणित दि. 25. पं. मदनमोहन मालवीय जयंती, पं. अटल बिहारी वाजपेई जयंती

वर्ष-56, अंक : 10, भोपाल, दिसम्बर 2024

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमें एक ऐसा भारत
बनाना है
जो हमारे पूर्वजों के
भारत से भी
अधिक गौरवशाली हो।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक
एवं सम्पादक

संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक

योगेन्द्रनाथ बरतरिया

मोबा. नं. 09425303801

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

एक हैं तो सेफ हैं

केंद्र में लगातार तीसरी बार भाजपा सरकार, अपने आप में बहुत बड़ा, मोदी सरकार के प्रति जनता का भरोसा सिद्ध होता है। जनादेश मोदी जी के विकास मॉडल पर जनता की स्वीकृति की मोहर है।

हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में मतदाताओं ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के महामंत्र ''एक हैं तो सेफ हैं'' को न केवल स्वीकार किया बल्कि एकजुट होकर मतदान में भाग लेकर देश को मजबूत बनाने तथा 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को दोहराया है। मतदाताओं ने फिर से भाजपा पर ही अपना भरोसा जताया है। महाराष्ट्र में यह लगातार तीसरी बार है जब मतदाताओं ने भाजपा गठबंधन को प्रचंड बहुमत से सरकार बनाने का जनादेश दिया है। भाजपा को मिला जनादेश सिद्ध करता है की जनता भाजपा सरकार के विकास मंडल को स्वीकृति प्रदान कर चुकी है।

केंद्र में लगातार तीसरी बार भाजपा सरकार, अपने आप में बहुत बड़ा, मोदी सरकार के प्रति जनता का भरोसा सिद्ध होता है। जनादेश मोदी जी के विकास मॉडल पर जनता की स्वीकृति की मोहर है।

राज्यों की तरफ नजर डालें तो गुजरात, गोवा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा और महाराष्ट्र, असम, त्रिपुरा, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश भाजपा को बार-बार जनादेश सिद्ध करता है कि जनता को भाजपा का शासन मॉडल पसंद आ रहा है। जनता को भाजपा का विकास मॉडल पसंद आ रहा है। जनता को भाजपा का सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास पसंद आ रहा है। महाराष्ट्र विजय, यह 50 वर्षों में किसी पार्टी या गठबंधन के लिए सबसे बड़ी जीत सिद्ध हुई।

26 नवंबर को देश में संविधान दिवस मनाया गया। यह संविधान निर्माताओं को, डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को भाजपा सरकार की संविधान के प्रति गहरी आस्था, विश्वास, श्रद्धा, समर्पण व आदर को प्रकट करता है। संविधान दिवस की उपयोगिता कांग्रेस की समझ से परे है क्योंकि कांग्रेस तो स्वयं डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी को लोकसभा में न आने देने का प्रयास कर चुकी है। तो डॉक्टर अंबेडकर जी के संविधान को सम्मान तो दूर के कौड़ी है। दरअसल कांग्रेस दो संविधान चलाना चाहती है। कांग्रेस बार-बार संविधान का अपमान करने में कोई परहेज भी नहीं करती। देश में आपातकाल ठोंक कर संविधान को बंधक बना दिया गया था। 90 बार चुनी हुई राज्य सरकारों को बर्खास्त कर संविधान पर आघात किए गए। न्यायपालिका को नियंत्रित करने के प्रयास किए गए। बाबा साहब के संविधान में धर्म के नाम पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है पर कांग्रेस वोट बैंक के खातिर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति को दिए गए आरक्षण के प्रावधान में कटौती कर वोट बैंक के लिए रास्ता बनाती है। बाबा साहब को सम्मान देना तो दूर की बात, कांग्रेस को बाबा साहब को अपमानित करने में भी कोई शर्म नहीं है।

मोदी सरकार ने न केवल डॉक्टर अंबेडकर जी को सम्मान दिया बल्कि बाबा साहब के सपनों को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। तीन तलाक को खत्म किया। धारा 370 को हटाया। महिलाओं के लिए महिला आरक्षण विधेयक पारित कराया। ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को 10 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया। 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने की अधिसूचना जारी की।

''द साबरमती रिपोर्ट कार्ड'' फिल्म के माध्यम से 22 वर्ष पूर्व की घटना को जन-जन के सामने लाने का सराहनीय प्रयास किया गया है। झूठ की राजनीति करने वालों के लिए टिक पाना संभव नहीं बचा।

देश के लिए आदिवासी समाज का योगदान बहुमूल्य है। पर दुख इस बात का है कि आदिवासी समाज के योगदान को वह सम्मान नहीं मिला जिसके वह हकदार है। कांग्रेस में आदिवासी समाज के योगदान को भी राजनीतिक स्वार्थ के लिए बलि चढ़ाया। आदिवासी समाज ने देश की संस्कृति व आजादी की रक्षा के लिए अनमोल योगदान दिया है। जिसे कांग्रेस ने मिटाने का प्रयास करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। देश को पहला आदिवासी राष्ट्रपति देने का सौभाग्य भाजपा को ही मिला। कांग्रेस ने 70 वर्षों के शासनकाल में आदिवासी समाज को कोई ध्यान देने योग्य भी नहीं माना। मध्य प्रदेश के लिए तो गौरव की बात है कि प्रधानमंत्री जी ने देश और समाज के लिए भगवान बिरसा मुंडा द्वारा किए गए कार्यों को सम्मान देने के लिए उनकी जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत मध्यप्रदेश से की थी। कांग्रेस के नेताओं ने आदिवासियों को वोट बैंक से ज्यादा कभी कुछ नहीं समझा।

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी संगठन ने 65015 बूथों में से 55559 बूथों में बूथ अध्यक्ष सहित पूरी बूथ समितियों का गठन कर देश में नया इतिहास बनाया है। प्रदेश में 90 प्रतिशत बूथों में बूथ समितियां गठित हो चुकी हैं। शेष समितियों का गठन भी शीघ्र पूर्ण कर लिया जाएगा। सदस्यता अभियान में भी मध्य प्रदेश भाजपा संगठन ने देश में रिकॉर्ड बनाया है। प्रदेश के हर बूथ पर महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला है। प्रदेश में पहली महिला बूथ अध्यक्ष भी बनी। यह सब देश में रिकॉर्ड है। मध्य प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री जी ने मध्य प्रदेश में नए-नए इन्वेस्टमेंट लाने में कोई कसर न छोड़ने का संकल्प ले लिया है। इन्वेस्टमेंट से मध्य प्रदेश को नई पहचान मिलेगी।

मुख्यमंत्री जी के इन प्रयासों से रोजगारों के नए अवसरों का सृजन होगा। प्रदेश को देश में आर्थिक रूप से सक्षम व नई पहचान विकास के माध्यम से दिलाने की पूरी कोशिश मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री जी द्वारा की जा रही है। प्रतिभा पलायन पर अंकुश लगेगा। मध्य प्रदेश के बजट को नया आकार मिलेगा। विकसित भारत@2047 में मध्य प्रदेश की भागीदारी सुनिश्चित होगी। विकास के लिए आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, स्किल डेवलपमेंट, बिजली की निर्बाध आपूर्ति, खेती किसानी, पेयजल सब पर पूरी क्षमता के साथ प्रयास जारी हैं। जिस गति से विकास के प्रयास किया जा रहे हैं उससे वह दिन दूर नहीं है जब मध्य प्रदेश देश के अग्रणी राज्यों का नेतृत्व करता हुआ मिलेगा। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

'एक हैं तो सेफ हैं' देश का 'महामंत्र'

विकास, सुशासन और सामाजिक न्याय की जीत का मंत्र

हरियाणा के बाद महाराष्ट्र के चुनाव का भी सबसे बड़ा संदेश है- एकजुटता। एक हैं, तो सेफ हैं- ये आज देश का महामंत्र बन चुका है।

- **महाराष्ट्र ने विकास, सुशासन और सच्चे सामाजिक न्याय की जीत देखी है।**
- **महाराष्ट्र की जनता ने भाजपा को कांग्रेस और उसके सहयोगियों की कुल सीटों से कहीं ज्यादा सीटें दी हैं।**
- **महाराष्ट्र ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। यह पिछले 50 सालों में किसी भी पार्टी या चुनाव-पूर्व गठबंधन की सबसे बड़ी जीत है।**
- **'एक हैं तो सेफ हैं' देश का 'महामंत्र' बन गया है।**
- **महाराष्ट्र देश का छठा राज्य बन गया है जिसने लगातार तीसरी बार भाजपा को जनादेश दिया है।**
- **महाराष्ट्र में विकासवाद की जीत हुई है।**
- **महाराष्ट्र में सुशासन की जीत हुई है।**
- **महाराष्ट्र में सच्चे सामाजिक न्याय की विजय हुई है।**
- **महाराष्ट्र में झूठ, छल, फरेब बुरी तरह हारा है, विभाजनकारी ताकतें हारी हैं।**
- **नेगेटिव पॉलिटिक्स की हार हुई है।**
- **परिवारवाद की हार हुई है।**
- **महाराष्ट्र ने विकसित भारत के संकल्प को और मजबूत किया है।**

लोकसभा की भी एक सीट और बढ़ गई है। यूपी, उत्तराखंड और राजस्थान ने भाजपा को जमकर समर्थन दिया है। असम के लोगों ने भाजपा पर फिर एक बार भरोसा जताया है। मध्य प्रदेश में भी हमें सफलता मिली है। बिहार में भी एनडीए का समर्थन बढ़ा है। ये दिखाता है कि देश अब सिर्फ और सिर्फ विकास चाहता है।

झारखंड के तेज विकास के लिए हम अब और ज्यादा मेहनत से काम करेंगे। और इसमें भाजपा का एक-एक कार्यकर्ता अपना हर प्रयास करेगा।

छत्रपति शिवाजी महाराजांच्या // महाराष्ट्राने // आज दाखवून दिले// तुष्टीकरणाचा सामना // कसा करायच। छत्रपति शिवाजी महाराज, शाहुजी महाराज, महात्मा फुले-सावित्रीबाई फुले, बाबासाहेब अंबेडकर, वीर सावरकर, बाला साहेब ठाकरे, ऐसे महान व्यक्तित्वों की धरती ने इस बार पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए।

बीते 50 साल में किसी भी पार्टी या किसी प्री-पोल अलायंस के लिए ये सबसे बड़ी जीत है।

ये लगातार तीसरी बार है, जब भाजपा के नेतृत्व में किसी गठबंधन को लगातार महाराष्ट्र ने आशीर्वाद दिए हैं, विजयी बनाया है। और ये लगातार तीसरी बार है, जब भाजपा महाराष्ट्र में

सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

ये निश्चित रूप से ऐतिहासिक है। ये भाजपा के गवर्नेंस मॉडल पर मुहर है। अकेले भाजपा को ही, कांग्रेस और उसके सभी सहयोगियों से कहीं अधिक सीटें महाराष्ट्र के लोगों ने दी हैं। ये दिखाता है कि जब सुशासन की बात आती है, तो देश सिर्फ और सिर्फ भाजपा पर और NDA पर ही भरोसा करता है।

महाराष्ट्र देश का छठा राज्य है, जिसने भाजपा को लगातार 3 बार जनादेश दिया है। इससे पहले गोवा, गुजरात, छत्तीसगढ़, हरियाणा, और मध्य प्रदेश में हम लगातार तीन बार जीत चुके हैं। बिहार में भी NDA को 3 बार से ज्यादा बार लगातार जनादेश मिला है। और 60 साल के बाद आपने मुझे तीसरी बार मौका दिया, ये तो है ही। ये जनता का हमारे सुशासन के मॉडल पर विश्वास है और इस विश्वास को बनाए रखने में हम कोई कोर कसर बाकी नहीं रखेंगे।

लगातार तीसरी बार स्थिरता को चुनना ये महाराष्ट्र के लोगों की सूझबूझ को दिखाता है। कुछ लोगों ने धोखा करके अस्थिरता पैदा करने की कोशिश की, लेकिन महाराष्ट्र ने उनको नकार दिया है। और उस पाप की सजा मौका मिलते ही दे दी है। महाराष्ट्र इस देश के लिए एक तरह से बहुत महत्वपूर्ण ग्रोथ इंजन है, इसलिए महाराष्ट्र के लोगों ने जो जनादेश दिया है, वो विकसित भारत के लिए बहुत बड़ा आधार बनेगा, वो विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि का आधार बनेगा।

हरियाणा के बाद महाराष्ट्र के चुनाव का भी सबसे बड़ा संदेश है- एकजुटता। एक हैं, तो सेफ हैं- ये आज देश का महामंत्र बन चुका है। कांग्रेस और उसके ecosystem ने सोचा था कि संविधान के नाम पर झूठ बोलकर, आरक्षण के नाम पर झूठ बोलकर, SC/ST/OBC को छोटे-छोटे समूहों में बांट देंगे। वो सोच रहे थे बिखर जाएंगे। कांग्रेस और उसके साथियों की इस साजिश को महाराष्ट्र ने सिरे से खारिज कर दिया है। महाराष्ट्र ने डंके की चोट पर कहा है- एक हैं, तो सेफ हैं। एक हैं तो सेफ हैं के भाव ने जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर लड़ाने वालों को सबक सिखाया है, सजा दी है। आदिवासी भाई-बहनों ने भी भाजपा-NDA को वोट दिया, ओबीसी भाई-बहनों ने भी भाजपा-NDA को वोट दिया, दलित भाई-बहनों ने भी भाजपा-NDA को वोट दिया, समाज के हर वर्ग ने भाजपा-NDA को वोट दिया। ये कांग्रेस और इंडी-गठबंधन के उस पूरे इकोसिस्टम की सोच पर करारा प्रहार है, जो समाज को बांटने का एजेंडा चला रहे थे।

महाराष्ट्र ने NDA को इसलिए भी प्रचंड

जनादेश दिया है, क्योंकि हम विकास और विरासत, दोनों को साथ लेकर चलते हैं। महाराष्ट्र की धरती पर इतनी विभूतियां जन्मी हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज आराध्य हैं। धर्मवीर छत्रपति संभाजी महाराज हमारी प्रेरणा हैं। हमने हमेशा बाबा साहब अंबेडकर, महात्मा फुले-सावित्री बाई फुले, इनके सामाजिक न्याय के विचार को माना है। यही हमारे आचार में है, यही हमारे व्यवहार में है।

लोगों ने मराठी भाषा के प्रति भी हमारा प्रेम देखा है। कांग्रेस को वर्षों तक मराठी भाषा की सेवा का मौका मिला, लेकिन इन लोगों ने इसके लिए कुछ नहीं किया। हमारी सरकार ने मराठी को Classical Language का दर्जा दिया। मातृ भाषा का सम्मान, संस्कृतियों का सम्मान और इतिहास का सम्मान हमारे संस्कार में है, हमारे स्वभाव में है। और मैं तो हमेशा कहता हूं, मातृभाषा का सम्मान मतलब अपनी मां का सम्मान। और इसीलिए मैंने विकसित भारत के निर्माण के लिए लालकिले की प्राचीर से पंच प्राणों की बात की। हमने इसमें विरासत पर गर्व को भी शामिल किया। जब भारत विकास भी और विरासत भी का संकल्प लेता है, तो पूरी दुनिया इसे देखती है। आज विश्व हमारी संस्कृति का सम्मान करता है, क्योंकि हम इसका सम्मान करते हैं। अब अगले पांच साल में महाराष्ट्र विकास भी विरासत भी के मंत्र के साथ तेज गति से आगे बढ़ेगा।

इंडी वाले देश के बदले मिजाज को नहीं समझ पा रहे हैं। ये लोग सच्चाई को स्वीकार करना ही नहीं चाहते। ये लोग आज भी भारत के सामान्य वोटर के विवेक को कम करके आंकते हैं। देश का वोटर, देश का मतदाता अस्थिरता नहीं चाहता। देश का वोटर, नेशन फर्स्ट की भावना के साथ है। जो कुर्सी फर्स्ट का सपना देखते हैं, उन्हें देश का वोटर पसंद नहीं करता।

देश के हर राज्य का वोटर, दूसरे राज्यों की सरकारों का भी आकलन करता है। वो देखता है कि जो एक राज्य में बड़े-बड़े Promise करते हैं, उनकी Performance दूसरे राज्य में कैसी है। महाराष्ट्र की जनता ने भी देखा कि कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल में कांग्रेस सरकारें कैसे

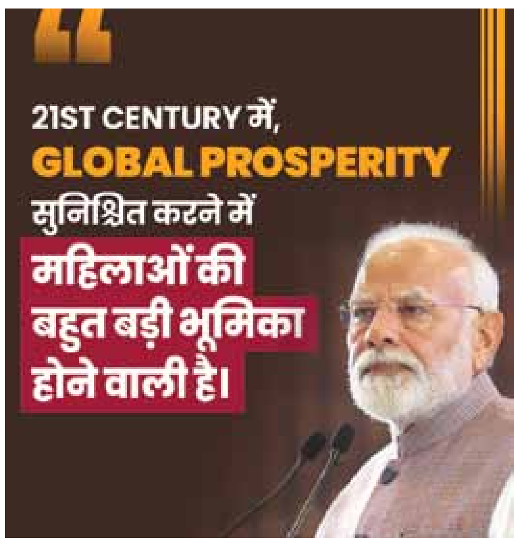

जनता से विश्वासघात कर रही हैं। ये पंजाब में भी देखने को मिलेगा। जो वादे महाराष्ट्र में किए गए, उनका हाल दूसरे राज्यों में क्या है? इसलिए कांग्रेस के पाखंड को जनता ने खारिज कर दिया है। कांग्रेस ने जनता को गुमराह करने के लिए दूसरे राज्यों के अपने मुख्यमंत्री तक मैदान में उतारे। तब भी इनकी चाल सफल नहीं हो पाई। इनके ना तो झूठे वादे चले और ना ही खतरनाक एजेंडा चला।

महाराष्ट्र के जनादेश का एक और संदेश है, पूरे देश में सिर्फ और सिर्फ एक ही संविधान चलेगा। वो संविधान है, बाबासाहेब आंबेडकर का संविधान, भारत का संविधान। जो भी सामने या पर्दे के पीछे, देश में दो संविधान की बात करेगा, उसको देश पूरी तरह से नकार देगा। कांग्रेस और उसके साथियों ने जम्मू-कश्मीर में फिर से आर्टिकल-370 की दीवार बनाने का प्रयास किया। वो संविधान का भी अपमान है। महाराष्ट्र ने उनको साफ-साफ बता दिया कि ये नहीं चलेगा। अब दुनिया की कोई भी ताकत 370 को वापस नहीं ला सकती।

महाराष्ट्र के चुनाव ने इंडी वालों का, ये अघाड़ी वालों का दोमुंहा चेहरा भी देश के सामने खोलकर रख दिया है। सब जानते हैं, बाला साहेब ठाकरे का इस देश के लिए, समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान रहा है। कांग्रेस ने सत्ता के लालच में उनकी पार्टी के एक धड़े को साथ में तो ले लिया, तस्वीरें भी निकाल दी, लेकिन कांग्रेस, कांग्रेस का कोई नेता बाला साहेब ठाकरे की नीतियों की कभी प्रशंसा नहीं कर सकती। इसलिए मैंने अघाड़ी में कांग्रेस के साथी दलों को चुनौती दी थी, कि वो कांग्रेस से बाला साहेब की नीतियों की तारीफ में कुछ शब्द बुलवाकर दिखाएं। आज तक वो ये नहीं कर पाए हैं। मैंने दूसरी चुनौती वीर सावरकर जी को लेकर दी थी। कांग्रेस के नेतृत्व ने लगातार पूरे देश में वीर सावरकर का अपमान किया है, उन्हें गालियां दीं हैं। महाराष्ट्र में वोट पाने के लिए इन लोगों ने टेंपरेरी वीर सावरकर जी को जरा टेंपरेरी गाली देना उन्होंने बंद किया है। लेकिन वीर सावरकर के तप-त्याग के लिए इनके मुंह से एक बार भी सत्य नहीं निकला। यही इनका दोमुंहापन है। ये दिखाता है कि उनकी बातों में कोई दम नहीं है, उनका मकसद सिर्फ और सिर्फ वीर सावरकर को बदनाम करना है।

भारत की राजनीति में अब कांग्रेस पार्टी, परजीवी बनकर रह गई है। कांग्रेस पार्टी के लिए अब अपने दम पर सरकार बनाना लगातार मुश्किल हो रहा है। हाल ही के चुनावों में जैसे आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, हरियाणा और महाराष्ट्र में उनका सूपड़ा साफ हो गया। कांग्रेस की घिसी-पिटी, विभाजनकारी राजनीति फेल हो रही है, लेकिन फिर भी कांग्रेस का अहंकार देखिए, उसका अहंकार सातवें आसमान पर है। सच्चाई ये है कि कांग्रेस अब एक परजीवी पार्टी बन चुकी है। कांग्रेस सिर्फ अपनी ही नहीं, बल्कि अपने साथियों की नाव को भी डुबो देती है। महाराष्ट्र में भी हमने यही देखा है। महाराष्ट्र में कांग्रेस और उसके गठबंधन ने महाराष्ट्र की हर 5 में से 4 सीट हार गई। अघाड़ी के हर घटक का स्ट्राइक रेट 20 परसेंट से नीचे है। ये दिखाता है कि कांग्रेस खुद भी डूबती है और दूसरों को भी डुबोती है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा सीटों पर कांग्रेस चुनाव लड़ी, उतनी ही बड़ी हार इनके सहयोगियों को भी मिली। वो तो अच्छा है, यूपी जैसे राज्यों में कांग्रेस के सहयोगियों ने उससे जान छुड़ा ली, वर्ना वहां भी कांग्रेस के सहयोगियों को लेने के देने पड़ जाते।

सत्ता-भूख में कांग्रेस के परिवार ने, संविधान की पंथ-निरपेक्षता की भावना को चूर-चूर कर दिया है। हमारे संविधान निर्माताओं ने उस समय 47 में, विभाजन के बीच भी, हिंदू संस्कार और परंपरा को जीते हुए पंथनिरपेक्षता की राह को चुना था। तब देश के महापुरुषों ने संविधान सभा में जो डिबेट्स की थी, उसमें भी इसके बारे में बहुत विस्तार से चर्चा हुई थी। लेकिन कांग्रेस के इस परिवार ने झूठे सेक्यूलरिज्म के नाम पर उस महान परंपरा को तबाह करके रख दिया। कांग्रेस ने तुष्टिकरण का जो बीज बोया, वो संविधान निर्माताओं के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात है। संविधान के साथ इस परिवार का विश्वासघात है। दशकों तक कांग्रेस ने देश में यही खेल खेला। कांग्रेस ने तुष्टिकरण के लिए कानून बनाए, सुप्रीम कोर्ट के आदेश तक की परवाह नहीं की। इसका एक उदाहरण वक्फ बोर्ड है। दिल्ली के लोग तो चौंक जाएंगे, हालात ये थी कि 2014 में इन लोगों ने सरकार से जाते-जाते, दिल्ली के आसपास की अनेक संपत्तियां वक्फ बोर्ड को सौंप दी थीं। बाबा साहेब आंबेडकर जी ने जो संविधान हमें दिया है न, जिस संविधान की रक्षा के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। संविधान में वक्फ कानून का कोई स्थान ही नहीं है। लेकिन फिर भी कांग्रेस ने तुष्टिकरण के लिए वक्फ बोर्ड जैसी व्यवस्था पैदा कर दी। ये इसलिए किया गया ताकि कांग्रेस के परिवार का वोट बैंक बढ़ सके। सच्ची पंथ-निरपेक्षता को कांग्रेस ने एक तरह से मृत्युदंड देने की कोशिश की है।

कांग्रेस के शाही परिवार की सत्ता-भूख इतनी विकृत हो गई है, कि उन्होंने सामाजिक न्याय की भावना को भी चूर-चूर कर दिया है। एक समय था जब के कांग्रेस नेता, इंदिरा जी समेत, खुद जात-पात के खिलाफ बोलते थे। पब्लिकली लोगों को समझाते थे। एडवरटाइजमेंट छापते थे। लेकिन आज यही कांग्रेस और कांग्रेस का ये परिवार खुद की सत्ता-भूख को शांत करने के लिए जातिवाद का जहर फैला रहा है। इन लोगों ने सामाजिक न्याय का गला काट दिया है।

एक परिवार की सत्ता-भूख इतने चरम पर है, कि उन्होंने खुद की पार्टी को ही खा लिया है। देश के अलग-अलग भागों में कई पुराने जमाने के कांग्रेस कार्यकर्ता है, पुरानी पीढ़ी के लोग हैं, जो अपने जमाने की कांग्रेस को ढूंढ रहे हैं। लेकिन आज की कांग्रेस के विचार से, व्यवहार से, आदत से उनको ये साफ पता चल रहा है, कि ये वो कांग्रेस नहीं है। इसलिए कांग्रेस में, आंतरिक रूप से असंतोष बहुत ज्यादा बढ़ रहा है। उनकी आरती उतारने वाले भले आज इन खबरों को दबाकर रखे, लेकिन भीतर आग बहुत बड़ी है, असंतोष की ज्वाला भड़क चुकी है। सिर्फ एक परिवार के ही लोगों को कांग्रेस चलाने का हक है। सिर्फ वही परिवार काबिल है दूसरे नाकाबिल हैं। परिवार की इस सोच ने, इस जिद ने कांग्रेस में एक ऐसा माहौल बना दिया कि किसी भी समर्पित कांग्रेस कार्यकर्ता के लिए वहां काम करना मुश्किल हो गया है।

कांग्रेस पार्टी की प्राथमिकता आज सिर्फ और सिर्फ परिवार है। देश की जनता उनकी प्राथमिकता नहीं है। और जिस पार्टी की प्राथमिकता जनता ना हो, वो लोकतंत्र के लिए बहुत ही नुकसानदायी होती है।

कांग्रेस का परिवार, सत्ता के बिना जी ही नहीं सकता। चुनाव जीतने के लिए ये लोग कुछ भी कर सकते हैं। दक्षिण में जाकर उत्तर को गाली देना, उत्तर में जाकर दक्षिण को गाली देना, विदेश में जाकर देश को गाली देना। और अहंकार इतना कि ना किसी का मान, ना किसी की मर्यादा और खुले आम झूठ बोलते रहना, हर दिन एक नया झूठ बोलते रहना, यही कांग्रेस और उसके परिवार की सच्चाई बन गई है। आज कांग्रेस का अर्बन नक्सलवाद, भारत के सामने एक नई चुनौती बनकर खड़ा हो गया है। इन अर्बन नक्सलियों का रिमोट कंट्रोल, देश के बाहर है। और इसलिए सभी को इस अर्बन नक्सलवाद से बहुत सावधान रहना है। आज देश के युवाओं को, हर प्रोफेशनल को कांग्रेस की हकीकत को समझना बहुत जरूरी है।

मुंबई ने, पुणे ने, नागपुर ने, महाराष्ट्र के ऐसे बड़े शहरों ने अपनी स्पष्ट राय रखी है। शहरी क्षेत्रों के गरीब हों, शहरी क्षेत्रों के मिडिल क्लास हो, हर किसी ने भाजपा का समर्थन किया है और एक स्पष्ट संदेश दिया है। यह संदेश है आधुनिक भारत का, विश्वस्तरीय शहरों का, हमारे महानगरों ने विकास को चुना है, आधुनिक Infrastructure को चुना है। और सबसे बड़ी बात, उन्होंने विकास में रोड़े अटकाने वाली

बुलाती तुम्हें मनाली

अटल बिहारी वाजपेयी

आसमान में बिजली ज्यादा,
घर में बिजली कम,
टेलीफोन घुमाते जाओ,
ज्यादातर गुमसुम।

बर्फ ढकी पर्वतमालाएँ,
नदियाँ, झरने, जंगल,
किन्नरियों का देश,
देवता डोलें पल-पल।

हरे-हरे बादाम, वृक्ष पर
लदे खड़े चिलगोजे,
गंधक मिला उबलता पानी,
खोई मणि को खोजे।

दोनों बाँह पसार,
बुलाती तुम्हें मनाली,
दावानल में मलयानिल सी
महकी, मित्र, मनाली।

राजनीति को नकार दिया है। बीजेपी शहरों में ग्लोबल स्टैंडर्ड के इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने के लिए लगातार काम कर रही है। चाहे मेट्रो नेटवर्क का विस्तार हो, आधुनिक इलेक्ट्रिक बसें हों, कोस्टल रोड और समृद्धि महामार्ग जैसे शानदार प्रोजेक्ट्स हों, एयरपोर्ट्स का आधुनिकीकरण हो, शहरों को स्वच्छ बनाने की मुहिम हो, इन सभी पर बीजेपी का बहुत ज्यादा जोर है। आज का शहरी भारत ईज ऑफ लिविंग चाहता है। और इन सब के लिये उसका भरोसा बीजेपी पर है, एनडीए पर है।

बीजेपी देश के युवाओं को नए-नए सेक्टर्स में अवसर देने का प्रयास कर रही है। नई पीढ़ी इनोवेशन और स्टार्टअप के लिए माहौल चाहती है। बीजेपी इसे ध्यान में रखकर नीतियां बना रही है, निर्णय ले रही है। भारत के शहर विकास के इंजन हैं। शहरी विकास से गांवों को भी ताकत मिलती है। आधुनिक शहर नए अवसर पैदा करते हैं। लक्ष्य है कि शहर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शहरों की श्रेणी में आएं और बीजेपी, एनडीए सरकारें, इसी लक्ष्य के साथ काम कर रही हैं।

लाल किले से कहा था कि एक लाख ऐसे युवाओं को राजनीति में लाना चाहता हूं, जिनके परिवार का राजनीति से कोई संबंध नहीं। NDA के अनेक ऐसे उम्मीदवारों को मतदाताओं ने समर्थन दिया है। इसे बहुत शुभ संकेत मानता हूं। चुनाव आएंगे- जाएंगे, लोकतंत्र में जय-पराजय भी चलती रहेगी। लेकिन भाजपा का, NDA का ध्येय सिर्फ चुनाव जीतने तक सीमित नहीं है, ध्येय सिर्फ सरकारें बनाने तक सीमित नहीं है। देश बनाने के लिए निकले हैं। भारत को विकसित बनाने के लिए निकले हैं। भारत का हर नागरिक, NDA का हर कार्यकर्ता, भाजपा का हर कार्यकर्ता दिन-रात इसमें जुटा है। जीत का उत्साह, इस संकल्प को और मजबूत करता है। जो प्रतिनिधि चुनकर आए हैं, वो इसी संकल्प के लिए प्रतिबद्ध हैं। देश के हर परिवार का जीवन आसान बनाना है। सेवक बनकर, और ये जीवन का मंत्र है। देश के हर नागरिक की सेवा करनी है। उन सपनों को पूरा करना है, जो देश की आजादी के मतवालों ने, भारत के लिए देखे थे। मिलकर विकसित भारत का सपना साकार करना है। सिर्फ 10 साल में भारत को दुनिया की दसवीं सबसे बड़ी इकॉनॉमी से दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी इकॉनॉमी बना दिया है। किसी को भी लगता, अरे मोदी जी 10 से पांच पर पहुंच गया, अब तो बैठो आराम से। आराम से बैठने के लिए पैदा नहीं हुआ। वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर रहेगा। मिलकर आगे बढ़ेंगे, एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे तो हर लक्ष्य पाकर रहेंगे। ▪

भारतीय संविधान हमारा गौरव और स्वाभिमान है- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

संविधान हमारी आधारशिला है, जिसने देश की विविधता को एकता में बदलने का अद्भुत कार्य किया। भारतीय संविधान हमारा गौरव और स्वाभिमान भी है, जो हमें अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी बोध कराता है। संविधान दिवस के अवसर पर ऐसे मध्यप्रदेश और भारत के निर्माण का संकल्प लें, जहां समानता, न्याय और सम्मान हर नागरिक का अधिकार हो। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा संविधान के सभी अनुच्छेदों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म स्थान मध्यप्रदेश के महू में है, जो अब अम्बेडकर नगर के रूप में भी जाना जाता है। संविधान सभा के सदस्य रहे डॉ. सर हरीसिंह गौर का जन्म स्थान सागर में है, जिनकी जयंती 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाया जाता है। मध्यप्रदेश सरकार ने संविधान दिवस के अवसर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये। ▪

भाजपा को अभूतपूर्व आशीर्वाद: जगत प्रकाश नड्डा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राजनीति में एक नया शब्द सामने आया है प्रो-इनकंबेंसी। यह शब्द, जो पिछले 70 वर्षों में कभी नहीं सुना गया, आज भाजपा की उपलब्धियों को परिभाषित करता है।

गुजरात में तीन दशकों से कमल खिल रहा है, मध्यप्रदेश में दो दशकों से भाजपा का वर्चस्व है, और असम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, तथा गोवा में पिछले दो कार्यकाल से एनडीए की सरकारें सफलता पूर्वक कार्य कर रही हैं।

- **हरियाणा के बाद अब महाराष्ट्र विधानसभा में मिली अभूतपूर्व जीत ने स्पष्ट कर दिया है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकासवाद और हर वर्ग को मुख्यधारा से जोड़कर देश को आगे ले जाने के इरादे पर जनता ने फिर से मुहर लगा दी है।**
- **मैं महाराष्ट्र, झारखंड और विभिन्न राज्यों के उपचुनाव में भाजपा को मिले समर्थन के लिए जनता को नमन करता हूँ। मैं पार्टी के कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।**
- **कुछ समय से इंडी अलायंस को यह भ्रम हो गया था कि वे लोगों को संविधान, जाति, धर्म और तुष्टिकरण के नाम पर बांटकर, सत्ता पर काबिज हो सकते हैं लेकिन हरियाणा के बाद महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के परिणाम ने इंडी अलायंस को करारा जवाब दिया है।**
- **2019 में भी भाजपा को जनादेश मिला था, लेकिन उद्धव ठाकरे की सत्ता के प्रति मोह और अवसरवादिता ने उस जनादेश का अपमान किया।**
- **महाराष्ट्र के चुनावी नतीजों ने उद्धव ठाकरे को धता दिखाकर बता दिया कि महाराष्ट्र की जनता भाजपा, शिवसेना (शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) के साथ है।**
- **कांग्रेस एक परजीवी पार्टी है, जो बेल की लता की तरह किसी दूसरे पर चिपक जाती है। यह खुद तो सूख जाती है, लेकिन जिससे लिपटती है, उसे भी सुखा देती है। महाराष्ट्र इसका एक और उदाहरण है।**
- **आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राजनीति में एक नया शब्द सामने आया है प्रो-इनकंबेंसी। गुजरात,**

- **मध्य प्रदेश, असम, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा, बिहार - हर जगह लंबे समय से भाजपा-एनडीए जनता की सेवा कर रही है। यह देश के मूड और जनता के विश्वास को दर्शाता है।**
- **महाराष्ट्र के साथ-साथ भाजपा ने 13 राज्यों के उपचुनावों में भी शानदार प्रदर्शन किया है। भाजपा ने उन सीटों पर भी जीत दर्ज की है जहाँ वह कभी जीती नहीं थी।**
- **भाजपा झारखंड में विपक्ष में रहकर अपनी रचनात्मक भूमिका निभाएगी।**

महाराष्ट्र की जनता एवं विभिन्न राज्यों की जनता ने चुनावों में जो संदेश दिया है, उसने आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के देशवासियों की सेवा के संकल्प और कार्य पर, फिर एक बार मुहर लगा दी है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दुनिया में अपनी छाप छोड़ी है। नाइजीरिया और गुयाना ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपने-अपने देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया है। इससे पहले दुनिया के कई देश हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी को सम्मानित कर चुके हैं। भारत और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की छवि को आज दुनिया मान रही है। पहले हरियाणा और अब महाराष्ट्र विधानसभा और अन्य राज्यों के उपचुनाव में मिली जीत ये बताती है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकासवाद और गांव, गरीब, वंचित, दलित, महिला, युवा, किसान को मुख्यधारा में शामिल करने और विकसित भारत की संकल्पना पर जनता ने फिर से मुहर लगा दी है। चुनाव परिणाम ने स्पष्ट कर दिया है कि समाज को बांटने और गुमराह करने की कोशिश करने वालों को मुंह की खानी पड़ी और देश ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकासवाद को सराहा है।

कुछ समय से इंडी अलायंस को यह भ्रम हो गया था कि वे लोगों को संविधान, जाति, धर्म और तुष्टिकरण के नाम पर बांटकर, सत्ता पर काबिज हो सकते हैं लेकिन हरियाणा के बाद महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के परिणाम ने इंडी अलायंस को करारा जवाब दिया है। महाराष्ट्र के जनादेश ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि 2019 में भी आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा को जनादेश मिला था लेकिन उद्धव ठाकरे की सत्ता के प्रति मोह और अवसरवादिता के कारण धोखा देकर, उस जनादेश का अपमान किया। महाराष्ट्र के चुनावी नतीजों ने उद्धव ठाकरे को धता दिखाकर बता दिया कि महाराष्ट्र की जनता भाजपा, शिवसेना (शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) के साथ है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदी जी ने लोकसभा चुनावों के बाद कांग्रेस पार्टी को लेकर कहा था कि कांग्रेस एक परजीवी पार्टी है, जो बेल की लता की तरह किसी दूसरे पर चिपक जाती है। यह खुद तो सूख जाती है, लेकिन जिससे लिपटती है, उसे भी सुखा देती है। इस बात को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महाविकास अघाड़ी के नतीजों ने पूरी तरह प्रमाणित कर दिया है। कांग्रेस ने न केवल खुद को कमजोर किया, बल्कि अपने गठबंधन के सहयोगियों को भी नुकसान पहुंचाया।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राजनीति में एक नया शब्द सामने आया है प्रो-इनकंबेंसी। यह शब्द, जो पिछले 70 वर्षों में कभी नहीं सुना गया, आज भाजपा की उपलब्धियों को परिभाषित करता है। गुजरात में तीन दशकों से कमल खिल रहा है, मध्यप्रदेश में दो दशकों से भाजपा का वर्चस्व है, और असम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, तथा गोवा में पिछले दो कार्यकाल से एनडीए की सरकारें सफलता पूर्वक कार्य कर रही हैं। इस बार महाराष्ट्र की जनता ने भी भाजपा पर भरोसा जताते हुए दोबारा कमल खिलाया है। उपचुनावों में भाजपा के पास जहां पहले सिर्फ 11 सीटें थीं, वहां अब 20 सीटों पर जीत दर्ज की गई है। एनडीए ने 8 सीटें जीती हैं, जिससे कुल आंकड़ा 28 तक पहुंच गया है। यह देश के मूड और जनता के विश्वास को दर्शाता है।

उपचुनावों में उत्तर प्रदेश में भाजपा ने 9 में से 7 सीटें जीती और पहली बार कुंदरकी विधानसभा सीट पर विजय हासिल की है। राजस्थान में, जहां पहले एनडीए के पास 2 सीटें थी, जिसमें से भाजपा के पास 1 थी, अब राज्य के अंदर भाजपा ने 7 में से 5 सीटों पर जीत दर्ज की है। बिहार में एनडीए ने श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में सभी 4 सीटें जीती हैं। इनमें से एक सीट एनडीए सहयोगी हिंदुस्तान आवाम मोर्चा के पास गई, जबकि 32 सालों से आरजेडी के पास रही सीट को जेडीयू ने जीत लिया। शाहबाद क्षेत्र की सीटों पर भी, जहां पहले आरजेडी का कब्जा था, जेडीयू ने जीत दर्ज कर एनडीए को मजबूत किया है। असम के उपचुनावों में एनडीए ने पांचों सीटों पर विजय प्राप्त की। गुजरात में जहां भाजपा ने जिस विधानसभा सीट पर पहले कभी जीत दर्ज नहीं की थी, इस बार वहां भी भाजपा ने परचम लहराया है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड में भी भाजपा ने अपनी 1-1 सीटें पुनः जीतकर अपने पास बरकरार रखी हैं।

झारखंड में भाजपा को विपक्ष में रहने का जनादेश मिला है। हम झारखंड में विपक्ष में रहते हुए अपनी रचनात्मक भूमिका को निभाएंगे और देश को मजबूत करते हुए बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध चल रहे अभियान को आगे बढ़ाएंगे। भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं ने बहुत परिश्रम किया है और उनकी मेहनत रंग लाई है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा देश को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करती रहेगी। ▪

महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश भाजपा की टीम भी लगी हुई थी। प्रदेश के कई नेता महाराष्ट्र के चुनाव में लगे हुए थे। झारखंड में भी जनता ने हमें आशीर्वाद देने का कार्य किया है। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में विकास और गुड गवर्नेंस के साथ लगातार प्रदेश को आगे ले जाने का कार्य कर रही है।

उद्धव को जनता ने सबक सिखाया

डॉ. मोहन यादव

पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी की विजय यात्रा पार्टी कार्यकर्ताओं के भरोसे आगे बढ़ रही है। उपचुनावों में पार्टी को मिली सफलता हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है, लेकिन विशेषकर महाराष्ट्र के चुनाव परिणाम उद्धव ठाकरे की शिवसेना, शरद पवार की एनसीपी के लिए कई मायनों में सबक भी हैं। सिर्फ कुर्सी के लालच में उद्धव ठाकरे ने उस कांग्रेस और एनसीपी से गठजोड़ किया था, जिससे स्व. बाला साहेब ठाकरे आजीवन संघर्ष करते रहे। महाराष्ट्र की जनता ने भाजपा को प्रचंड समर्थन देकर 2019 का बदला भी ले लिया है। उस समय जनता ने भाजपा-शिवसेना को बहुमत दिया था, लेकिन कांग्रेस ने अपनी तिकड़मबाजी के जरिए सत्ता पर कब्जा कर लिया था। अब महाराष्ट्र की जनता ने भाजपा और उसके सहयोगियों के पक्ष में स्पष्ट जनादेश देकर अपना निर्णय दे दिया है कि उस समय जो कुछ किया गया था, वह गलत था। हरियाणा से लेकर महाराष्ट्र तक देश की जनता का समर्थन भारतीय जनता पार्टी को मिल रहा है और देश की जनता प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को लगातार आशीर्वाद दे रही है। दूसरी तरफ, कांग्रेस ने पहले देश खोया, अब प्रदेश भी खो रही है। कांग्रेस के नेता आपस के झगड़ों में उलझे हुए हैं और नकारात्मकता की राजनीति कर रही है। हमारे लिए नेशन फर्स्ट है, लेकिन कांग्रेस के लिए फेमिली फर्स्ट रही है।

मध्यप्रदेश में भी भारतीय जनता पार्टी का ग्राफ लगातार बढ़ रहा है। हमने 2023 के विधानसभा चुनाव में प्रचंड जीत हासिल की। 2024 के लोकसभा चुनाव में सभी 29 सीटें जीतीं। कांग्रेस और कमलनाथ का गढ़ कही जाने वाली छिंदवाड़ा सीट भी हमने जीती और उपचुनाव में अमरवाड़ा की विधानसभा सीट भी हम जीते। उपचुनाव में बुधनी विधानसभा में भी हम आगे हैं। विजयपुर में हमारे प्रत्याशी श्री रामनिवास रावत को भले ही पराजय का सामना करना पड़ा हो, लेकिन वहां हमारे वोट बढ़े हैं। मध्यप्रदेश में भाजपा की डबल इंजन की सरकार प्रदेश के विकास की यात्रा को लगातार आगे बढ़ाती रहेगी और आने वाले चुनाव में हम विजयपुर में भी बड़ी जीत हासिल करेंगे। भारत जो दुनिया का सबसे युवा देश है, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है और यही लोकतंत्र की असली ताकत है, देश के मतदाताओं की ताकत है। ▪

भाजपा ने हार का अंतर कम किया : विष्णुदत्त शर्मा

भाजपा ने महाराष्ट्र में बड़ी जीत दर्ज की है। महाराष्ट्र की जनता ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को फिर एक बार आशीर्वाद प्रदान किया है। महाराष्ट्र में भाजपा गठबंधन को प्रचंड जीत मिली है। भाजपा ने अकेले महाराष्ट्र में 132 सीटें जीती है। देश में भाजपा ही एक ऐसी पार्टी है जो सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के लिए कार्य करती है। हम सभी जनता को यह विश्वास दिलाते है कि जनता से किया गया एक-एक संकल्प को पूरा करेंगे। मध्यप्रदेश के बुधनी में भी भाजपा प्रचंड जीत हासिल की है। विजयपुर में भाजपा 2023 के विधानसभा चुनाव में 18 हजार के हार के अंतर को इस उपचुनाव में 7 हजार के करीब लाने में सफल रही है। विजयपुर के सभी कार्यकर्ताओं ने बूथ पर बहुत मेहनत और परिश्रम के साथ चुनाव लड़ा है। भाजपा अगले चुनाव में विजयपुर विधानसभा में ऐतिहासिक मतों से जीत हासिल करेगी।

महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश भाजपा की टीम भी लगी हुई थी। प्रदेश के कई नेता महाराष्ट्र के चुनाव में लगे हुए थे। झारखंड में भी जनता ने हमें आशीर्वाद देने का कार्य किया है। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में विकास और गुड गवर्नेंस के साथ लगातार प्रदेश को आगे ले जाने का कार्य कर रही है। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा 2028 की तैयारी शुरू कर रही है। ▪

90 प्रतिशत बूथ समितियों का गठन ऐतिहासिक कार्य- विष्णुदत्त शर्मा

संगठन पर्व में मध्यप्रदेश ने कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत से 65,015 बूथों में से 55,559 बूथों में बूथ अध्यक्ष सहित पूरी बूथ समितियों का गठन कर देश में इतिहास बनाया। प्रदेश के 90 प्रतिशत बूथों में बूथ समिति गठित हो चुकी है। शेष 10 प्रतिशत समितियों का गठन भी जल्द हो जाएगा। सदस्यता अभियान में भी मध्यप्रदेश भाजपा संगठन ने देश में रिकॉर्ड बनाया था। मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए प्रदेश में पहली महिला बूथ अध्यक्ष बनी। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए प्रदेश के हर बूथ पर महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला है, यह देश में एक रिकॉर्ड है।

प्रदेश में महिलाओं को बूथ समिति में प्रतिनिधित्व देने के लिए अगर 1 प्लस 15 सदस्य भी बनाना पड़ेंगे तो वो भी बनाए जाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास एवं सबका प्रयास के संकल्प को चरितार्थ करते हुए बूथ समितियों में सभी समाजों के लोगों को प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है।

मध्यप्रदेश भाजपा के संगठन ने सदस्यता अभियान में एक नया रिकॉर्ड रचा, जिसकी देश भर में सराहना हुई है। संगठन पर्व के तहत प्रदेश में 1 करोड़ 72 लाख 44 हजार 764 प्राथमिक सदस्य बनाकर इतिहास रचा गया। अभी तक प्रदेश में 80 हजार से ज्यादा सक्रिय सदस्य बनाए गए हैं। मध्यप्रदेश संगठन को नवाचार के लिए देश भर में जाना जाता है। यह सब कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और अनुभवी नेतृत्व की वजह से संभव हुआ है। इस बार संगठन पर्व में वाट्सअप प्रमुख के नवाचार को देश भर में सराहना मिली है।

मंडल और जिला अध्यक्ष का चुनाव सब मिलकर समन्वय व सर्वसम्मति से पूरा करेंगे। हम सब मिलकर ऐसा मंडल अध्यक्ष चुनेंगे जो आगे चलकर संगठन को मजबूती प्रदान करेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जमीन तक पहुंचाने में मंडल और बूथ अध्यक्ष अहम एजेंसी है और यही हमारी पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है। महाराष्ट्र में मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं ने भी मेहनत की, उसका परिणाम ऐतिहासिक विजय के तौर पर सामने आया और अन्य राज्यों के लोगों को पता चला कि मध्यप्रदेश भाजपा संगठन किस तरह से काम करता है। ▪

निर्वाचन की प्रक्रिया सर्वस्पर्शी हो- हितानंद जी

हमें ध्यान रखना है कि जिस तरह से हमारे नेताओं ने भाजपा को सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी और सर्वसमावेशी बनाया है। उसी तरह हमें हमारे संगठन को भी सर्वस्पर्शी बनाना है। प्रदेश में 81 प्रतिशत से अधिक बूथ कमेटियों का गठन हो चुका है। हमें यह ध्यान रखना है कि प्रत्येक बूथ कमेटी में कम से कम तीन महिला सदस्य हों, ताकि उन्हें कम से कम 35 प्रतिशत प्रतिनिधित्व मिल सके। इसके अलावा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के सदस्यों को भी उचित संख्या में स्थान मिले, इसका ध्यान रखना है। इसी तरह हमें मंडल अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष और प्रदेश परिषद के सदस्यों के निर्वाचन में भी यह ध्यान रखना है कि हर जाति और वर्ग को समुचित प्रतिनिधित्व मिल सके। सभी जनप्रतिनिधि अपने-अपने बूथों के निर्वाचन में शामिल हों और उसकी फोटो को सोशल मीडिया पर भी जारी करें।

'हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान' कार्यक्रम पूरे प्रदेश में डॉ. भीमराव अंबेडकर की पुण्यतिथि 6 दिसंबर को चलेगा। इस दौरान हमें संविधान के प्रति जागरूकता पैदा करने वाले कार्यक्रम करना है तथा जनता को बताना है कि किस तरह कांग्रेस पार्टी ने संविधान का लगातार अपमान किया है।

25 दिसंबर को स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिवस को हम सुशासन दिवस के रूप में मनाते हैं। इस वर्ष हम उनके स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाएंगे। 26 दिसंबर को वीर बालक दिवस पर हमें बच्चों को शहीद बालकों के बलिदान की कहानी से अवगत कराना है। सांसद और विधायक पार्टी कार्यकर्ताओं को ''द साबरमती रिपोर्ट'' फिल्म दिखाएं, ताकि वे गोधरा कांड के पीछे के षडयंत्र को जान सकें। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महिलाओं के लिए संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया है। इसलिए हमें अपनी बूथ समितियों के गठन में भी यह ध्यान रखना है कि उसमें कम से कम तीन महिला सदस्य शामिल हों। ▪

संविधान वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक

हमारा संविधान, हमारे वर्तमान और हमारे भविष्य का मार्गदर्शक है। बीते 75 वर्षों में देश के सामने जो भी चुनौतियां आई हैं,...

हमारे संविधान ने हर उस चुनौती का समाधान करने के लिए उचित मार्ग दिखाया है।

- **हमारा संविधान केवल कानून की किताब नहीं है, यह निरंतर प्रवाहमान, जीवंत धारा है।**
- **हमारा संविधान हमारे वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक है।**
- **आज हर नागरिक का एक ही लक्ष्य है, विकसित भारत का निर्माण।**
- **त्वरित न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक नई न्याय संहिता लागू की गई है, दंड आधारित व्यवस्था अब न्याय आधारित व्यवस्था में बदल चुकी है।**

भारत के संविधान का 75वां साल, पूरे देश के लिए एक असीम गौरव का विषय है।

हम लोकतंत्र के इस महत्वपूर्ण पर्व का जो स्मरण कर रहे हैं, उस समय ये भी नहीं भूल सकते कि आज मुंबई में हुए आतंकी हमले की भी बरसी है। मैं देश को ये संकल्प भी दोहराता हूं कि भारत के सुरक्षा को चुनौती देने वाले हर आतंकी संगठन को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

संविधान सभा की लंबी बहस के दौरान भारत के गणतांत्रिक भविष्य पर गंभीर चर्चाएं हुई थी। और तब बाबा साहेब आंबेडकर ने कहा था- Constitution is not a mere lawyer's document...its spirit is always the spirit of Age. जिस स्पिरिट की बात बाबा साहेब कहते थे, वो बहुत ही अहम है। देश-काल-परिस्थिति के हिसाब से उचित निर्णय लेकर हम संविधान की समय-समय पर व्याख्या कर सकें , ये प्रावधान हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें दिया है। हमारे संविधान निर्माता ये जानते थे कि भारत की आकांक्षाएं, भारत के सपने समय के साथ नई ऊंचाई पर पहुंचेंगे, वो जानते थे कि आजाद भारत की और भारत के नागरिकों की जरूरतें बदलेंगी, चुनौतियां बदलेंगी। इसलिए उन्होंने हमारे संविधान को महज कानून की एक किताब बनाकर नहीं छोड़ा...बल्कि इसको एक जीवंत, निरंतर प्रवाहमान धारा बनाया।

हमारा संविधान, हमारे वर्तमान और हमारे भविष्य का मार्गदर्शक है। बीते 75 वर्षों में देश के सामने जो भी चुनौतियां आई हैं, हमारे संविधान ने हर उस चुनौती का समाधान करने के लिए उचित मार्ग दिखाया है। इसी कालखंड में आपातकाल जैसा समय भी आया...और हमारे संविधान ने लोकतंत्र के सामने आई इस चुनौती का भी सामना किया। हमारा संविधान देश की हर जरूरत, हर अपेक्षा पर खरा उतरा है। संविधान से मिली इस शक्ति की वजह से ही...आज जम्मू-कश्मीर में भी बाबा साहेब का संविधान पूरी तरह लागू हुआ है। आज वहां पहली बार संविधान दिवस मनाया गया है।

आज भारत, परिवर्तन के इतने बड़े दौर से गुजर रहा है, ऐसे अहम समय में भारत का संविधान ही हमें रास्ता दिखा रहा है, हमारे लिए गाइडिंग लाइट बना हुआ है।

भारत के भविष्य का मार्ग अब बड़े सपनों, बड़े संकल्पों की सिद्धि का है। आज हर

देशवासी का एक ही ध्येय है- विकसित भारत का निर्माण। विकसित भारत का मतलब है, जहां देश के हर नागरिक को एक quality of life मिल सके, dignity of life मिल सके। ये सामाजिक न्याय, सोशल जस्टिस का भी बहुत बड़ा माध्यम है। और ये संविधान की भी भावना है। इसलिए, बीते वर्षों में, देश में लोगों के बीच आर्थिक और सामाजिक समानता लाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं।

बीते 10 वर्षों में 53 करोड़ से ज्यादा ऐसे भारतीयों का बैंक खाता खुला है...जो बैंक के दरवाजे तक नहीं पहुंच पाते थे। बीते 10 वर्षों में 4 करोड़ ऐसे भारतीयों को पक्का घर मिला है, जो कई-कई पीढ़ियों से बेघर थे, बीते 10 वर्षों में 10 करोड़ से ज्यादा ऐसी महिलाओं को मुफ्त गैस कनेक्शन मिला है, जो बरसों से अपने घर में गैस पहुंचने का इंतजार कर रही थीं। हमें आज के जीवन में बहुत आसान लगता है कि घर में नल खोला और पानी आ गया। लेकिन देश में आजादी के 75 साल बाद भी सिर्फ 3 करोड़ घर ही ऐसे थे, जिनमें नल से जल आता था। करोड़ों लोग तब भी अपने घर में नल से जल का इंतजार कर रहे थे। हमारी सरकार ने 5-6 साल में 12 करोड़ से ज्यादा घरों को नल से जल देकर नागरिकों का और विशेषकर महिलाओं का जीवन आसान बनाया है, संविधान की भावना को सशक्त किया है।

हमारे संविधान की मूल प्रति में प्रभु श्रीराम, माता सीता, हनुमान जी, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गुरू गोविंद सिंह जी...सभी के चित्र हैं। भारत की संस्कृति के प्रतीक...इन चित्रों को संविधान में इसलिए स्थान दिया गया ताकि वो हमें मानवीय मूल्यों के प्रति सजग करते रहें। ये मानवीय मूल्य...आज के भारत की नीतियों और निर्णयों का आधार हैं। भारतीयों को त्वरित न्याय मिले, इसके लिए नई न्याय संहिता लागू की गई है। दंड आधारित व्यवस्था अब न्याय आधारित व्यवस्था में बदल चुकी है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम का ऐतिहासिक निर्णय हुआ है। हमने third gender को उनकी पहचान और उनका हक दिलाने के लिए भी कदम उठाए हैं। हमने दिव्यांगजनों के जीवन को आसान बनाने के लिए भी व्यवस्थाएं बनाईं हैं।

आज देश का बहुत ज्यादा जोर, देश के नागरिकों की Ease of Living पर है। एक समय था जब पेंशन पाने वाले सीनियर सीटिजन्स को बैंक में जाकर साबित करना होता था कि वो जीवित हैं। आज सीनियर सिटीजन्स को घर बैठे ही डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट्स की सुविधा मिल रही है। करीब-करीब डेढ़ करोड़ सीनियर सीटिजन्स अब तक इस सुविधा का लाभ उठा चुके हैं। आज भारत वो देश है जो हर गरीब परिवार को 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा देता है।

आज भारत वो देश है, जो 70 वर्ष से ऊपर के हर बुजुर्ग को फ्री हेल्थकेयर की सुविधा देता है। देश के हजारों जनऔषधि केंद्रों पर आज 80 परसेंट डिस्काउंट पर सस्ती दवाइयां मिल रही हैं। एक समय में हमारे देश में इम्यूनाइजेशन की कवरेज भी 60 परसेंट से भी कम थी। करोड़ों बच्चे हर साल टीकाकरण से छूट जाते थे। आज मुझे संतोष है कि अब मिशन इंद्रधनुष की वजह से भारत में इम्यूनाइजेशन की कवरेज शत प्रतिशत पहुंच रही है। आज दूर-सुदूर के गांवों में भी समय पर बच्चों का टीकाकरण हो पा रहा है। इन प्रयासों ने गरीबों की, मध्यम वर्ग की बहुत बड़ी चिंता कम की है।

आज देश में कैसे काम हो रहा है...इसका एक उदाहरण Aspirational District अभियान भी है। देश के 100 से अधिक ऐसे जिले जिन्हें पिछड़ा कहा जाता था...हमने उन्हें Aspirational District माना और वहां हर पैरामीटर में विकास की गति तेज की गई है। आज देश के अनेक Aspirational Districts, दूसरे जिलों से बहुत बेहतर कर रहे हैं। अब इसी मॉडल के आधार पर हमने aspirational block program भी शुरु किया है।

लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी से परेशानियां खत्म करने पर भी आज देश का बहुत ज्यादा जोर है। कुछ साल पहले तक भारत में ढाई करोड़ घर ऐसे थे, जो शाम होते ही अंधेरे में डूब जाते थे, उन घरों में बिजली कनेक्शन ही नहीं था। सबको बिजली का मुफ्त कनेक्शन देकर, देश ने उनके जीवन को रोशन कर दिया है। बीते वर्षों में दूर-सुदूर इलाकों में भी हजारों की संख्या में मोबाइल टावर्स लगाए गए हैं...ताकि लोगों को 4G/5G कनेक्टिविटी मिलती रहे। पहले कभी आप अंडमान या लक्ष्यद्वीप जाते थे तो वहां ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी नहीं मिलती थी। आज अंडरवॉटर ऑप्टिकल फाइबर ने ऐसे द्वीपों तक भी अच्छी स्पीड वाला इंटरनेट पहुंचा दिया है। हमारे यहां गांव के घरों, गांव की जमीन से जुड़े कितने विवाद होते रहे हैं...ये भी हम भली-भांति जानते हैं। पूरी दुनिया में विकसित देशों के सामने भी लैंड रिकॉर्ड एक बहुत बड़ा चैलेंज रहा है। लेकिन आज का भारत, इसमें भी लीड ले रहा है। पीएम स्वामित्व योजना के तहत, आज गांव के घरों की ड्रोन मैपिंग की जा रही है और लीगल डॉक्यूमेंट इश्यू किए जा रहे हैं।

देश के विकास के लिए आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का तेज निर्माण भी उतना ही जरूरी है। इंफ्रास्ट्रक्चर के प्रोजेक्ट्स समय पर पूरे होने से देश का धन भी बचता है...और प्रोजेक्ट भी, उसकी उपयोगिता भी बहुत बढ़ जाती है। इसी सोच के साथ प्रगति नाम से एक प्लेटफॉर्म बनाया गया है जिसमें इंफ्राप्रोजेक्ट्स का रेगुलर रिव्यू होता है। और इनमें से कुछ प्रोजेक्ट्स तो ऐसे थे जो 30-30, 40-40 साल से पेंडिंग थे। मैं खुद इसकी मीटिंग्स को चेयर करता हूं। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि अभी तक 18 लाख करोड़ रुपए के ऐसे प्रोजेक्ट्स को रिव्यू करके, उनके सामने की अड़चनों को दूर किया जा चुका है। समय पर पूरे हो रहे प्रोजेक्ट्स लोगों के जीवन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। देश में हो रहे ये प्रयास...देश की प्रगति को भी गति दे रहे हैं और संविधान की मूल भावना को भी सशक्त कर रहे हैं।

26 नवंबर 1949 में संविधान सभा में अपने समापन भाषण में डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा था...''भारत को आज ईमानदार लोगों के एक समूह से ज्यादा कुछ नहीं चाहिए जो अपने हितों से आगे देश का हित रखेंगे। नेशन फर्स्ट, राष्ट्र सर्वप्रथम की यही भावना भारत के संविधान को आने वाली कई-कई सदियों तक जीवंत बनाए रखेगी। मैं, संविधान ने मुझे जो काम दिया है, मैंने उसी मर्यादा में रहने का प्रयास किया है, मैंने कोई encroachment की कोशिश नहीं की है। क्योंकि संविधान ने मुझे वो काम कहा इसलिए मैंने अपनी मर्यादाओं को संभालते हुए अपनी बात को रखा है। ▪

आज भारत वो देश है, जो 70 वर्ष से ऊपर के हर बुजुर्ग को फ्री हेल्थकेयर की सुविधा देता है।

देश के हजारों जनऔषधि केंद्रों पर आज 80 परसेंट डिस्काउंट पर सस्ती दवाइयां मिल रही हैं।

भाजपा ही संविधान की सच्ची रक्षक - जगत प्रकाश नड्डा

बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर ने संविधान के रूप में देश को सबसे बड़ा उपहार प्रदान किया। संविधान सभा ने ड्राफ्टिंग कमेटी की रिपोर्ट को 26 नवंबर 1949 को स्वीकार कर लिया था, लेकिन इस देश के नेतृत्व को संविधान दिवस मनाने में 65 साल लग गए, यह देश के नेतृत्व पर एक बड़ा प्रश्न खड़ा करता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात में संविधान गौरव यात्रा की शुरुआत की और 26 नवंबर के महत्वपूर्ण दिवस को याद किया।

- संविधान दिवस हमें संवैधानिक मूल्यों - न्याय, समानता और विविधता में एकता के महत्व से अवगत तो कराता ही है, साथ ही हमें हमारे मौलिक अधिकारों, जिम्मेदारियों व संविधान के महत्व का अहसास भी दिलाता है।
- 2015 में जब संसद में संविधान दिवस मनाने का मुद्दा उठा तो कांग्रेस ने कहा कि जब हम 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाते हैं तो संविधान दिवस मनाने की क्या जरूरत है? यह संविधान के प्रति कांग्रेस की नकारात्मक सोच और अनादर को दर्शाता है।
- भारतीय जनता पार्टी की पंच निष्ठा संविधान की प्रस्तावना को दोहराती है जो लिंग, जाति और स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं करती है तथा अभिव्यक्ति और आवागमन की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करती है।
- कांग्रेस पार्टी और एक परिवार ने संविधान की मूल आत्मा पर भी कई बार आघात किया और संविधान को खत्म करने की कोशिश की। कांग्रेस ने देश पर आपातकाल थोप कर संविधान को बंधक बनाया।
- कांग्रेस ने 90 बार चुनी हुई सरकारों को गिराया, संविधान पर आघात किया और न्यायपालिका को नियंत्रित करने के प्रयास किए। कांग्रेस ने न्यायधीशों की नियुक्तियों को अपने हितों के अनुसार मोड़ने की कोशिश की।
- संविधान में धर्म के नाम पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है लेकिन कांग्रेस पार्टी ने कई बार अपनी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण अपने शासित राज्यों में एससी, एसटी और ओबीसी को मिल रहे आरक्षण में सेंधमारी कर एक धर्म विशेष को इसका लाभ दिया।
- सम्मान देने के बदले कांग्रेस ने डॉ. अंबेडकर को बार-बार अपमानित किया जबकि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने न केवल उन्हें सम्मान दिया, न केवल पंच तीर्थों का विकास किया बल्कि उन्होंने बाबा साहब के सपनों को अक्षरशः जमीन पर उतार कर दिखाया है।
- देश की युवा पीढ़ी को यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि बाबा साहेब अंबेडकर ने केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा क्यों दिया था? किस तरह कांग्रेस ने उन्हें चुनाव में हरवाने की साजिश रची? बाबा साहब को भारत रत्न तब मिला जब केंद्र में भाजपा समर्थित सरकार आई।
- मोदी सरकार ने संविधान की सही मायने में रक्षा करते हुए तीन तलाक और धारा 370 को खत्म करने वाले फैसले लिए। साथ ही, महिला आरक्षण विधेयक, ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को 10 प्रतिशत आरक्षण

देने जैसे महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए।

- **संविधान सभा ने ड्राफ्टिंग कमेटी की रिपोर्ट को 26 नवंबर 1949 को स्वीकार कर लिया था, लेकिन इस देश के नेतृत्व को संविधान दिवस मनाने में 65 साल लग गए। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 19 नवंबर 2015 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाने की अधिसूचना जारी की। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सहकारी संघवाद** (Cooperative Federalism) **को आगे बढ़ाने का कार्य पूरी निष्ठा से किया गया है।**

75 वें संविधान दिवस के अवसर पर देश की राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी ने राष्ट्र को संबोधित किया और संविधान के महत्वपूर्ण बिंदुओं को देश के समक्ष रखा। भारत का संविधान दुनिया का सबसे बड़ा संवैधानिक ग्रंथ है। देश को आगे बढ़ाने में संविधान ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संविधान सभा के ड्राफ्टिंग कमेटी के चेयरमैन के रूप में संविधान को एकरूपता प्रदान की। संविधान सभा में हुई चर्चाओं और बहसों की अध्यक्षता डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने की थी। बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर जी ने इन चर्चाओं के बिंदुओं को विस्तार से शब्दों में पिरोया और वो संविधान के रूप में सबके सामने आया। संविधान दिवस के अवसर पर डॉ राजेन्द्र प्रसाद और बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर को याद किया जाता है।

बाबा साहेब डॉ अंबेडकर ने संविधान के रूप में देश को सबसे बड़ा उपहार प्रदान किया। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम संविधान का सदुपयोग करते हुए देश को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें। संविधान सभा ने ड्राफ्टिंग कमेटी की रिपोर्ट को 26 नवंबर 1949 को स्वीकार कर लिया था, लेकिन इस देश के नेतृत्व को संविधान दिवस मनाने में 65 साल लग गए, यह देश के नेतृत्व पर एक बड़ा प्रश्न खड़ा करता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात में संविधान गौरव यात्रा की शुरुआत की और 26 नवंबर के महत्वपूर्ण दिवस को याद किया। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद, आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 19 नवंबर 2015 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाने की अधिसूचना जारी की। देश की आजादी की बात करने वाले और इतने वर्षों तक देश पर राज करने वाले लोगों की संविधान के प्रति सोच और प्रतिबद्धता पर सवाल उठते हैं। 2015 में जब संसद में संविधान दिवस मनाने का मुद्दा उठा तो कांग्रेस ने कहा कि जब हम 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाते हैं तो संविधान दिवस मनाने की क्या जरूरत है? लेकिन 2 दिन की चर्चा और बहस के बाद, देश में पहली बार संविधान दिवस मनाया गया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने संविधान को उसके वास्तविक स्वरूप में देश के सामने प्रस्तुत करने का कार्य किया।

भारतीय जनता पार्टी की पंच निष्ठा भी संविधान की प्रस्तावना को दोहराती है जो लिंग, जाति और स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं करती है तथा अभिव्यक्ति और आवागमन की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करती है। देश और राज्य को चलाने वाले लोगों के लिए यह आवश्यक है कि वे संविधान की प्रस्तावना को आत्मसात करें और इसके साथ ही राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का भी अध्ययन करें। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism) को पूरी निष्ठा से आगे बढ़ाया गया है। संविधान में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि 'प्रकृति में एकात्मक एवं संरचना में संघीय' (unitary in nature, federal in structure) है तथा भारतीय जनता पार्टी ने इन दोनों को माना एवं राज्यों को उचित गति से आगे बढ़ाने का काम किया है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा-एनडीए की सरकार ने संविधान की आत्मा को पूर्ण रूप से लागू करने में सफलता पाई है। जहां संविधान सभी राज्यों को समान मानता था, वहीं जम्मू-कश्मीर में धारा 370 और अनुच्छेद 35A जैसे प्रावधान वर्षों से लागू थे। 5 अगस्त 2019 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में धारा 370 और अनुच्छेद 35A को समाप्त कर जम्मू-कश्मीर को संविधान के अनुरूप अन्य राज्यों की तरह समान अधिकार दिया गया। आजादी के 75 वर्षों बाद पहली बार जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री ने संविधान के अनुरूप शपथ ली। धारा 370 और अनुच्छेद 35A की समाप्ति के बाद ही जम्मू-कश्मीर पूरी तरह भारत का अभिन्न अंग बन पाया है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, ईरान, इराक और इंडोनेशिया जैसे देशों में ट्रिपल तलाक पहले ही समाप्त किया जा चुका था, लेकिन भारत में तीन तलाक की प्रथा तब तक जारी रही, जब तक माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इसे समाप्त करने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए। एनडीए सरकार ने सही मायनों में संविधान की रक्षा करते हुए ऐतिहासिक फैसले लिए हैं। महिला आरक्षण विधेयक, जो पहली बार 1996 में लोकसभा में पेश हुआ था और वर्षों तक बिना किसी निर्णय के अटका रहा। लेकिन मोदी सरकार 2.0 ने महिला आरक्षण विधेयक पारित करके महिलाओं को संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया। इसी तरह, ओबीसी के लिए न्याय और संविधान की रक्षा की दिशा में, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। मोदी सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण लागू किया, जो समाज में समानता सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

कांग्रेस ने देश पर आपातकाल थोप कर संविधान को बंधक बनाया। मीसा और डीआईआर के तहत 1,36,000 से अधिक

लोगों को हिरासत में लिए गए थे। संविधान की रक्षा के लिए हमारी विचारधारा का समर्थन करने वाले 75,000 से अधिक लोगों ने जेल की सजा भुगती। आपातकाल दो वर्षों तक चला, जिसके दौरान अनुच्छेद 19, 21 और 22 का उल्लंघन किया गया और उनका प्रवर्तन निलंबित कर दिया गया। उस समय, यह भी स्पष्ट नहीं था कि वे कभी रिहा होंगे या देश में लोकतंत्र वापस आएगा, लेकिन उन्होंने अपनी लड़ाई बिना रुके जारी रखी। आज हम न केवल भाजपा कार्यालयों में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में संविधान दिवस मना रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ही संविधान की सच्ची रक्षक है और हमें इसे संजोकर रखना होगा।

कांग्रेस ने 90 बार चुनी हुई सरकारों को गिराया, संविधान पर आघात किया और न्यायपालिका को नियंत्रित करने के प्रयास किए। कांग्रेस ने न्यायधीशों की नियुक्तियों को अपने हितों के अनुसार मोड़ने की कोशिश की और संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का अपमान किया। बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर को उनके जीवित रहते वह सम्मान नहीं दिया गया, जिसके वे हकदार थे। सम्मान देने के बदले कांग्रेस ने डॉ अंबेडकर को बार-बार अपमानित किया। राजनैतिक विज्ञान पढ़ने वाली युवा पीढ़ी को यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि डॉ. अंबेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा क्यों दिया था? उनके इस्तीफे में क्या लिखा था? कांग्रेस ने उनके इस्तीफे को छिपाने और जनता के सामने न आने देने की कोशिश की। इतिहास गवाह है कि जब बाबा साहेब मुंबई से चुनाव लड़ने गए, तो उनके खिलाफ चुनाव लड़ने वाली पार्टी कांग्रेस ही थी। संविधान निर्माता को लोकसभा में आने से रोकने का काम भी कांग्रेस ने किया था। यह सब बातें जानना आज के युवाओं और राजनैतिक विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है।

देश में लंबे समय तक कांग्रेस का शासन रहा, लेकिन बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत रत्न से सम्मानित नहीं किया गया। यह सम्मान केवल भाजपा समर्थित सरकार के सत्ता में आने पर संभव हो पाया। साथ ही, बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर की तस्वीर भी संसद में स्थापित की गई। भाजपा ने बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को सच्चा सम्मान देकर उनके योगदान को राष्ट्र के समक्ष सही मायने में प्रस्तुत किया। गर्व से यह कहा जा सकता है कि भाजपा ही संविधान की सच्ची रक्षक और इसके आदर्शों की चैंपियन है। हम सभी को संविधान को कमजोर करने के प्रयासों से सतर्क रहते हुए इसकी रक्षा के लिए सदैव दृढ़ता के साथ खड़े रहना है।

संविधान सभा में गहन बहस और विचार-विमर्श के बाद यह स्पष्ट रूप से तय किया गया था कि आरक्षण धर्म के आधार पर नहीं दिया जाएगा। इसी सिद्धांत के तहत, संविधान में धार्मिक आधार पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं रखा गया। हालांकि, कांग्रेस पार्टी ने कई बार अप्रत्यक्ष तरीकों से एससी, एसटी और ओबीसी के आरक्षण में धर्म को शामिल करने के प्रयास किए हैं। प्रत्येक भारतीय की जिम्मेदारी है कि संविधान के रक्षक के रूप में इसकी मूल भावना को समझना, संरक्षित रखना और उसके अनुरूप आचरण करे। संविधान की निर्माण प्रक्रिया एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही है, जिसे श्याम बेनेगल द्वारा निर्मित एक फिल्म के माध्यम से प्रलेखित किया गया है। यह फिल्म संसद टीवी पर भी उपलब्ध है और इसमें संविधान सभा में हुई बहस और विचार-विमर्श का विस्तृत चित्रण किए गए हैं। राजनीतिक कार्यकर्ताओं और छात्रों को इस फिल्म को देखना चाहिए, ताकि वे भारत और उसके संविधान को गहराई से समझ सकें ।

संविधान को संरक्षित रखना और इसके प्रति स्वयं को समर्पित करना देश की जनता कि एक सामूहिक जिम्मेदारी है। ▪

"सनातन हिंदू एकता पदयात्रा" सनातन को ताकत देने का हेतु - विष्णुदत्त शर्मा

- **संत ही समाज के सच्चे पथ प्रदर्शक, सही दिशा दिखाने का कार्य कर रहे।**
- **संतों ने करोड़ों लोगों को आध्यात्मिकता से जोड़ने का कार्य किया।**
- **प्रधानमंत्री जी सनातन की धर्म ध्वजा वैश्विक स्तर पर फहराने का कार्य कर रहे हैं।**

सनातन हिंदू एकता पदयात्रा सामाजिक समरसता के साथ सनातन को ताकत देने का कार्य करेगी। हिंदू समाज के साधु-संतों ने हमेशा ही समाज को सही दिशा दिखाने व सनातन की रक्षा का कार्य किया है। संत ही समाज के सच्चे पथ प्रदर्शक हैं। संतों के आर्शीवचन से ही संस्कृति की जीवंतता बनी रहने के साथ सुसंस्कृत समाज की स्थापना हो सकती है। इस तरह की यात्राएं सनातन को मजबूत करने के साथ भारत को विश्व गुरू बनाने और देश को परम वैभव पर ले जाने का कार्य करेंगी। संत समाज ने करोड़ों लोगों को आध्यात्मिकता से जोड़ने का कार्य किया।

ज्ञान की अविरल धारा बहाकर करोड़ों लोगों को आध्यात्मिक रूख की तरफ मोड़ने में साधु समाज की भूमिका अहम है। सच्चे संत जाति, धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदाय आदि दायरों से परे होते हैं। ऐसे संतों का जहां भी अवतरण हुआ है वहां भारतीय संस्कृति के वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार होकर समाज में व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

'सनातन हिंदू एकता पदयात्रा' सामाजिक समरसता के साथ सनातन को ताकत देने का कार्य करेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद सनातन मान्यताओं, परंपराओं को ताकत देने का कार्य किया जा रहा है। अयोध्या में भगवान रामलला मुस्कुरा रहे हैं। काशी और महाकाल में भव्य कॉरिडोर के साथ धर्मस्थलों को पुराना वैभव दिलाने के लिए भाजपा

सरकारें लगातार कार्य कर रही हैं। श्री नरेन्द्र मोदी जी वैश्विक स्तर पर सनातन की धर्म ध्वजा को फहराने का कार्य कर रहे हैं। ▪

कांग्रेस ने संविधान का गला घोंटा - हितानंद जी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के साथ देश भर में जिन-जिन राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं सभी सरकारें बाबा साहेब के बनाए संविधान के अनुरूप कार्य कर रही हैं।

कांग्रेस सरकार ने संविधान का गला घोंटकर देश में आपातकाल लगाया और कई राज्यों की चुनी हुई सरकारों को गिराया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार बाबा साहेब के सपने को चरितार्थ करने का कार्य कर रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सोच यह है कि प्रत्येक कार्यकर्ता, देश का हर व्यक्ति संविधान का अध्ययन करें, उसे जानें और इसकी भावना को समझें।

संविधान के निर्माण के लिए 6 दिसंबर, 1946 को देश के प्रबुद्धजनों की एक समिति बनाई गई और संविधान निर्माण के प्रयास शुरू हुए। 26 नवंबर 1949 को संविधान तैयार हुआ और इसके प्रस्ताव को स्वीकार किया गया। इसके बाद 26 जनवरी 1950 को इसे लागू किया गया। इसके दशकों बाद 26 नवंबर 2015 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने संविधान दिवस मनाने की शुरुआत की।

संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि यह सिर्फ कानून की किताब नहीं है और न ही सिर्फ वकीलों के मार्गदर्शन के लिए है। यह समाज के विकास तथा मानवता को न्याय और सम्मान दिलाने के लिए है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के साथ देश भर में जिन-जिन राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं सभी सरकारें बाबा साहेब के बनाए संविधान के अनुरूप कार्य कर रही हैं। बाबा साहेब से जिन उद्देश्यों के लिए संविधान बनाया है, भाजपा सरकारें उसे चरितार्थ करने का कार्य कर रही हैं।

धारा-370 और 35-ए इस देश के अनुकूल नहीं थी, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संवैधानिक तरीके से उन्हें हटा दिया।

संविधान दिवस पर पार्टी कार्यकर्ता इसके लिए काम करने का संकल्प लें और संवैधानिक अधिकार ही नहीं कर्तव्यों को भी आत्मसात करें। देश तेजी से आगे बढ़े, इसके लिए एकजुटता जरूरी है। इसलिए पार्टी कार्यकर्ता संविधान की मूल भावना को समझें और उसे समाज के प्रत्येक वर्ग तक प्रसारित करें। ▪

'द साबरमती रिपोर्ट' सच्चाई सामने लाई - डॉ. मोहन यादव

- **'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म 22 साल पुरानी घटना की सच्चाई जनता के सामने लेकर आई है।**
- **सच्चाई को दबाकर लोकतंत्र को अपमानित करने का षड्यंत्र रचा गया था।**

'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म में 22 साल पुरानी घटना की सच्चाई जनता के सामने लाने का कार्य किया है। पुरानी घटना की सच्चाई को दबाकर कारसेवकों के बलिदान को गलत रूप में बताकर देश-दुनिया में हमारे लोकतंत्र को अपमानित करने का कार्य किया गया था। इस फिल्म के माध्यम से घटना की सच्चाई को जनता के सामने प्रस्तुत करने का काम किया है।

22 साल पुरानी घटना के समय सच्चाई को दबाकर कार सेवकों के बलिदान को गलत रूप में जनता के सामने बताया गया। 'द साबरमती रिपोर्ट' जैसी फिल्में जनता के सामने घटना की वास्तविकता को सामने लाने का कार्य करती हैं। जब यह फिल्म की जानकारी मिली तो मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने काल के प्रवाह में वर्षों पुरानी घटना की सच्चाई जनता तक पहुंचे, इसके लिए फिल्म को टैक्स फ्री करने का निर्णय लिया। फिल्म कलाकारों ने फिल्मांकन के जरिए उस घटना की वास्तविकता को देश-दुनिया के सामने लाने का कार्य किया है।

मध्यप्रदेश में फिल्मों की शूटिंग के लिए बड़ी संख्या में डेस्टिनेशन हैं। प्रदेश सरकार टूरिज्म को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। मालवा, महाकौशल, वन, खनिज, हेरिटेज स्थान फिल्मों की शूटिंग के लिए बेहतर लोकेशन हैं। मध्यप्रदेश सरकार प्रदेश में फिल्मों की शूटिंग को बढ़ावा दे रही है। मध्यप्रदेश नदियों का मायका है। मध्यप्रदेश सरकार ने अपनी टूरिज्म पॉलिसी के माध्यम से फिल्म इंडस्ट्री को लगातार प्रोत्साहन देने का कार्य किया जा रहा है। ▪

22 साल पुरानी घटना के समय सच्चाई को दबाकर कार सेवकों के बलिदान को गलत रूप में जनता के सामने बताया गया। ''द साबरमती रिपोर्ट'' जैसी फिल्में जनता के सामने घटना की वास्तविकता को सामने लाने का कार्य करती हैं।

वास्तविकता जानने के लिए "द साबरमती रिपोर्ट' देखें - विष्णुदत्त शर्मा

- **भाजपा के सभी सांसद व विधायक ''द साबरमती रिपोर्ट'' क्षेत्र की जनता को दिखाएंगे।**
- **''द साबरमती रिपोर्ट'' फिल्म ने झूठ की राजनीति करने वालों के परसेप्शन को तोड़ने का कार्य किया।**

मध्यप्रदेश के सभी सांसद और विधायक अपने-अपने संसदीय व विधानसभा क्षेत्र की जनता को ''द साबरमती रिपोर्ट'' फिल्म दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। इस फिल्म ने देश में झूठ की राजनीति करने वालों का परसेप्शन को तोड़ने का कार्य किया है।

'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म में वर्षों पुरानी घटना की सच्चाई को जनता के सामने लाने का कार्य किया है। मैं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश की ओर से आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने इस फिल्म को प्रदेश में टैक्स फ्री करने का निर्णय लिया है। हमने एक प्रयास किया है कि हमारे सभी सांसद और सभी विधायक अपनी ओर से 'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म को अपने संसदीय व विधानसभा क्षेत्र में जनता को दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। समाज से भी अपील करता हूं कि इस फिल्म को देखें, क्योंकि यह फिल्म उस सच्चाई को जनता के सामने ला रही है, जिससे वर्षों तक देश की जनता को गुमराह करते रहे हैं। फिल्म को इसलिए भी जनता को देखना चाहिए कि देश के अंदर झूठ की राजनीति करने वालों ने किस प्रकार से झूठ का परसेप्शन बनाया था। इस फिल्म ने झूठ की राजनीति करने वालों के परसेप्शन को तोड़ने का कार्य किया है। इस फिल्म के सभी कलाकारों का भी आभार कि फिल्मांकन के जरिए उस घटना की सच्चाई को जनता के सामने लाने का कार्य किया है। ▪

सद्कर्मों की प्रेरणा देने के लिए सिख मार्ग सबसे अच्छा- डॉ. मोहन यादव

सम्पूर्ण मानवता के लिए समरसता एवं विश्व बंधुत्व का मार्ग प्रशस्त करने वाली गुरूनानक देव जी की शिक्षा और संदेश युगों-युगों तक हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

सिख समाज में भाईचारे और सबकी चिन्ता करने वाले, सबको एक साथ लेकर चलने वाले और लोगों में समानता का भाव जगाने वाले गुरू नानक जी का जब हम स्मरण करते हैं तो मन प्रफुल्लित हो उठता है। सच्चे अर्थों में उनके संदेशों पर अमल करने वाले एवं उन्हें आत्मसात करने वाले लोग दुनिया के 200 से अधिक देशों में निवासरत हैं और उनकी अच्छाईयों और उनके संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। अपने आचरण, व्यवहार व सन्मार्ग से सद्कर्मों की प्रेरणा देने का कार्य करने में सिख मार्ग सबसे अच्छा है। संगत-पंगत, हमारे विचारों, आस्था व एकजुटता से दुश्मनों के षड्यंत्रों का मुकाबला किया जाएगा।

दुश्मनों ने सबसे अधिक सिख समाज को ही दगा दिया है। उज्जैन में महाकुंभ के लिए आश्रमों को जमीन आवंटित करने का कार्य मध्यप्रदेश सरकार ने किया है। सिख समाज के शौर्य व बलिदान को देश की जनता तक पहुंचाने के लिए पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया है। सिख समाज के सभी धर्मगुरू नक्षत्रों की भांति अपनी आभा बिखेर रहे हैं। सनातन संस्कृति को बचाने और उनकी रक्षा करने के लिए सिख समाज ने जो बलिदान दिया है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। सम्पूर्ण मानवता के लिए समरसता एवं विश्व बंधुत्व का मार्ग प्रशस्त करने वाली गुरूनानक देव जी की शिक्षा और संदेश युगों-युगों तक हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। गुरू नानक देव जी ने अत्याचार एवं समाज की कुरीतियों के खिलाफ बुलंद आवाज उठाई। जो सरल सूत्र है यही वेद वाक्य है। यही चारों वेदों का निचोड़ है। निराकार परम पिता परमेश्वर के प्रति आस्था पर सच्चा विश्वास है। उसी परंपरा ने हमारी सनातन संस्कृति को बचाया। हम कैसे भूल जाए कि बलिदान का कोई मजाक बनाए। बलिदान को सम्मान देने का कार्य भाजपा ने किया है। ▪

गुरूनानक जी ने शांति और सौहार्द्र का रास्ता दिखाया- विष्णुदत्त शर्मा

गुरूनानक जी ने सारी दुनिया को शांति और सौहार्द्र का रास्ता दिखाया। उनके संदेश देश और दुनिया के लिए आज भी प्रासंगिक हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास के मूल मंत्र पर कार्य करते हुए सिख समाज को आगे बढ़ाने के लिए कार्य किया है। गुरु नानक देव जी सिख समुदाय के प्रथम गुरु थे। अपने पूरे जीवनकाल में एकता, प्रेम और सेवा का संदेश दिया। इसी के साथ गुरु नानक देव जी ने समाज में जो कुरीतियां थी वह हमेशा उन्हें दूर करने का प्रयास करते थे। गुरु नानक देव जी ने सेवा दान और परोपकार के मार्ग पर चलने का संदेश दिया, जिसमें सभी के प्रति प्रेम और करुणा का भाव निहित है। उनके अनुसार सेवा भक्ति जीवन के दो प्रमुख सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति को आध्यात्मिकता और एकता की राह पर ले जाते हैं। ▪

जनजातीय गौरव दिवस - अन्याय को दूर करने का ईमानदार प्रयास

हम जनजातीय गौरव दिवस मना रहे हैं। जब हम जनजातीय गौरव वर्ष की शुरूआत कर रहे हैं। तब यह समझना भी बहुत जरूरी है कि इस आयोजन की आवश्यकता क्यों हुई। यह इतिहास के एक बहुत बड़े अन्याय को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है। आजादी के बाद आदिवासी समाज के योगदान को इतिहास में वो स्थान नहीं दिया गया, जिसका आदिवासी समाज हकदार था। आदिवासी समाज वो है, जिसने राजकुमार राम को भगवान राम बनाया। आदिवासी समाज वो है जिसने भारत के संस्कृति और आजादी की रक्षा के लिए सैंकड़ों वर्षों की लड़ाई को नेतृत्व दिया। लेकिन आजादी के बाद के दशकों में आदिवासी इतिहास के इस अनमोल योगदान को मिटाने की कोशिशें की गई। इसके पीछे भी स्वार्थ भरी राजनीति थी। राजनीति ये कि भारत की आजादी के लिए सिर्फ एक ही दल को श्रेय दिया जाए। लेकिन अगर एक ही दल, एक ही परिवार ने आजादी दिलाई। तो भगवान बिरसा मुंडा का उलगुनान आंदोलन क्यों हुआ था? संथाल क्रांति क्या थी? कोल क्रांति क्या थी? क्या हम महाराणा प्रताप के साथी उन रणबांकुरे भीलों को भूल सकते हैं क्या? कौन भूल सकता है? सह्याद्री के घने जंगलों में छत्रपति शिवाजी महाराज को ताकत देने वाले जनजातीय भाई बहनों को कौन भूल सकता है? अल्लूरी सीताराम राजू जी के नेतृत्व में आदिवासियों द्वारा की गई भारत माता की सेवा को तिलका मांझी, सिद्धू कान्हू, बुधू भगत, धीरज सिंह, तेलंगा खड़िया, गोविंद गुरु, तेलंगाना के राम जी गोंड, एमपी के बादल भोई राजा शंकर शाह, कुमार रघुनाथ शाह! टंट्या भील, निलांबर - पितांबर, वीर नारायण सिंह, दीवा किशन सोरेन, जात्रा भरत, लक्ष्मण नाईक, मिजोरम की महान स्वतंत्रता सेनानी, रोपुइलियानी जी, राजमोहिनी देवी, रानी गाइदिन्ल्यू, वीर बालिका कालीबाई, गोंडवाना की रानी दुर्गावती। ऐसे असंख्य, असंख्य आदिवासी जनजातीय शूरवीरों को कोई भुला सकता है क्या? मानगढ़ में अंग्रेजों ने जो नरसंहार किया था? हजारों आदिवासी भाई बहनों को मौत के घाट उतार दिया गया था। क्या हम उसे भूल सकते हैं?

आजादी के बाद आदिवासी समाज के योगदान को इतिहास में वो स्थान नहीं दिया गया, जिसका आदिवासी समाज हकदार था। आदिवासी समाज वो है, जिसने राजकुमार राम को भगवान राम बनाया।

आदिवासी समाज वो है जिसने भारत के संस्कृति और आजादी की रक्षा के लिए सैंकड़ों वर्षों की लड़ाई को नेतृत्व दिया। लेकिन आजादी के बाद के दशकों में आदिवासी इतिहास के इस अनमोल योगदान को मिटाने की कोशिशें की गई। इसके पीछे भी स्वार्थ भरी राजनीति थी।

संस्कृति हो या फिर सामाजिक न्याय, एनडीए सरकार का मानस कुछ अलग ही है। यह भाजपा ही नहीं बल्कि एनडीए का सौभाग्य है कि हमें द्रोपदी मुर्मु जी को राष्ट्रपति बनाने का अवसर मिला। वह देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति है। जब एनडीए ने द्रौपदी मुर्मु जी को राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाना तय किया, तो नीतीश बाबू ने पूरे देश के लोगों को अपील की थी, कि द्रोपदी मुर्मु जी को भारी मतों से जीताना चाहिए।

जिस पीएम जनमन योजना के तहत अनेक काम शुरू हुए हैं। उसका श्रेय भी राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु जी को ही जाता है। जब वो झारखंड की राज्यपाल थीं और फिर जब वो राष्ट्रपति बनीं तो अक्सर आदिवासियों में भी अति पिछड़ी आदिवासी जनजातियों का जिक्र किया करती थीं। इन अति पिछड़ी आदिवासी जनजातियों की पहले की सरकारों ने कोई परवाह ही नहीं की थी। इनके जीवन से मुश्किलें कम करने के लिए ही 24000 करोड़ रूपये की पीएम जनमन योजना शुरू की गई। पीएम जनमन योजना से

देश की सबसे पिछड़ी जनजातियों की बस्तियों का विकास सुनिश्चित हो रहा है। इस योजना को 1 साल पूरा हो रहा है। इस दौरान अति पिछड़ी जनजातियों को हजारों पक्के घर दिए हैं। पिछड़ी जनजातियों की बस्तियों को जोड़ने के लिए सैंकड़ों किलोमीटर की सड़कों पर काम शुरू हो चुका है। पिछड़ी जनजातियों के सैकड़ों गांवों में हर घर नल से जल पहुंचा है।

जिनको किसी ने नहीं पूछा मोदी उनको पूजता है। पहले की सरकारों के रवैये के कारण आदिवासी समाज दशकों तक मूल सुविधाओं से वंचित ही रहा। देश के दर्जनों आदिवासी बाहुल्य जिले विकास की गति में बहुत पिछड़ गए थे। अगर किसी अफसर को सजा देनी हो, उसको पनिशमेंट देना हो, तो पनिशमेंट पोस्टिंग भी ऐसे जिलों में की जाती थी। एनडीए सरकार ने पुरानी सरकारों की सोच को बदल दिया। एनडीए सरकार ने इन जिलों को आकांक्षी जिले घोषित किया और वहां नए और ऊर्जावान अफसरों को भेजा। आज कितने ही आकांक्षी जिले विकास के कई पैरामीटर्स पर दूसरे जिलों से भी आगे निकल गए हैं। इसका बहुत बड़ा लाभ आदिवासी भाई बहनों को हुआ है।

आदिवासी कल्याण हमेशा से एनडीए सरकार की प्राथमिकता रहा है। ये अटल बिहारी वाजपेई जी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ही थी, जिसने आदिवासी कल्याण के लिए अलग मंत्रालय बनाया। 10 साल पहले आदिवासी क्षेत्रों आदिवासी परिवारों के विकास के लिए बजट 25000 करोड़ रूपयों से भी कम था। 10 साल पहले का हाल देखिए 25 हजार करोड़ से भी कम। एनडीए सरकार ने इसको 5 गुना बढ़ाकर सवा लाख करोड़ रुपए पहुंचाया है। अभी कुछ दिन पहले ही देश के साठ हजार से अधिक आदिवासी गांवों के विकास के लिए एक विशेष योजना एनडीए सरकार ने शुरू की है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान, इसके तहत करीब 80,000 करोड़ रुपए आदिवासी गांवों में लगाए जाएंगे। इसका मकसद आदिवासी समाज तक जरूरी सुविधाएं पहुंचाने के साथ-साथ, युवाओं के लिए ट्रेनिंग और रोजगार के अवसर बनाने का भी है। इस योजना के तहत जगह-जगह ट्राइबल मार्केटिंग सेंटर बनेंगे। लोगों को होम स्टे बनाने के लिए मदद दी जाएगी, प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे आदिवासी क्षेत्रों में पर्यटन को बल मिलेगा और आज जो इको टूरिज्म की एक परिकल्पना बनी है, वह हमारे जंगलों में आदिवासी परिवारों के बीच में संभव होगा और तब पलायन बंद हो जाएगा, पर्यटन बढ़ता जाएगा।

एनडीए सरकार ने आदिवासी विरासत को सहेजने के लिए भी अनेक कदम उठाए हैं। आदिवासी कला संस्कृति के लिए समर्पित अनेक लोगों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। रांची में भगवान बिरसा मुंडा के नाम पर विशाल संग्रहालय की शुरुआत की।

मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा में बादल भोई म्यूजियम और मध्य प्रदेश में ही जबलपुर में राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह संग्रहालय का उद्घाटन हुआ है। श्रीनगर और सिक्किम में दो आदिवासी रिसर्च सेंटर का भी उद्घाटन हुआ है और भगवान बिरसा मुंडा जी की याद में स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी किए गए हैं। ये प्रयास देश को आदिवासी शौर्य और गौरव की निरंतर याद दिलाते रहेंगे।

आदिवासी समाज का भारत की पुरातन चिकित्सा पद्धति में भी बहुत बड़ा योगदान है। इस धरोहर को भी सुरक्षित किया जा रहा है और भावी पीढ़ी के लिए नए आयाम भी जोड़े जा रहे हैं। एनडीए सरकार ने लेह में National Institute of Sowa Rigpa की स्थापना की है। अरुणाचल प्रदेश में North Eastern Institute of Ayurveda & Folk Medicine Research को अपडेट किया गया है। डब्ल्यूएचओ का ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडीशनल मेडिसिन भी भारत में बन रहा है।

इससे भी भारत के आदिवासियों की परंपरागत चिकित्सा पद्धति देश दुनिया तक पहुंचेगी।

जनजातीय समाज की पढ़ाई, कमाई और दवाई पर एनडीए सरकार का बहुत जोर है। डॉक्टरी हो, इंजीनियरिंग हो, सेना हो, aeroplane pilot हो, हर प्रोफेशन में आदिवासी बेटे बेटियां आगे आ रहे हैं। यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि बीते दशक में स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक आदिवासी क्षेत्रों में बेहतर संभावनाएं बनी है। आजादी के छह सात दशक बाद भी देश में एक ही सेंट्रल ट्राईबल यूनिवर्सिटी थी। बीते 10 सालों में एनडीए सरकार ने दो नई सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी देश को दी है। इन वर्षों में अनेक डिग्री कॉलेज, अनेक इंजीनियरिंग कॉलेज, दर्जनों आईटीआई आदिवासी बाहुल्य जिलों में बने हैं। बीते 10 साल में आदिवासी जिलों में 30 नए मेडिकल कॉलेज भी बने हैं और कई मेडिकल कॉलेज पर काम जारी है। देश भर में 700 से अधिक एकलव्य स्कूलों का एक मजबूत नेटवर्क भी बन रहा है।

मेडिकल, इंजीनियरिंग और टेक्निकल शिक्षा में आदिवासी समाज के सामने भाषा की भी एक बहुत बड़ी समस्या रही है। एनडीए सरकार ने मातृभाषा में परीक्षा के विकल्प दिए हैं। इन फैसलों ने आदिवासी समाज के बच्चों को नया हौसला दिया है। उनके सपनों को नए पंख लगाए हैं।

बीते 10 साल में आदिवासी नौजवानों ने sports में भी, खेलकूद में भी कमाल किया है। इंटरनेशनल टूर्नामेंट में भारत के लिए मेडल जीतने वालों में ट्राइबल खिलाड़ियों का बहुत बड़ा योगदान है। आदिवासी युवाओं की इस प्रतिभा को देखते हुए, जनजातीय क्षेत्रों में खेल सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। खेलो इंडिया अभियान के तहत आधुनिक मैदान स्पोर्ट्स कांप्लेक्स आदिवासी बहुल जिलों में बनाए जा रहे हैं। भारत की पहली नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी मणिपुर में बनाई गई है।

आजादी के बाद 70 साल तक हमारे देश में बांस से जुड़े कानून बहुत सख्त थे। इससे आदिवासी समाज सबसे ज्यादा परेशान था। एनडीए सरकार ने बांस काटने से जुड़े कानूनों को सरल किया। पहले की सरकार के समय सिर्फ 8-10 वन उपज उस पर ही MSP मिला करती थी। ये एनडीए सरकार ही है, जो अब करीब 90 वन उपजों को MSP के दायरे में लाई है। देश भर में 4000 से अधिक वन धन केंद्र काम कर रहे हैं। इनसे 12 लाख आदिवासी भाई बहन जुड़े हैं। उनको कमाई का बेहतर साधन मिला है।

जब से लखपति दीदी अभियान शुरू हुआ है। तब से करीब 20 लाख आदिवासी समाज की बहनें लखपति दीदी बन चुकी हैं और लखपति दीदी का मतलब यह नहीं है कि एक बार एक लाख, हर वर्ष एक लाख रूपये के भी ज्यादा कमाई वो लखपति दीदी है। अनेक आदिवासी परिवार, कपड़ों, खिलौनों, साज-सज्जा के शानदार समान बनाने के काम में जुटे हैं। ऐसे हर सामान के लिए बड़े शहरों में एनडीए सरकार हॉट बाजार लगा रही है। इंटरनेट पर भी इसके लिए एक वैश्विक बाजार बना रहे हैं। एनडीए सरकार में जब विदेशी नेताओं को गिफ्ट दी जाती हैं, तो इसमें बहुत बड़ी संख्या में आदिवासी भाई-बहनों द्वारा बनाए गए सामान भेंट होती है। हाल में ही झारखंड की सोहराई पेंटिंग, मध्य प्रदेश की गौंड पेंटिंग और महाराष्ट्र की वारली पेंटिंग विदेश के बड़े-बड़े नेताओं को भेंट की गयी हैं। अब उन सरकारों के अंदर दीवारों पर ये चित्र नजर आएंगे। इससे आदिवासियों के हुनर, कला का दुनिया में भी यश बढ़ रहा है।

पढ़ाई और कमाई का लाभ तभी मिल पाता है, जब परिवार स्वस्थ रहें। आदिवासी समाज के लिए सिकल सेल एनीमिया की बीमारी एक बहुत बड़ी चुनौती रही है। एनडीए सरकार ने इससे निपटने के लिए राष्ट्रीय अभियान चलाया है। इसको शुरू हुए 1 साल हो चुका है। इस दौरान करीब साढ़े चार करोड़ साथियों की स्क्रीनिंग हुई है। आदिवासी परिवारों को अन्य बीमारियों की जांच के लिए ज्यादा दूर जाना न पड़े, इसके लिए बड़ी संख्या में आयुष्मान आरोग्य मंदिर बनाए जा रहे हैं। दुर्गम से दुर्गम इलाकों में भी मोबाइल मेडिकल यूनिट स्थापित की जा रही है।

आज भारत पूरी दुनिया में क्लाइमेट चेंज के खिलाफ लड़ाई का पर्यावरण की रक्षा का बड़ा नाम बना है। ऐसा इसलिए, क्योंकि हमारे विचारों के मूल में आदिवासी समाज के सिखाए संस्कार हैं। आदिवासी समाज सूर्य और वायु को, पेड़ पौधों को पूजने वाला समाज है।

भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में देश के आदिवासी बाहुल्य जिलों में बिरसा मुंडा जनजातीय गौरव उपवन बनाए जा रहे हैं। बिरसा मुंडा जनजातीय गौरव उपवन में 500-1000 वृक्ष लगाए जाएंगे। पूरा भरोसा है, इसके लिए सभी का साथ मिलेगा, सबका सहयोग मिलेगा।

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती का ये उत्सव हमें बड़े संकल्पों को तय करने की प्रेरणा देता है। हम मिलकर देश के आदिवासी विचारों को नए भारत के निर्माण का आधार बनाएंगे। हम मिलकर आदिवासी समाज की विरासत को सहेजेंगे। हम मिलकर उन परंपराओं से सीखेंगे, जो सदियों से आदिवासी समाज ने संरक्षित कर रखी है। ऐसा करके ही हम सही मायने में एक सशक्त, समृद्ध और सामर्थ्यवान भारत का निर्माण कर पाएंगे। ▪

भगवान बिरसा मुंडा देश के गौरव - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने छिंदवाड़ा और जबलपुर में शंकर शाह, रघुनाथ शाह की स्मृति में बड़ा स्मारक, संग्रहालय की सौगातें दी है। जनजाति बाहुल्य ब्लाकों में भगवान बिरसा मुंडा जी की स्मृति में वन, उपवन बनाने की प्रधानमंत्री जी ने घोषणा की है।

- **भगवान बिरसा मुंडा ने बजाया था अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति का बिगुल।**
- **प्रधानमंत्री मोदी जी ने दिया धरती आबा बिरसा मुंडा को सम्मान।**
- **जनजातीय समाज का कल्याण कर रही भाजपा की केंद्र और राज्य सरकार।**
- **कांग्रेस ने आदिवासियों के लिए कुछ नहीं किया, पेसा एक्ट कानून हमारी सरकार ने लागू किया।**
- **भगवान बिरसा मुंडा ने जनजातीय समाज और संस्कृति के हित में जो काम किए, उसके आधार पर उन्हें 'धरती आबा' कहा गया। वर्तमान झारखंड के एक दूरस्थ अंचल में आदिवासी समाज में पैदा हुए भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति का बिगुल बजाया था।**

भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाया। वो अंग्रेजो को देश से उखाड़ फेंकने के लिए तो लड़े ही, उन्होंने आदिवासियों के अधिकार तथा अपनी संस्कृति को बचाने के लिए भी संघर्ष किया। तत्कालीन समय में अंग्रेज सरकार जिस तरह से एक धर्म और संस्कृति को भारतीयों पर थोपना चाहती थी, भगवान बिरसा मुंडा ने स्कूल में पढ़ाई के दौरान ही उसका विरोध शुरू कर दिया था। यही कारण है कि आज जनजातीय समाज के साथ पूरा देश उन्हें भगवान जैसा सम्मान दे रहा है। देश और समाज के लिए भगवान बिरसा मुंडा द्वारा किये गए कार्यों को सम्मान देने के लिए हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने उनकी जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत मध्यप्रदेश से ही हुई थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार और डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश सरकार अपने-अपने स्तर पर जनजातीय हितों की रक्षा तथा उनके कल्याण के लिए प्रयास कर रही हैं। भगवान बिरसा मुंडा इसी धरती की संतान थे और वो पूरे देश के गौरव थे। देश और प्रदेश के कोने-कोने में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता जनजातीय गौरव दिवस मना रहे हैं तथा भगवान बिरसा मुंडा का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

बिहार से प्रधानमंत्री जी ने करोड़ों आदिवासी भाई और बहनों के साथ संपूर्ण देश ने जनजाति गौरव दिवस को मनाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भगवान बिरसा मुंडा जी की जन्म जयंती पर डेढ़ सौ रुपए का डाक टिकट जारी किया है। भगवान बिरसा मुंडा के परिवार के लोगों को प्रधानमंत्री जी ने सम्मानित किया और संपूर्ण देश में समग्र उत्थान के लिए 75000 करोड़ की भर्ती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान को प्रारंभ किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने छिंदवाड़ा और जबलपुर में शंकर शाह, रघुनाथ शाह की स्मृति में बड़ा स्मारक, संग्रहालय की सौगातें दी है। जनजाति बाहुल्य ब्लाकों में भगवान बिरसा मुंडा जी की स्मृति में वन, उपवन बनाने की प्रधानमंत्री जी ने घोषणा की है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आदिवासी भाई-बहनों का विकास करने का कार्य प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध होकर कर रही है।

कांग्रेस ने आदिवासियों के लिए कुछ नहीं किया। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने ही पेसा एक्ट लागू किया और कई योजनाओं के माध्यम से आदिवासी भाई-बहनों का जीवन बदलने का काम किया है। ▪

जल, जंगल और जमीन का अधिकार जनजातीय समाज का है मूल अधिकार: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मध्यप्रदेश में जनजाति गौरव को पुर्नस्थापित करने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहे हैं। महान जनजाति नायक श्री बादल भोई और श्री शंकर शाह रघुनाथ शाह के संग्रहालय का लोकार्पण किया है।

टंट्या मामा भील मालवा क्षेत्र के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। प्रदेश में खरगोन के नए विश्वविद्यालय का नाम क्रांतिवीर टंट्या मामा विश्वविद्यालय रखा जा रहा है।

जल, जंगल और जमीन का अधिकार जनजातीय समाज का मूल अधिकार है। इसे अंग्रेज उनसे छीनना चाहते थे। भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के अत्याचार, अनाचार के खिलाफ जनजातीय समाज को खड़ा किया और अंग्रेजों के खिलाफ दो स्तरों पर लड़ाई लड़ी। एक ओर उन्होंने जनजातीय समाज के मूल अधिकार की रक्षा की और दूसरी ओर ईसाई मिशनरियों द्वारा हमारे धर्म के साथ छेड़छाड़ कर हमारे जनजातीय भाईयों को ईसाई बनाने के कुत्सित प्रयासों को ध्वस्त किया।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास को देश के समक्ष लाने का अभियान चलाया है। उन्होंने प्रतिवर्ष देश भर में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस मनाने का निर्णय मध्यप्रदेश में ही लिया। आज पूरे देश में भगवान बिरसा मुंडा जयंती मनाई जा रही है। भगवान बिरसा मुंडा का जीवन हम सबके लिए मार्गदर्शक है।

मध्यप्रदेश में जनजाति गौरव को पुर्नस्थापित करने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहे हैं। महान जनजाति नायक श्री बादल भोई और श्री शंकर शाह रघुनाथ शाह के संग्रहालय का लोकार्पण किया है। टंट्या मामा भील मालवा क्षेत्र के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। प्रदेश में खरगोन के नए विश्वविद्यालय का नाम क्रांतिवीर टंट्या मामा विश्वविद्यालय रखा जा रहा है। महू के पास रेलवे स्टेशन का नामकरण भी उनके नाम पर किया गया है। प्रदेश में कोदो, कुटकी को प्रोत्साहित करने के लिए रानी दुर्गावती योजना चलाई जा रही है।

जनजातीय समाज हमारी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखे है। भगवान श्रीराम के रावण के विरुद्ध संघर्ष में जनजातीय समाज ने सहयोग किया। भगवान श्रीकृष्ण मोर पंख धारण करते थे, जनजातीय समाज भी मोर पंख धारण करता है। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं बिरसा मुंडा को याद करने से हमें अपनी संस्कृति की जड़ों से जुड़ने का मौका मिलता है।

जनजाति समाज के विकास और कल्याण के कार्यों में कोई कमी नहीं रखी जाएगी। नदी जोड़ो अभियान का लाभ पूरे देश को मिलेगा। बाणसागर परियोजना का पानी अब शहडोल जिले को भी मिलेगा। शहडोल में स्थाई हेलीपैड बनाया जाएगा। सरकारी सुविधाओं का लाभ हर व्यक्ति को मिलेगा। सरकार ने निर्णय लिया है कि यदि दुर्घटना में कोई भी व्यक्ति घायल होता है और पास में हवाई पट्टी है तो उसे उपचार के लिए हवाई मार्ग से अस्पताल ले जाया जाएगा। ▪

मोदी जी ने दिया बिरसा मुंडा को सम्मान - डॉ. महेन्द्र सिंह

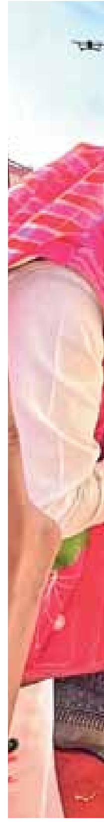

- **भाजपा की सरकारें जनजातीय समुदाय के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन लाने का कार्य कर रही हैं।**
- **भाजपा ने जनजातीय समाज को मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य किया।**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया डेढ़ सौ रुपए का डाक टिकट जारी।**
- **कांग्रेस की सरकारों ने आदिवासी भाई-बहनों को केवल वोट बैंक समझा।**

हमारे करोड़ों आदिवासी भाई-बहनों को जल, जंगल और जमीन का अधिकार दिलाने वाला पेसा एक्ट भाजपा की सरकार में प्रदेश में लागू हुआ। जिसका लाभ प्रदेश के 1 करोड़ से अधिक जनजातीय समुदाय के लोगों को मिल रहा है।

हम एक ऐसे वीर योद्धा, समाज सुधारक और जननायक की 150 वीं जयंती जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मना रहे हैं, जिन्होंने अपना जीवन जनजातीय समाज की उन्नति, संस्कृति की रक्षा में समर्पित किया। भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों को अहसास करा दिया कि भारत का स्वाभिमान कभी भी आततायी शक्ति के सामने आत्म समर्पण नहीं करता। दुर्भाग्यवश कांग्रेस ने आजादी के बाद भी भगवान बिरसा मुंडा के योगदान को छिपाकर रखा, लेकिन सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास के मंत्र पर चलकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा सहित उन सभी जनजातीय जननायकों को सम्मान प्रदान किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को 15 नवंबर, 2021 से पूरे देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाए जाने की शुरुआत की। जनजातीय समाज के विकास की राह आसान करने में भाजपा ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी, जनजातीय वर्ग से द्रौपदी मुर्मू जी देश की राष्ट्रपति और सुश्री अनुसुइया उइके राज्यपाल हैं। श्री नरेन्द्र मोदी जी के मंत्रिमंडल में प्रदेश से जनजातीय समाज से श्री दुर्गादास उइके व श्रीमती सावित्री ठाकुर को शामिल किया गया है। रानी दुर्गावती का भव्य स्मारक 100 करोड़ की लागत से जबलपुर में आकार ले रहा है। छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम राजा शंकर शाह के नाम पर, हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम रानी कमलापति के नाम पर, पातालपानी स्टेशन का नाम जननायक टंट्या भील के नाम पर, शहडोल मेडिकल कॉलेज का नाम भगवान बिरसा मुंडा और मंडला मेडिकल कॉलेज का नाम राजा हृदय शाह के नाम पर भाजपा ने रखा। इसीलिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि देश के जनजातीय समाज के कल्याण और बेहतरी के लिए एक अभियान बना दिया है।

हमारे करोड़ों आदिवासी भाई-बहनों को जल, जंगल और जमीन का अधिकार दिलाने वाला पेसा एक्ट भाजपा की सरकार में प्रदेश में लागू हुआ। जिसका लाभ प्रदेश के 1 करोड़ से अधिक जनजातीय समुदाय के लोगों को मिल रहा है। जनजातीय समुदाय के भाई-बहनों के जीवन में अभूतपूर्व बदलाव लाने का काम भारतीय जनता

पार्टी ने किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बिहार से करोड़ों आदिवासी भाई और बहनों के साथ जनजाति गौरव दिवस मनाया है। श्री मोदी जी ने भगवान बिरसा मुंडा जी की जन्म जयंती पर 150 रुपए का डाक टिकट जारी किया है। भगवान बिरसा मुंडा के परिवार के लोगों को प्रधानमंत्री जी ने सम्मानित कर संपूर्ण देश में समग्र उत्थान के लिए आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान को प्रारंभ किया है। प्रधानमंत्री ने छिंदवाड़ा और जबलपुर में शंकर शाह, रघुनाथ शाह की स्मृति में बड़ा स्मारक, संग्रहालय की सौगातें दी है।

जनजातीय वर्गों की आबादी के अनुपात में बजट की राशि बढ़ाकर मध्यप्रदेश भाजपा सरकार ने इतिहास रचने का काम किया। अनुसूचित जनजाति का बजट मिस्टर बंटाधार की सरकार में मात्र 651 करोड़ था जिसको हमने बढ़ाकर लगभग 40 हजार करोड़ रूपये किया है। कांग्रेस की सरकारों ने आदिवासी भाई-बहनों को केवल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया है। कांग्रेस ने मध्यप्रदेश के जनजातीय नायक टंट्या भील और रानी कमलापति का हमेशा अपमान किया। यह वहीं कांग्रेसी है, जिन्होंने एनडीए के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जनजातीय वर्ग से आने वाले पीए संगमा का विरोध किया और द्रौपदी मुर्मु जी के खिलाफ अशोभनीय टिप्पणी की। ▪

जहां रोजगार मिलेगा, मध्यप्रदेश वहां पहले खड़ा दिखाई देगा

डॉ. मोहन यादव

- **प्रधानमंत्री जी की आर्थिक नीतियों से ब्रिटेन में 60 हजार करोड़, जर्मनी में 18 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव आए।**
- **प्रदेश की बेहतरी के लिए ब्रिटेन और जर्मनी की यात्रा में हमने एक-एक मिनट का उपयोग किया।**
- **हम सभी मिलकर मध्यप्रदेश को देश का नंबर एक राज्य बनाएंगे।**
- **ब्रिटेन व जर्मनी की यात्रा मध्यप्रदेश के विकास में मील का पत्थर साबित होगी।**

यह एक सुखद संयोग है कि मैं ब्रिटेन और जर्मनी की यात्रा पर था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की आर्थिक व्यवस्था के कारण भारत ने पिछले वर्ष ही ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बना है। दूसरा देश जर्मनी है, जिसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारे देश की अर्थव्यवस्था पीछे छोड़ने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। आर्थिक विकास के लिए पूरी दुनिया का अपना-अपना एजेंडा है, लेकिन मध्यप्रदेश किसी भी मामले में पीछे नहीं है। मध्यप्रदेश अपनी क्षमता, प्रतिभा, कौशल और मेहनत से लगातार आगे बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश के विकास व रोजगार के लिए भाजपा सरकार कार्य कर रही है। जहां भी रोजगार मिलेगा, वहां मध्यप्रदेश पहले खड़ा दिखाई देगा। मध्यप्रदेश युवाओं के आकांक्षाओं को पंख देकर रोजगार के साधन उपलब्ध कराएगा।

कुछ माह पहले भोपाल के अचारपुरा में एक फैक्ट्री का शुभारंभ किया गया था। यहां जर्मनी के अधिकारियों ने देखा कि मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार किस तरह से औद्योगिक निवेश के लिए कार्य कर रही है। उद्योगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने और निवेश के अनुकूल वातावरण होने के कारण ही जर्मनी की कंपनी ने अचारपुरा में निवेश किया। ब्रिटेन व जर्मनी की यात्रा मध्यप्रदेश के और बेहतर स्थान पर पहुंचाने के लिए मील का पत्थर साबित होगी। सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में निवेश के लिए मध्यप्रदेश को 25 हजार करोड़ का प्रस्ताव मिला है। समाज आधारित रिसर्च के लिए भी मध्यप्रदेश सरकार ने एक विश्वविद्यालय से एमओयू किया है। मध्यप्रदेश के विकास के लिए संभाग स्तर पर रीजनल इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव बहुत कारगर साबित हो रहे हैं। 7 दिसंबर 2024 को नर्मदापुरम में रीजनल इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव करने जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के समग्र विकास के लिए प्रदेश के सभी जिलों का विकास किया जाएगा। हम सभी मिलकर मध्यप्रदेश को देश का सबसे बेहतर राज्य बनाने के लिए कार्य करेंगे। ▪

संविधान दिवस मनाना मोदी जी की देन - अजय जामवाल

- **कांग्रेस ने संविधान को किताब माना, भाजपा ने ग्रंथ मानकर किया सम्मान।**
- **कांग्रेस ने 90 बार संविधान का दुरुपयोग कर लोकतंत्र की हत्या की।**
- **संविधान की भावना को समझकर उसकी बातों को नीचे तक पहुंचाएं पार्टी कार्यकर्ता।**
- **संवैधानिक अधिकार ही नहीं कर्तव्यों को भी आत्मसात करें।**
- **संविधान में शामिल हैं हमारी संस्कृति और मानवीय मूल्य।**
- **संविधान के प्रति जागरूकता न होने का फायदा उठाती रही कांग्रेस।**

प्रधानमंत्री मोदी जी का संकल्प है कि 2047 में जब हमारी आजादी को 100 साल पूरे होंगे, तब तक भारत एक विकसित देश बने।

आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से दुनिया का नंबर-1 देश बने। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि देश में हर जगह हमारा नेतृत्व हो। संविधान दिवस पर पार्टी कार्यकर्ता इसके लिए काम करने का संकल्प लें और संवैधानिक अधिकार ही नहीं कर्तव्यों को भी आत्मसात करें।

पूर्ववर्ती सरकारों ने संविधान में जो गलतियां की थीं, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी धीरे-धीरे उन्हें सुधार रहे हैं और संविधान को देश के अनुकूल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस ने हमेशा संविधान को किताब माना परंतु भाजपा ने ग्रंथ मानकर सम्मान किया है। कांग्रेस ने 90 बार संविधान का दुरुपयोग कर लोकतंत्र की हत्या की है। धारा-370 और 35 ए इस देश के अनुकूल नहीं थी, मोदी जी ने संवैधानिक तरीके से उन्हें हटा दिया। महिला सशक्तीकरण की सिर्फ बातें होती थीं, लेकिन मोदी जी ने नारीशक्ति वंदन अधिनियम में 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान करके उसे साकार कर दिया। हमारा देश संविधान के मार्गदर्शन में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी जी का संकल्प है कि 2047 में जब हमारी आजादी को 100 साल पूरे होंगे, तब तक भारत एक विकसित देश बने। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से दुनिया का नंबर-1 देश बने। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि देश में हर जगह हमारा नेतृत्व हो। संविधान दिवस पर पार्टी कार्यकर्ता इसके लिए काम करने का संकल्प लें और संवैधानिक अधिकार ही नहीं कर्तव्यों को भी आत्मसात करें। देश तेजी से आगे बढ़े, इसके लिए एकजुटता जरूरी है। इसलिए पार्टी कार्यकर्ता संविधान की मूल भावना को समझें और उसे समाज के प्रत्येक वर्ग तक प्रसारित करें।

सामान्यतः हम यही जानते हैं कि देश में संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ, लेकिन सिर्फ यही पर्याप्त नहीं है। संविधान दिवस कार्यक्रम के आयोजन को लेकर प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की सोच यह है कि प्रत्येक कार्यकर्ता, देश का हर व्यक्ति संविधान का अध्ययन करे, उसे जाने और इसकी भावना को समझे। संविधान के निर्माण की सोच 1946 में आई। इसके लिए 6 दिसंबर, 1946 को देश के प्रबुद्ध लोगों की एक समिति बनाई गई और संविधान निर्माण के प्रयास शुरू हुए। 26 नवंबर 1949 को संविधान तैयार हुआ और इसके प्रस्ताव को स्वीकार किया गया। इसके बाद 26 जनवरी 1950 को इसे लागू किया गया। इसके दशकों बाद 26 नवंबर 2015 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने संविधान दिवस मनाने की शुरुआत की। श्री जामवाल ने कहा कि संविधान समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद और प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर थे। उन्होंने दुनिया के

अच्छे संविधानों का अध्ययन किया, विभिन्न ग्रंथों, समाजों, संस्कृतियों, धर्म और पंथों का अध्ययन किया और यह समन्वय बनाने का प्रयास किया कि सभी अच्छी-अच्छी बातें संविधान में आ जाएं। संविधान के बारे में डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था कि यह सिर्फ कानून की किताब नहीं है और न ही सिर्फ वकीलों के मार्गदर्शन के लिए है। यह समाज के विकास तथा मानवता को न्याय और सम्मान दिलाने के लिए है। इसलिए जिस तरह से हम अपने धर्मग्रंथों का सम्मान करते हैं, देश को संविधान को भी वैसा ही सद्ग्रंथ मानते हुए उसका अध्ययन करें, अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जानें।

हमारा संविधान जब बनकर तैयार हुआ, तो उसमें हमारी सभ्यता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के बारे में विवरण शामिल नहीं था। समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि इन बातों का संविधान में शामिल होना आवश्यक है। इसके बाद इन बातों को कलाकृतियों के रूप में संविधान में शामिल किया गया। उन्होंने कहा कि संविधान के 22 खंड हैं और प्रत्येक खंड के प्रथम पेज पर एक-एक चित्र बना हुआ है। कहीं पर श्रीराम, कहीं हनुमान जी तो कहीं पर सिंधु घाटी सभ्यता के चित्र हैं। ये सभी चित्र हमारी सभ्यता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों को भलीभांति प्रदर्शित करते हैं।

देश के संविधान में अब तक 106 बार संशोधन हुए हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश कांग्रेस की सरकारों ने किए हैं। 90 बार कांग्रेस की सरकारों ने धारा 356 का दुरुपयोग कर चुनी हुई सरकारों को गिराया और लोकतंत्र की हत्या की। कांग्रेस की सरकारें संविधान की आत्मा से ये खिलवाड़ इसलिए कर सकीं, क्योंकि समाज में संविधान के प्रति जितनी जागरूकता होनी चाहिए, वो नहीं थी। इसके चलते कांग्रेस की इन कारगुजारियों के विरोध में जो आंदोलन खड़ा होना चाहिए था, वह नहीं हो सका।

अंग्रेजों के रास्ते पर चलते हुए कांग्रेस पार्टी आज भी जातिगत जनगणना की बात कर रही है, क्योंकि वह समाज को जाति, मत और पंथ के नाम पर तोड़कर राज करना चाहती है। लेकिन कांग्रेस के लोगों को यह ध्यान रखना चाहिए कि देश अब बदल चुका है। देश के लोग बदल चुके हैं। अब इस देश के लोग 'सर्वे भवन्तु सुखिनाः, सर्वे सन्तु निरामयः' के मंत्र को जपते हुए सभी के सुखी और संपन्न होने की कामना करते हैं।

आज का देश 'वसुधैव कुटुम्बकम' की बात करता है और सारी दुनिया को एक परिवार मानता है। इसलिए आज दुनिया के 162 देशों ने योग को अपनाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जहां भी जाते हैं, भारतीय संस्कृति के विचार को रखते हैं। चाहे वो विश्व के स्वास्थ्य की बात हो, या पर्यावरण की रक्षा की बात हो, सारी दुनिया मोदी जी की बातों को ध्यान से सुनती है। आज देश जिस तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है, भविष्य में भी इसी तरह आगे बढ़ता रहे इसके लिए जरूरी है कि हम संविधान का सम्मान करें, उसके प्रति समाज में जागरूकता पैदा करें। ▪

आपातकाल की घटनाओं की जाँच की मांग

संविधान दिवस पर लोकतंत्र सेनानी संघ ने नई दिल्ली में जंतर-मंतर पर कार्यक्रम किया। जिसमें लोकतंत्र सेनानी संघ ने संविधान की रक्षा एवं लोकतंत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की। लोकतंत्र सेनानी संघ ने 25-26 जून 1975 को जब देश पर आपातकाल थोपा गया था और जिससे संविधान की पवित्रता को ठेस पहुँची थी, लाखों लाख राजनैतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं नेताओं को बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद कर दिया गया था, उसकी कठोर शब्दों में उस समय की सरकार की निंदा की।

संविधान दिवस पर लोकतंत्र सेनानी संघ ने सरकार से मांग की है कि संविधान का हत्यारा कौन है? इसकी निष्पक्ष एवं पारदर्शी जाँच के लिए एक श्वेत पत्र जारी किया जाए एवं इसके लिए जाँच आयोग का गठन किया जाए। आपातकाल योद्धाओं को भारत सरकार की ओर से सम्मानित किया जाए जिससे युवा पीढ़ी को लोकतंत्र के प्रति सजग रहने की प्रेरणा मिले। संविधान के 42वें संशोधन को निरस्त किया जाये ताकि संविधान के मूल स्वरूप की रक्षा की जा सके। आपातकाल में की गई ज्यादतियों की जाँच के लिए भारत के पूर्व न्यायधीश न्यायमूर्ति श्री जे. सी. शाह की अध्यक्षता में गठित आयोग की रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाये, जिससे की तत्कालीन केन्द्र सरकार द्वारा संविधान और लोकतंत्र की हत्या के लिए किये गए कुप्रयासों को जनता के सामने लाया जा सके। ▪

नारी सशक्तिकरण में अग्रणी मध्यप्रदेश

नारी सशक्तिकरण के नए प्रतिमान गढ़ते मध्यप्रदेश ने सफलता की अनेकों कहानियां लिखकर राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान बनाई है। राज्य सरकार द्वारा किये जा रहे सतत् प्रयासों ने महिलाओं को स्वाबलंबी और आत्मनिर्भर बनाया है। मध्यप्रदेश देश का पहला ऐसा राज्य है, जिसने शासकीय सेवाओं में महिलाओं के आरक्षण को 33 प्रतिशत से बढ़ा कर 35 प्रतिशत किया है। साथ ही पंचायत एवं नगरीय निकाय निर्वाचन में 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था लागू की है। उद्यमी महिलाओं को राज्य सरकार 2 प्रतिशत ब्याज दर से ऋण भी उपलब्ध करा रही है। आजीविका मिशन के माध्यम से 40 लाख से अधिक महिलाओं को स्व-रोजगार से जोड़ा गया है।

राज्य सरकार के वादों और इरादों में कोई अंतर नहीं है। राज्य सरकार ने माता-बहनों और बेटियों के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए नित नई योजनाएं चलाई हैं, जिनके परिणाम उत्साह बढ़ाने वाले हैं। इन प्रयासों के चलते ही मध्यप्रदेश में महिलाएं अब मजबूर नहीं बल्कि मजबूत होकर उभरी हैं।

बेटियां वरदान कहीं जाने लगी हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के संकल्प से सिद्धि के मंत्र को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आत्मसात करते हुए लाड़ली बहनों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए दिन-रात एक कर दिए हैं। उनके सफल प्रयासों की सफलताओं के नवांकुर आज राज्य को अलंकृत कर रहे हैं। महिलाओं को मजबूर से मजबूत बनाने का अभियान आज उनके सशक्त और आत्मनिर्भरता की कहानी उनकी जुबानी कह रहा है। देश के कई राज्यों ने महिला सशक्तिकरण को लेकर मध्यप्रदेश द्वारा उठाए गए कदमों को सराहा है और अपने राज्यों में लागू भी किया है। लाड़ली बहना योजना के माध्यम से राज्य की लगभग एक करोड़ 29 लाख महिलाओं को मासिक 1250 रुपए की राशि सीधे उनके खाते में भेजी जा रही है। महिला सशक्तिकरण की यह अनूठी पहल अन्य राज्यों के लिये अनुकरणीय होकर क्रियान्वित की जा रही है। महाराष्ट्र, झारखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार जैसे राज्यों ने लाड़ली बहना योजना को मील का पत्थर मानते हुए अपनाया है।

मध्यप्रदेश की पहचान 20 वर्ष पहले तक एक कुपोषित राज्य के रूप में हुआ करती थी। अब यह बीते जमाने की बात हो गई है। मध्यप्रदेश ने कुपोषण के खिलाफ लंबी और चरणबद्ध लड़ाई लड़ते हुए कामयाबी हासिल की है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण -3 वर्ष (NFHS-x) 2005-06 और वर्ष 2019-21 के जारी सर्वेक्षण के तुलनात्मक आंकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि राज्य सरकार ने कुपोषण के खिलाफ कितनी ईमानदारी से जंग लड़ी और सफलताएं अर्जित की। वर्ष 2005-06 की बात करें तो उन दिनों 60 प्रतिशत बच्चे अपनी उम्र के अनुसार कम वजन के होते थे, लेकिन वर्ष 2020-21 में यह अंतर घटकर 33 प्रतिशत हो गया है। मध्यप्रदेश को कुपोषण के खिलाफ जंग में मिली इस सफलता के फलस्वरुप देश में तीसरा स्थान प्राप्त हो गया।

राज्य सरकार ने गर्भस्थ महिलाओं और शिशुओं की सुरक्षा के लिए वित्तीय संसाधनों की कोई कमी बाकी नहीं रखी। आंगनबाड़ी केन्द्रों का उन्नयन, रखरखाव एवं संचालन मध्यप्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में हमेशा से रहा है। इस दिशा में मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई मंत्रि-परिषद ने प्रदेश की 12 हजार 670 मिनी आंगनवाडी केन्द्रों को पूर्ण आंगनवाडी केन्द्र के रूप में उन्नयन किए जाने का निर्णय लिया है। इसके लिये पर्यवेक्षकों के 476 नवीन पद, 12 हजार 670 आंगनवाड़ी सहायिका सहित कुल 13 हजार 146 नवीन पद स्वीकृत किए गए है।

अटल बिहारी वाजपेई बाल आरोग्य एवं पोषण मिशन के अंतर्गत राज्य सरकार ने कई योजनाएं बनाई हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों में मंगल दिवस मनाए जाते हैं। मुख्यमंत्री बाल आरोग्य संवर्धन कार्यक्रम में एम्स के सहयोग से गंभीर कुपोषित बच्चों की देखभाल की जा रही है। माता एवं शिशु के चेहरे की मुस्कान के लिए राज्य सरकार स्वयं को न्यौछावर करने से भी पीछे नहीं है। राज्य की 73.40 लाख हितग्राही महिलाएं आधार से पंजीकृत हैं। राज्य में लिंगानुपात 927 से बढ़कर 956 हो गया है। बाल विवाह के मामलों में भी काफी कमी आई है।

''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' राज्य सरकार का ध्येय मंत्र रहा है और इस दिशा में बेटियों को स्कूल जाने के लिए साइकिल और कॉलेज के लिए स्कूटी वितरण का कार्य किया जा रहा है जिससे उनकी शिक्षा की सुविधा में कोई कठिनाई न आए। राज्य सरकार ने बेटियों को डॉक्टर, इंजीनियर, जेईई, जज, सीए आदि परीक्षाओं की तैयारी का खर्च उठाने का जिम्मा स्वयं ले रखा है ताकि माता-पिता को इसके बोझ तले ना दबना पड़े। कक्षा 12वीं के बाद स्नातक अथवा व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने पर बेटियों को राज्य सरकार 25 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि दे रही है। राज्य सरकार की यही मंशा रही है कि प्रदेश की हर बेटी अपने सपने पूरा कर सके।

महिला सुरक्षा को अपनी उच्च प्राथमिकता में रखते हुए राज्य सरकार हमेशा गंभीरता से कार्य कर रही है। आपातकालीन स्थिति या किसी भी तरह के संकट में उनकी सहायता के लिए राज्य के सभी 57 जिलों में वन स्टॉप केंद्र संचालित हैं। साथ ही 181 हेल्पलाइन नंबर की सेवा प्रदाय की जा रही है। मध्यप्रदेश में महिलाओं को सफल, आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के लिए मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना के माध्यम से कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

महिला सशक्तिकरण को लेकर राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों एवं अभियानों की यह सफलता कही जाएगी कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश को योजना प्रारंभ से वर्ष 2022-23 तक लगातार 5 साल राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। राज्य सरकार ने महिला अपराधों को रोकने तथा उसे प्रभावी बनाने के उद्देश्य से शौर्य दल बनाए हैं, जिसमें 22 लाख महिला एवं बालिकाएं सदस्य बनाई गई है। ▪

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय
सेवा सुशासन और जनकल्याण का अडिग संकल्प
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
नागरिक सुविधा और राज्य की प्रशासनिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए तकनीकी सुधार डिजिटलाइजेशन, ई-रिकॉर्ड के माध्यम से आम-जन के कार्यों को आसान बनाना और हितधारकों को सीधा लाभ देने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।
सरकार ने सुशासन और नागरिक सेवा को प्राथमिकता देकर हर वर्ग का लाभ सुनिश्चित किया है।
इन अभूतपूर्व प्रयासों से मध्यप्रदेश अब उन्नति के नए युग में प्रवेश कर रहा है।
• नामांतरण, बंटवारा जैसे विभिन्न राजस्व प्रकरणों के ऑनलाइन निराकरण के लिए सभी 55 जिलों में साइबर तहसील परियोजना लागू। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
• संपदा 2.0 रजिस्ट्री के लिए ई-पंजीयन एवं ई-स्टैम्पिंग की नवीन प्रणाली। दस्तावेजों के ऑनलाइन निष्पादन, डीड वेलिडेशन आदि कार्य होंगे आसान।
• मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभागीय समीक्षा बैठकों का आयोजन। कानून व्यवस्था के साथ बड़े पैमाने पर किए गए विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण।
• राजस्व महाअभियान के दोनों चरणों में 80 लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण।
• जिला, संभाग, तहसील आदि की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के लिए पृथक प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय।
• मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री अब स्वयं भरेंगे अपना इनकम टैक्स।
• प्रदेश की अंतरराज्यीय सीमाओं पर 1 जुलाई, 2024 से परिवहन जांच चौकियों के स्थान पर रोड सेफ्टी एंड इन्फोर्समेंट चेकिंग पॉइंट की व्यवस्था शुरू।
• वॉरंट और समन की तामील के लिए ई-तकनीक का उपयोग प्रारंभ। मध्यप्रदेश ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य है।
• प्रदेश के किसी भी जवान के शहीद होने पर दी जाने वाली सहायता राशि में से 50% शहीद की पत्नी और 50% माता-पिता को देने का निर्णय।
• 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर डीम्ड अनुज्ञा प्राप्त करने और 300 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों पर त्वरित अनुज्ञा प्रदान करने की व्यवस्था लागू।
• बालाघाट के कमकोदादर में हुई मुठभेड़ में नक्सलियों को धूल चटाने वाले 24 शासकीय पुलिस सेवकों का आउट ऑफ टर्न प्रमोशन।
• प्रदेश में थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण का कार्य तेजी से जारी।
• शासकीय सेवाओं में महिलाओं को अब 35% आरक्षण।
• भूतपूर्व सैनिकों को शासकीय नौकरियों में आरक्षण।
तहसील
D19173/24

प्रवासी भारतीयों ने विभिन्न देशों में अपनी पहचान बनाई

- हमारे देश में एनसीसी को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।
- विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग एक लाख नए युवाओं को राजनीति से जोड़ने का प्रयास है।
- यह देखकर खुशी हुई कि युवा वरिष्ठ नागरिकों को डिजिटल क्रांति का हिस्सा बनने में मदद कर रहे हैं।
- बच्चों में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए चेन्नई, हैदराबाद और बिहार में अभिनव प्रयास किए जा रहे हैं।
- प्रवासी भारतीयों ने विभिन्न देशों में अपनी पहचान बनाई है।
- लोथल में एक संग्रहालय विकसित किया जा रहा है, जो भारत की समृद्दी विरासत को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित है।
- #EkPedMaaKeNaam अभियान ने केवल 5 महीनों में 100 करोड़ पेड़ लगाने का मील का पत्थर पार कर लिया है।
- गौरैया को पुनर्जीवित करने के लिए अद्वितीय प्रयास किए जा रहे है।

विकसित भारत के निर्माण में युवाओं का रोल बहुत बड़ा है। युवा मन जब एकजुट होकर देश की आगे की यात्रा के लिए मंथन करते हैं, चिंतन करते हैं, तो निश्चित रूप से इसके ठोस रास्ते निकलते हैं।

आप जानते हैं 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर देश "युवा दिवस" मनाता है। अगले साल स्वामी विवेकानंद जी की 162 वीं जयंती है। इस बार इसे बहुत खास तरीके से मनाया जाएगा।

"मन की बात'', यानि देश के सामूहिक प्रयासों की बात, देश की उपलब्धियों की बात, जन-जन के सामर्थ्य की बात, 'मन की बात' यानि देश के युवा सपनों, देश के नागरिकों की आकांक्षाओं की बात। मैं पूरे महीने, 'मन की बात' का इंतजार करता रहता हूँ, ताकि, आपसे सीधा संवाद कर सकूँ । कितने ही सारे संदेश, कितने ही messages ! मेरा पूरा प्रयास रहता है कि ज्यादा- से-ज्यादा संदेश को पढ़ूँ, आपके सुझावों पर मंथन करूँ ।

आज बड़ा ही खास दिन है - आज NCC दिवस है। NCC का नाम सामने आते ही हमें स्कूल-कॉलेज के दिन याद आ जाते हैं। मैं स्वयं भी NCC Cadet रहा हूँ, इसलिए, पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इससे मिला अनुभव मेरे लिए अनमोल है। 'NCC' युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और सेवा की भावना पैदा करती है। आपने अपने आस-पास देखा होगा, जब भी कहीं कोई आपदा होती है, चाहे बाढ़ की स्थिति हो, कहीं भूकंप आया हो, कोई हादसा हुआ हो, वहाँ, मदद करने के लिए NCC के cadets जरूर मौजूद हो जाते है। आज देश में NCC को मजबूत करने के लिए लगातार काम हो रहा है। 2014 में करीब 14 लाख युवा NCC से जुड़े थे। अब 2024 में, 20 लाख से ज्यादा युवा NCC से जुड़े हैं। पहले के मुकाबले पाँच हजार और नए स्कूल-कॉलेजों में अब NCC की सुविधा हो गई है, और सबसे बड़ी बात, पहले NCC में girls cadets की संख्या करीब 25 प्रतिशत (percent)के आस-पास ही होती थी। अब NCC में girls cadets की संख्या करीब-करीब 40 प्रतिशत (percent) हो गई है। बॉर्डर किनारे रहने वाले युवाओं को ज्यादा से ज्यादा NCC से जोड़ने का अभियान भी लगातार जारी है। मैं युवाओं से आग्रह करूंगा कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में NCC से जुड़ें। आप देखिएगा आप किसी भी career में जाएं, NCC से आपके व्यक्तित्व निर्माण में बड़ी मदद मिलेगी।

विकसित भारत के निर्माण में युवाओं का रोल बहुत बड़ा है। युवा मन जब एकजुट होकर देश की आगे की यात्रा के लिए मंथन करते हैं, चिंतन करते हैं, तो निश्चित रूप से इसके ठोस रास्ते निकलते हैं। आप जानते हैं 12 जनवरी

को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर देश 'युवा दिवस' मनाता है। अगले साल स्वामी विवेकानंद जी की 162 वीं जयंती है। इस बार इसे बहुत खास तरीके से मनाया जाएगा। इस अवसर पर 11-12 जनवरी को दिल्ली के भारत मंडपम में युवा विचारों का महाकुंभ होने जा रहा है, और इस पहल का नाम है 'विकसित भारत Young Leaders Dialogue'। भारत-भर से करोड़ों युवा इसमें भाग लेंगे। गाँव, block, जिले, राज्य और वहाँ से निकलकर चुने हुए ऐसे दो हजार युवा भारत मंडपम में 'विकसित भारत Young Leaders Dialogue' के लिए जुटेंगे। आपको याद होगा, मैंने लाल किले की प्राचीर से ऐसे युवाओं से राजनीति में आने का आव्हान किया है, जिनके परिवार का कोई भी व्यक्ति और पूरे परिवार का political background नहीं है, ऐसे एक लाख युवाओं को, नए युवाओं को, राजनीति से जोड़ने के लिए देश में कई तरह के विशेष अभियान चलेंगे। 'विकसित भारत Young Leaders Dialogue' भी ऐसा ही एक प्रयास है। इसमें देश और विदेश से experts आएंगे। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हस्तियाँ भी रहेंगी। मैं भी इसमें ज्यादा-से-ज्यादा समय उपस्थित रहूँगा। युवाओं को सीधे हमारे सामने अपने ideas को रखने का अवसर मिलेगा। देश इन ideas को कैसे आगे लेकर जा सकता है? कैसे एक ठोस roadmap बन सकता है? इसका एक blueprint तैयार किया जाएगा, तो आप भी तैयार हो जाइए, जो भारत के भविष्य का निर्माण करने वाले हैं, जो देश की भावी पीढ़ी हैं, उनके लिए ये बहुत बड़ा मौका आ रहा है। मिलकर देश बनाएं, देश को विकसित बनाएं।

'मन की बात' में, हम अक्सर ऐसे युवाओं की चर्चा करते हैं। जो निस्वार्थ भाव से समाज के लिए काम कर रहे हैं ऐसे कितने ही युवा हैं जो लोगों की छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान निकालने में जुटे हैं। हम अपने आस-पास देखें तो कितने ही लोग दिख जाते है, जिन्हें, किसी ना किसी तरह की मदद चाहिए, कोई जानकारी चाहिए। मुझे ये जानकर अच्छा लगा कुछ युवाओं ने समूह बनाकर इस तरह की बात को भी address किया है जैसे लखनऊ के रहने वाले वीरेंद्र हैं, वो बुजुर्गों को Digital life certificate के काम में मदद करते हैं। नियमों के मुताबिक सभी Pensioners को साल में एक बार Life Certificate जमा कराना होता है। 2014 तक इसकी प्रक्रिया यह थी इसे बैंकों में जाकर बुजुर्ग को खुद जमा करना पड़ता था आप कल्पना कर सकते हैं कि इससे हमारे बुजुर्गों को कितनी असुविधा होती थी। अब ये व्यवस्था बदल चुकी है। अब Digital Life Certificate देने से चीजें बहुत ही सरल हो गई हैं, बुजुर्गों को बैंक नहीं जाना पड़ता। बुजुर्गों को Technology की वजह से कोई दिक्कत ना आए, इसमें, वीरेंद्र जैसे युवाओं की बड़ी भूमिका है। वो, अपने क्षेत्र के बुजुर्गों को इसके बारे में जागरूक करते रहते हैं। इतना ही नहीं वो बुजुर्गों को tech savvy भी बना रहे हैं ऐसे ही प्रयासों से आज Digital Life certificate पाने वालों की संख्या 80 लाख के आँकड़े को पार कर गई है। इनमें से दो लाख से ज्यादा ऐसे बुजुर्ग हैं, जिनकी आयु 80 के भी पार हो गई है।

कई शहरों में 'युवा' बुजुर्गों को Digital क्रांति में भागीदार बनाने के लिए भी आगे आ रहे हैं। भोपाल के महेश ने अपने मोहल्ले के कई बुजुर्गों को Mobile के माध्यम से Payment करना सिखाया है। इन बुजुर्गों के पास smart phone तो था, लेकिन, उसका सही उपयोग बताने वाला कोई नहीं था। बुजुर्गों को Digital arrest के खतरे से बचाने के लिए भी युवा आगे आए हैं। अहमदाबाद के राजीव, लोगों को Digital Arrest के खतरे से आगाह करते हैं। मैंने 'मन की बात' के पिछले episode में Digital Arrest की चर्चा की थी। इस तरह के अपराध के सबसे ज्यादा शिकार बुजुर्ग ही बनते हैं। ऐसे में हमारा दायित्व है कि हम उन्हें जागरूक बनाएं और cyber fraud से बचने में मदद करें। हमें बार-बार लोगों को समझाना होगा कि Digital Arrest नाम का सरकार में कोई भी प्रावधान नहीं है - ये सरासर झूठ, लोगों को फसाने का एक षड्यन्त्र है मुझे खुशी है कि हमारे युवा साथी इस काम में पूरी संवेदनशीलता से हिस्सा ले रहे हैं और दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं।

आजकल बच्चों की पढ़ाई को लेकर कई तरह के प्रयोग हो रहे हैं। कोशिश यही है कि हमारे बच्चों में creativity और बढ़े, किताबों के लिए उनमें प्रेम और बढ़े - कहते भी हैं 'किताबें' इंसान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं, और अब इस दोस्ती को मजबूत करने के लिए, Library से ज्यादा अच्छी जगह और क्या होगी। मैं चेन्नई का एक उदाहरण आपसे share करना चाहता हूं। यहां बच्चों के लिए एक ऐसी library तैयार की गई है, जो, creativity और learning का Hub बन चुकी है। इसे प्रकृत् अरिवगम् के नाम से जाना जाता है। इस library का idea, technology की दुनिया से जुड़े श्रीराम गोपालन जी की देन है। विदेश में अपने काम के दौरान वे latest technology की दुनिया से जुड़े रहे। लेकिन, वो, बच्चों में पढ़ने और सीखने की आदत विकसित करने के बारे में भी सोचते रहे। भारत लौटकर उन्होंने प्रकृत् अरिवगम् को तैयार किया। इसमें तीन हजार से अधिक किताबें हैं, जिन्हें पढ़ने के लिए बच्चों में होड़ लगी रहती है। किताबों के अलावा इस library में होने वाली कई तरह की activities भी बच्चों को लुभाती हैं। Story Telling session हो, Art Workshops हो, Memory Training Classes, Robotics Lesson या फिर Public Speaking, यहां, हर किसी के लिए कुछ-न-कुछ जरूर है, जो उन्हें पसंद आता है।

हैदराबाद में 'Food for Thought' Foundation ने भी कई शानदार libraries बनाई हैं। इनका भी प्रयास यही है कि बच्चों को ज्यादा-से-ज्यादा विषयों पर ठोस जानकारी के साथ पढ़ने के लिए किताबें मिलें। बिहार में गोपालगंज के 'Prayog Library' की चर्चा तो आसपास के कई शहरों में होने लगी है। इस library से करीब 12 गांवों के युवाओं को किताबें पढ़ने की सुविधा मिलने लगी है, साथ ही ये, library पढ़ाई में मदद करने वाली दूसरी जरूरी सुविधाएँ भी उपलब्ध करा रही है। कुछ libraries तो ऐसी हैं, जो, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में students के बहुत काम आ रही हैं। ये देखना वाकई बहुत सुखद है कि समाज को सशक्त बनाने में आज library का बेहतरीन उपयोग हो रहा है। आप भी किताबों से दोस्ती बढ़ाइए, और देखिए, कैसे आपके जीवन में बदलाव आता है।

भारत से हजारों किलोमीटर दूर, गयाना में भी, एक 'Mini भारत' बसता है। आज से लगभग 180 वर्ष पहले, गयाना में भारत के लोगों को, खेतों में मजदूरी के लिए, दूसरे कामों के लिए, ले जाया गया था। आज गयाना में भारतीय मूल के लोग राजनीति, व्यापार, शिक्षा और संस्कृति के हर क्षेत्र में गयाना का नेतृत्व कर रहे हैं। गयाना के राष्ट्रपति डॉ. इरफान अली भी भारतीय मूल के हैं, जो, अपनी भारतीय विरासत पर गर्व करते हैं। जब मैं गयाना में था, तभी, मेरे मन में एक विचार आया था - जो मैं 'मन की बात' में आपसे share कर रहा हूं। गयाना की तरह ही दुनिया के दर्जनों देशों में लाखों की संख्या में भारतीय हैं। दशकों पहले की 200-300 साल पहले की उनके पूर्वजों की अपनी कहानियां हैं। क्या आप ऐसी कहानियों को खोज सकते हैं कि किस तरह भारतीय प्रवासियों ने अलग-अलग देशों में अपनी पहचान बनाई! कैसे उन्होंने वहाँ की आजादी की लड़ाई के अंदर हिस्सा लिया! कैसे उन्होंने अपनी भारतीय विरासत को जीवित रखा? मैं चाहता हूं कि आप ऐसी सच्ची कहानियों को खोजें, और मेरे साथ share करें। आप इन कहानियों को NaMo App पर या MyGov

...OR EARTHQUAKE OR ANY ACCIDENT...

पर #IndianDiasporaStories के साथ भी share कर सकते हैं।

आपको ओमान में चल रहा एक extraordinary project भी बहुत दिलचस्प लगेगा। अनेकों भारतीय परिवार कई शताब्दियों से ओमान में रह रहे हैं। इनमें से ज्यादातर गुजरात के कच्छ से जाकर बसे हैं। इन लोगों ने व्यापार के महत्वपूर्ण link तैयार किए थे। आज भी उनके पास ओमानी नागरिकता है, लेकिन भारतीयता उनकी रग-रग में बसी है। ओमान में भारतीय दूतावास और National Archives of India के सहयोग से एक team ने इन परिवारों की history को preserve करने का काम शुरू किया है। इस अभियान के तहत अब तक हजारों documents जुटाए जा चुके हैं। इनमें diary, account book, ledgers, letters शामिल हैं। इनमें से कुछ दस्तावेज तो सन् 1838 के भी हैं। ये दस्तावेज, भावनाओं से भरे हुए हैं। बरसों पहले जब वो ओमान पहुंचे, तो उन्होंने किस प्रकार का जीवन जिया, किस तरह के सुख-दुख का सामना किया, और, ओमान के लोगों के साथ उनके संबंध कैसे आगे बढ़े - ये सब कुछ इन दस्तावेजों का हिस्सा है। 'Oral History Project' ये भी इस mission का एक महत्वपूर्ण आधार है। इस mission में वहां के वरिष्ठ लोगों ने अपने अनुभव साझा किए हैं। लोगों ने वहाँ अपने रहन-सहन से जुड़ी बातों को विस्तार से बताया है।

ऐसा ही एक 'Oral History Project' भारत में भी हो रहा है। इस project के तहत इतिहास प्रेमी देश के विभाजन के कालखंड में पीड़ितों के अनुभवों का संग्रह कर रहें हैं। अब देश में ऐसे लोगों की संख्या कम ही बची है, जिन्होंने, विभाजन की विभीषिका को देखा है। ऐसे में यह प्रयास और ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है।

जो देश, जो स्थान, अपने इतिहास को संजोकर रखता है, उसका भविष्य भी सुरक्षित रहता है। इसी सोच के साथ एक प्रयास हुआ है जिसमें गांवों के इतिहास को संजोने वाली एक Directory बनाई है। समुद्री यात्रा के भारत के पुरातन सामर्थ्य से जुड़े साक्ष्यों को सहेजने का भी अभियान देश में चल रहा है। इसी कड़ी में, लोथल में, एक बहुत बड़ा Museum भी बनाया जा रहा है, इसके अलावा, आपके संज्ञान में कोई manuscript हो, कोई ऐतिहासिक दस्तावेज हो, कोई हस्तलिखित प्रति हो तो उसे भी आप, National Archives of India की मदद से सहेज सकते हैं।

मुझे Slovakia में हो रहे ऐसे ही एक और प्रयास के बारे में पता चला है जो हमारी संस्कृति को संरक्षित करने और उसे आगे बढ़ाने से जुड़ा है। यहां पहली बार Slovak language में हमारे उपनिषदों का अनुवाद किया गया है। इन प्रयासों से भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रभाव का भी पता चलता है। हम सभी के लिए ये गर्व की बात है कि दुनिया-भर में ऐसे करोड़ों लोग हैं, जिनके हृदय में, भारत बसता है।

अब मैं आपसे देश की एक ऐसी उपलब्धि साझा करना चाहता हूं जिसे सुनकर आपको खुशी भी होगी और गौरव भी होगा, और अगर आपने नहीं किया है, तो शायद पछतावा भी होगा। कुछ महीने पहले हमने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान शुरू किया था। इस अभियान में देश-भर के लोगों ने बहुत उत्साह से हिस्सा लिया। मुझे ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि इस अभियान ने सौ करोड़ पेड़ लगाने का अहम पड़ाव पार कर लिया है। सौ करोड़ पेड़, वो भी, सिर्फ पाँच महीनों में - ये हमारे देशवासियों के अथक प्रयासों से ही संभव हुआ है। इससे जुड़ी एक और बात जानकर आपको गर्व होगा। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान अब दुनिया के दूसरे देशों में भी फैल रहा है। जब मैं गयाना में था, तो वहां भी, इस अभियान का साक्षी बना। वहां मेरे साथ गयाना के राष्ट्रपति डॉ. इरफान अली, उनकी पत्नी की माता जी, और परिवार के बाकी सदस्य, 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में शामिल हुए।

देश के अलग-अलग हिस्सों में ये अभियान लगातार चल रहा है। मध्य प्रदेश के इंदौर में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत, पेड़ लगाने का record बना है - यहां 24 घंटे में 12 लाख से ज्यादा पेड़ लगाए गए। इस अभियान की वजह से इंदौर की Revati Hills के बंजर इलाके, अब, green zone में बदल जाएंगे। राजस्थान के जैसलमेर में इस अभियान के द्वारा एक अनोखा record बना - यहां महिलाओं की एक टीम ने एक घंटे में 25 हजार पेड़ लगाए। माताओं ने मां के नाम पेड़ लगाया और दूसरों को भी प्रेरित किया। यहां एक ही जगह पर पाँच हजार से ज्यादा लोगों ने मिलकर पेड़ लगाए - ये भी अपने आप में एक रिकॉर्ड है। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत कई सामाजिक संस्थाएँ स्थानीय जरूरतों के हिसाब से पेड़ लगा रही हैं। उनका प्रयास है कि जहां पेड़ लगाए जाएँ वहाँ पर्यावरण के अनुकूल पूरा Eco System Develop हो। इसलिए ये संस्थाएँ कहीं औषधीय पौधे लगा रहीं हैं, तो कहीं, चिड़ियों का बसेरा बनाने के लिए पेड़ लगा रहीं हैं । बिहार में 'JEEViKA Self Help Group' की महिलाओं ने 75 लाख पेड़ लगाने का अभियान चला रहीं हैं। इन महिलाओं का focus फल वाले पेड़ों पर है, जिससे आने वाले समय में आय भी की जा सके।

इस अभियान से जुड़कर कोई भी व्यक्ति अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगा सकता है। अगर माँ साथ है तो उन्हें साथ लेकर आप पेड़ लगा सकते हैं, नहीं तो उनकी तस्वीर साथ में लेकर आप इस अभियान का हिस्सा बन सकते हैं। पेड़ के साथ आप अपनी Selfie भी mygov.in पर पोस्ट कर सकते हैं। माँ, हम सबके लिए जो करती है हम उनका ऋण कभी नहीं चुका सकते, लेकिन, एक पेड़ माँ के नाम लगाकर हम उनकी उपस्थिति को हमेशा के लिए जीवंत बना सकते हैं ।

आप सभी लोगों ने बचपन में गौरेया या Sparrow को अपने घर की छत पर, पेड़ों पर चहकते हुए जरूर देखा होगा । गौरेया को तमिल और मलयालम में कुरुवी, तेलुगु में पिच्चुका

और कन्नड़ा में गुब्बी के नाम से जाना जाता है। हर भाषा, संस्कृति में, गौरेया को लेकर किस्से-कहानी सुनाए जाते हैं। हमारे आसपास Biodiversity को बनाए रखने में गौरेया का एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन, आज शहरों में बड़ी मुश्किल से गौरेया दिखती है। बढ़ते शहरीकरण की वजह से गौरेया हमसे दूर चली गई है। आज की पीढ़ी के ऐसे बहुत से बच्चे हैं, जिन्होंने गौरेया को सिर्फ तस्वीरों या वीडियो में देखा है। ऐसे बच्चों के जीवन में इस प्यारी पक्षी की वापसी के लिए कुछ अनोखे प्रयास हो रहे हैं। चेन्नई के कूडुगल ट्रस्ट ने गौरेया की आबादी बढ़ाने के लिए स्कूल के बच्चों को अपने अभियान में शामिल किया है। संस्थान के लोग स्कूलों में जाकर बच्चों को बताते हैं कि गौरेया रोजमर्रा के जीवन में कितनी महत्वपूर्ण है। ये संस्थान बच्चों को गौरेया का घोंसला बनाने की training देते हैं। इसके लिए संस्थान के लोगों ने बच्चों को लकड़ी का एक छोटा सा घर बनाना सिखाया। इसमें गौरेया के रहने, खाने का इंतजाम किया।

ये ऐसे घर होते हैं जिन्हें किसी भी इमारत की बाहरी दीवार पर या पेड़ पर लगाया जा सकता है। बच्चों ने इस अभियान में उत्साह के साथ हिस्सा लिया और गौरेया के लिए बड़ी संख्या में घोंसला बनाना शुरू कर दिया। पिछले चार वर्षों में संस्था ने गौरेया के लिए ऐसे दस हजार घोंसले तैयार किए हैं। कूडुगल ट्रस्ट की इस पहल से आसपास के इलाकों में गौरेया की आबादी बढ़नी शुरू हो गई है। आप भी अपने आसपास ऐसे प्रयास करेंगे तो निश्चित तौर पर गौरेया फिर से हमारे जीवन का हिस्सा बन जाएगी।

कर्नाटका के मैसुरू की एक संस्था ने बच्चों के लिए 'Early Bird' नाम का अभियान शुरू किया है। ये संस्था बच्चों को पक्षियों के बारे में बताने के लिए खास तरह की library चलाती है। इतना ही नहीं, बच्चों में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भाव पैदा करने के लिए 'Nature Education Kit' तैयार किया है। इस Kit में बच्चों के लिए Story Book, Games, Activity Sheets और jig-saw puzzles हैं। ये संस्था शहर के बच्चों को गांवों में लेकर जाती है और उन्हें पक्षियों के बारे में बताती हैं। इस संस्था के प्रयासों की वजह से बच्चे पक्षियों की अनेक प्रजातियों को पहचानने लगे हैं। 'मन की बात' के श्रोता भी इस तरह के प्रयास से बच्चों में अपने आसपास को देखने, समझने का अलग नजरिया विकसित कर सकते हैं।

आपने देखा होगा, जैसे ही कोई कहता है 'सरकारी दफ्तर' तो आपके मन में फाइलों के ढेर की तस्वीर बन जाती है। आपने फिल्मों में भी ऐसा ही कुछ देखा होगा। सरकारी दफ्तरों में इन फाइलों के ढेर पर कितने ही मजाक बनते रहते हैं, कितनी ही कहानियां लिखी जा चुकी हैं। बरसों-बरस तक ये फाइलें Office में पड़े-पड़े धूल से भर जाती थीं, वहां, गंदगी होने लगती थी - ऐसी दशकों पुरानी फाइलों और Scrap को हटाने के लिए एक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। आपको ये जानकर खुशी होगी कि सरकारी विभागों में इस अभियान के अद्भुत परिणाम सामने आए हैं। साफ-सफाई से दफ्तरों में काफी जगह खाली हो गई है। इससे दफ्तर में काम करने वालों में एक Ownership का भाव भी आया है। अपने काम करने की जगह को स्वच्छ रखने की गंभीरता भी उनमें आई है।

आपने अक्सर बड़े-बुजुर्गों को ये कहते सुना होगा, कि जहां स्वच्छता होती है, वहां, लक्ष्मी जी का वास होता है। हमारे यहाँ 'कचरे से कंचन'का विचार बहुत पुराना है। देश के कई हिस्सों में 'युवा' बेकार समझी जाने वाली चीजों को लेकर, कचरे से कंचन बना रहे हैं। तरह-तरह के innovation कर रहे हैं। इससे वो पैसे कमा रहे हैं, रोजगार के साधन विकसित कर रहे हैं। ये युवा अपने प्रयासों से sustainable lifestyle को भी बढ़ावा दे रहे हैं। मुंबई की दो बेटियों का ये प्रयास, वाकई बहुत प्रेरक है। अक्षरा और प्रकृति नाम की ये दो बेटियाँ, कतरन से फैशन के सामान बना रही हैं। आप भी जानते हैं कपड़ों की कटाई-सिलाई के दौरान जो कतरन निकलती है, इसे बेकार समझकर फेंक दिया जाता है। अक्षरा और प्रकृति की Team उन्हीं कपड़ों के कचरे को Fashion Product में बदलती है। कतरन से बनी टोपियां, Bag हाथों-हाथ बिक भी रही हैं।

साफ-सफाई को लेकर UP के कानपुर में भी अच्छी पहल हो रही है। यहाँ कुछ लोग रोज सुबह Morning Walk पर निकलते हैं और गंगा के घाटों पर फैले Plastic और अन्य कचरे को उठा लेते है। इस समूह को 'Kanpur Ploggers Group' नाम दिया गया है। इस मुहिम की शुरुआत कुछ दोस्तों ने मिलकर की थी। धीरे-धीरे ये जन भागीदारी का बड़ा अभियान बन गया। शहर के कई लोग इसके साथ जुड़ गए हैं। इसके सदस्य, अब, दुकानों और घरों से भी कचरा उठाने लगे हैं। इस कचरे से Recycle Plant में tree guard तैयार किए जाते हैं, यानि, इस Group के लोग कचरे से बने tree guard से पौधों की सुरक्षा भी करते हैं।

छोटे-छोटे प्रयासों से कैसी बड़ी सफलता मिलती है, इसका एक उदाहरण असम की इतिशा भी है। इतिशा की पढ़ाई-लिखाई दिल्ली और पुणे में हुई है। इतिशा corporate दुनिया की चमक-दमक छोड़कर अरुणाचल की सांगती घाटी को साफ बनाने में जुटी हैं। पर्यटकों की वजह से वहां काफी plastic waste जमा होने लगा था। वहां की नदी जो कभी साफ थी वो plastic waste की वजह से प्रदूषित हो गई थी। इसे साफ करने के लिए इतिशा स्थानीय लोगों के साथ मिलकर काम कर रही है। उनके group के लोग वहां आने वाले tourist को जागरूक करते हैं और plastic waste को collect करने के लिए पूरी घाटी में बांस से बने कूड़ेदान लगाते हैं।

ऐसे प्रयासों से भारत के स्वच्छता अभियान को गति मिलती है। ये निरंतर चलते रहने वाला अभियान है। आपके आस-पास भी ऐसा जरूर होता ही होगा। आप मुझे ऐसे प्रयासों के बारे में जरूर लिखते रहिए। ▪

प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर

डॉ.भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्व वर्ण रंजित था। गरीबी में जन्म लेकर जीवन भर अस्पृश्यता का अपमान कारक बिल्ला माथे पर लेकर सैकड़ों कष्टों से झुलसते हुए वे आगे बढ़े। फिर भी समस्याओं के सामने न झुककर हर पग पर लड़ते-जूझते मेधावी प्राध्यापक, यथार्थवादी शिक्षाशास्त्री, उच्च कोटि के अर्थशास्त्रज्ञ, समर्थ न्यायवादी, गंभीर ग्रंथलेखक, दलित-पीड़ित-शोषितों के सामाजिक तिरस्कार जनित दुःख को दूर कराने वाले संघर्षकर्ता, अभिनव स्मृतिकार और दूरदर्शी समाज सुधारक के रूप में इन प्रशस्य गुणों से भरा था उनका जीवन। अपने जीवन में उनकी निज साधनाजन्य उपलब्धियों के शिखरों में से ये कुछ हैं। व्यक्ति में निःस्वार्थ महत्वाकांक्षा और उसे पाने के लिए अथक परिश्रम एवं आवश्यक पसीना बहाने योग्य मानसिक शारीरिक स्थिरता हो तो उसका जीवन किस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से उन्नति की ओर बढ़ सकता है महोन्नति तक पहुँच सकता है इसके लिए एक अंबेडकर का उदाहरण ही पर्याप्त है। अपने सामने रखे, प्रांजल ध्येयवाद के कारण उन्होंने अपार कार्य सामर्थ्य, विलक्षण नैतिक पौरूष प्राप्त किया था। एक ओर पांडित्यपूर्ण चिंतन और दूसरी ओर ईमानदारी से भरी क्रियाशीलतायें दोनों तानेबाने के धागे बनकर उनके जीवन में बुन चुके थे। इसीलिए वे स्वयं ही नहीं, अपने समूचे समुदाय को ऊपर उठाने में सफल हुए।

कुछ समकालीन नेताओं और विविधपत्र दुष्टताओं के खिलाफ विद्रोह के प्रतीक थे। डॉ. अंबेडकर के प्रति विचार यहाँ प्रस्तुत हैं जिनसे उनके हिमगिरिशिखर जैसे उन्नत व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं: 'वे बहुत प्रखर न्यायिक प्रज्ञा रखने वाले, सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। अपार विद्वत्ता संपन्न, स्वाभिमानी और निःसंकोच होने के साथ ही सहृदय व्यक्ति थे। उचित ढंग से और निष्कलंक मन से संपर्क करने वालों के प्रति वे स्नेहशील थे।'

(चक्रवर्ती राजगोपालचारी, भारत के प्रथम गवर्नर जनरल)

'संविधान रचना समिति के लिए अंबेडकर को अध्यक्ष नियुक्त करने का अत्यंत उचित निर्णय किया समिति ने। शायद इससे अच्छा निर्णय और कोई हो नहीं सकता था। उन्होंने अपने कर्तव्य या दायित्व को न केवल दक्षता से पूरा किया, अपितु उसको अधिक ऊँची गुणवत्ता प्रदान की। इस पद के समर्थ निर्वाह से यह सिद्ध हो चुका है उनका चुनाव सभी प्रकार से सुयोग्य है।'

'अंबेडकर का व्यक्तित्व, विद्वता, संगठन कौशल और प्रभावी नेतृत्व जैसे गुणों का संगम है। इसीलिए वे देश के आधार स्तंभ माने गये हैं। अस्पृश्यता के निवारण में तथा लाखों अस्पृश्यों में आत्मविश्वास और आत्मशक्ति जगाने में उनको जितनी सफलता मिली है वह सचमुच भारत के लिए उनकी बड़ी सेवा है। उनका कार्य बहुत समय तक रहने वाला है। वह स्वदेशाभिमान तथा मानवता से प्रेरित कार्य है। अस्पृश्य कहलाने वाली जाति में अंबेडकर जैसे महान व्यक्ति का जन्म लेना ही अस्पृश्यों के मन की निराश भावना को मिटा देने वाली बात थी। अंबेडकर के जीवन से प्रेरित होकर ये लोग अन्य लोगों की प्रगति के साथ साथ ऊपर उठने का साहसपूर्ण प्रयत्न करने में पीछे नहीं रहेंगे। अंबेडकर के व्यक्तित्व को, उनके कार्य को मैं आदरांजलि समर्पित करता हूँ। उनकी दीर्घायु, आरोग्य और सफल जीवन के लिए शुभ कामना समर्पित करता हूँ।'

(क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर द्वारा डॉ. अंबेडकर के पचासवें जन्मदिन पर प्रेषित भावपूर्ण संदेश)

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के 73वें जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक प.पू. श्री गुरूजी ने लिखा पूर्ण पत्र यहाँ दिया जा रहा है:

दिनांक 09.08.1963

आपने चाहा कि मैं एक लेख लिख भेजूँ। इस प्रकार आपने मुझे बहुत गौरवान्वित किया। इस प्रकार के सम्मान के लिए मैं बिल्कुल योग्य नहीं हूँ, क्योंकि लेख लिखने का अभ्यास मुझे नहीं है। फिर भी वंदनीय डॉ. अंबेडकर की पुण्य स्मृति में श्रद्धा समर्पित करना अपना पवित्र कर्तव्य मानता हूँ। भारत के संदेश की गर्जना से सारे संसार को चकित कर देने वाला स्वामी विवेकानंद का एक संदेश है: दीन, दरिद्र, दुर्बल, अज्ञान में तड़फड़ाने वाले, भारतवासी मेरे लिए देव समान हैं। उनकी सेवा में लगना, उनकी चेतना जगाना, उनके जीवन को सुखमय बनाकर उन्नत करना यही सचमुच में भगवान की सेवा है। अपने समाज की 'छुओ मत' वाली असत् प्रवृत्ति को देखकर उससे उदित सभी प्रकार की रूढ़ियों पर स्वामी जी ने कठोर प्रहार किया है। नये समाज की रचना के लिए उन्होंने सारे संसार को जागृति का आव्हान किया। उस पुकार को अपने प्रत्यक्ष आचरण में उतारने, आवेश के साथ सामने आये डॉ. अंबेडकर। राजनीतिक तथा सामाजिक अवहेलनाओं से क्रुद्ध अंबेडकर अलग अलग शब्दों में अलग अलग मार्गों से इस कार्य में जुट गये। इस समाज में अज्ञान, अपमान और दुःख से पीड़ित एक बड़े महत्वपूर्ण भाग को आत्मसम्मान के साथ खड़ा करने का उनका कार्य असाधारण है। राष्ट्र के लिए यह उनका बहुत बड़ा उपकार है। उनका ऋण चुकाना सरल कार्य नहीं।

'श्री शंकराचार्य की जैसी कुशाग्र बुद्धि और भगवान बुद्ध जैसे परम कारूण्य पूर्ण उदार हृदय के संगम से ही भारत का उद्धार संभव है।' यह स्वामी विवेकानंद का कहना था। बौद्धमत स्वीकार कर उसे पुनः गतिशील बनाते हुए डॉ. अंबेडकर ने स्वामी जी के बताये मार्ग पर एक महत्वपूर्ण कदम रखा है। अंबेडकर की तीक्ष्ण चिकित्सक बुद्धि को तत्वज्ञान की दृष्टि से बौद्धमत में कुछ कमियाँ भी दिखाई देती थी। उनके सुधार पर प्रस्ताव भी उन्होंने किया। लेकिन जीवन में समानता, शुचित्व, आपस में यथार्थ पूर्ण स्नेहशीलता जैसे उसके गुणों के कारण मानव सेवा का विशुद्ध प्रेम जागृत होता है। बौद्ध मत पर श्रद्धा से उत्पन्न होने वाली यह प्रेरणा हमारे राष्ट्र के समस्त मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। मेरा विचार है कि इस तत्व को पहचान कर ही डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध मत को स्वीकारा होगा। भूतकाल में समाज सुधार के लिए भगवान बुद्ध ने प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना की थी, समाज से कटकर अलग होने के लिए नहीं। वर्तमान काल में भी डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने समाज की भलाई के लिए, धर्म के हित के लिए, हमारे चिरंजीवी समाज को दोष मुक्त शुद्ध बनाने की दृष्टि से काम किया, समाज से कटकर अन्य पंथ बनाने की दृष्टि से नहीं। अतएव डॉ. अंबेडकर भगवान बुद्ध के उत्तराधिकारी हैं, इस स्वरूप से उनकी पवित्र स्मृति में अपना हार्दिक प्रणाम अर्पित करता हूँ। ▪

धर्मो रक्षति रक्षितः

पं. मदन मोहन मालवीय

सृष्टि के आदि से जब से हिन्दू जाति, आर्य-सन्तानों का कुछ इतिहास हमको मिलता है, उस समय से आज तक सब समय में और सब दशाओं में सतयुग, त्रेता और द्वापर में और कलियुग में भी, यदि हिन्दू जाति ने कोई सबसे अधिक विशेषता दिखलायी है तो वह उसका धर्म का प्रेम, धर्म का हठ है। वेदों मे और उपनिषदों में, स्मृतियों में और धर्मशास्त्रों में, इतिहासों में और पुराणों में और अन्ततः काव्यों में और नाटकों में, पृथ्वीराज के रासों में और आल्हा-ऊदल की कथा में, टाड के राजस्थान में और विदेशीय यात्रियों के लेखों में, यदि आर्य सन्तान का कोई एक गुण सबसे अधिक जाज्वल्यमान पाया गया है तो वह उसका धर्म का प्रेम है। राजा हरिश्चन्द्र ने राज्य त्याग दिया, अपने को बेच दिया, केवल धर्म की रक्षा के लिए। दशरथजी ने अपने प्राण से अधिक प्रिय पुत्र युवराज रामचन्द्र को वन भेज दिया, और उनके विरह में अपना प्राण त्याग दिया-केवल धर्म के लिए। भगवान रामचन्द्र ने राज्य-सिंहासन की संपदा और सुख को छोड़कर वन-वन में घूमने का व्रत धारण किया, केवल अपने धर्म के लिए। जब वे वन को जाने लगे, तब माता कौशल्या ने हृदय के दुःख को रोक कर उनका जो मंगल मनाया उस समय कहा है-

यं पालयसि धर्मं त्वं प्रीत्या च नियमेन च।
स वै राधवशार्दूल धर्मस्त्वामभिरक्षतु।।

अर्थात् हे रघुकुलशार्दूल! जिस धर्म का तुम प्रीति और नियम के साथ पालन करके वन को जाते हो वही धर्म तुम्हारी रक्षा करे।

पतिव्रता-शिरोमणि सीता ने धर्म ही का पालन करने में अयोध्या का सब सुख छोड़कर वनचारिणी का वेश धारण कर अपने प्राणपति के साथ वन की यात्रा की थी और सोने की लंका के स्वामी तीन लोक को कंपाने वाले प्रचंड प्रतापशाली रावण ने उनको जब अनेक प्रकार का लालच और डर दिखाया, तब धर्म ही का प्रेम था, जिसके कारण पतिव्रताओं की सिरमौर सीता ने उस पापी के सहस्रों प्रलोभनों का तिरस्कार कर उससे कहा-

श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता
सत नहिं टरई।

द्वापर में भगवान कृष्णचन्द्र ने धर्म की रक्षा के लिए ही कंस और उसके साथी राक्षसगणों को

'संसार में ज्ञान प्राप्त करके, जो दूसरों को ज्ञान नहीं देता, उसके ऊपर ज्ञानरुपी ईश्वर अप्रसन्न से दिखलायी देते हैं।'

मारा था और उत्तरा के मरे हुए पुत्र के जिलाने के समय ही कहा था-

यथा कंसश्च केशी व धर्मेण निहतौ मया।
तेन सत्येन बालोऽद्य पुनः संजीवतादयम्।।

अर्थात् जैसे मैंने धर्मपूर्वक कंस और केशी को मारा था उसी सत्य के बल से आज यह बालक जी उठे। भगवान कृष्णचन्द्र के विषय में अधिक विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रसिद्ध वचन '**यतो धर्मस्ततो कृष्णः, यतो कृष्णास्ततो जयः**' उनके समस्त उपदेश और कार्यों को संक्षेप में प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त धर्मराज युधिष्ठिर और उनके चार धर्मचारी भाईयों का पवित्र चरित्र, आदि से अन्त तक, बड़े संकट में भी धर्म पालन करने की कथा है। उनका समस्त आचरण धर्मात्मा युधिष्ठिर के इस एक वचन से भली भाँति प्रकाशित हो जाता है कि -

मम प्रतिज्ञां च निबोध सत्यां,
वृणे धर्ममममृताज्जीविताच्च।
राज्यं च पुत्राश्च यशो धनं च,
सर्वं न सत्यस्य कलामुपैति।।

अर्थात् 'मेरी प्रतिज्ञा को सत्य जानो। मैं धर्म को जीवन से और मोक्ष से भी अधिक अच्छा समझता हूं। राज्य और पुत्र एवं यश और धन-ये सत्य की एक कला के बराबर भी नहीं है।'

आधुनिक समय में जब से इस देश पर यवनों का आक्रमण प्रारम्भ हुआ, तब से भी लाखों आर्य सन्तानों और आर्य ललनाओं ने प्राण दे करके अपने धर्म की रक्षा की है और अपने रूधिर से भारतभूमि पर ये अमिट वाक्य लिख दिया है -

प्राण जाहिं बरु धर्म न जाहीं।।

चित्तौड़ और राजपूताना की अनन्य वीरभूमि में जहां आर्य ललनाओं ने चिता लगाकर अपने सुकुमार शरीर को जला देना स्वीकार किया, किन्तु अपने धर्म से डिगने का विचार तक मन में नहीं आने दिया और जिस भूमि में सहस्त्रों वीर क्षत्रीय शत्रु से लड़ते-लड़ते मर गए और उनको माथा नहीं नवाया, उसी के वीरों का यह सिंहनाद था-

जो हठ राखै धर्म की, तेहि राखै करतार।

न केवल राजपूताना में अपितु भारतवर्ष के सभी छोटे और बड़े, ऊँचे और नीचे विभागों में हिमालय के ऊंचे शिखरों पर और समुद्र के तट पर अनन्त आर्य सन्तान कठिन से कठिन समय में भी प्राण को पण कर अपने आर्य धर्म की रक्षा करते चले आए हैं। औरंगजेब के समय में क्या-क्या अत्याचार हिन्दुओं पर नहीं हुए, कितने द्विजों के माथे का तिलक नहीं मिटा दिया गया, कितनों के जनेऊ नहीं उतार लिये गए, किन्तु उस समय भी करोड़ों हिन्दू अपने धर्म से नहीं डिगे।

इतिहास के पढ़ने वालों को उस समय के विकराल अत्याचारों की कुछ आभामात्र दिखायी देती है। छत्रपति शिवाजी का नाम यदि आर्य सन्तान आज आदर, धन्यवाद और हर्ष के साथ स्मरण करती है, तो इसका कारण उस अत्याचार की पराकाष्ठा है जो हिन्दुओं को औरंगजेब के समय में सहना पड़ता था और जिससे शिवाजी ने उनको छुड़ा कर फिर आर्य धर्म को सनाथ और सजीव किया था। लेख के विस्तार करने की आवश्यकता नहीं। सब विदेशी लेखक भी इस बात को स्वीकार करते आए हैं कि इतिहास के आदि से हिन्दू समाज एक धर्मप्रधान समाज चला आया है। आर्य सन्तान धर्म को सबसे बड़ा धन मानते आए हैं। राज्य खो दिया है, धन-धान्य त्याग दिया है, बन्धुओं का बिछोह सह लिया है, और प्राण को भी त्याग दिया है, किन्तु सामर्थ्य रहते अपने धर्म का त्याग नहीं किया और कैसे करें? भगवान श्रीकृष्ण गीता में कह गए हैं-

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

और वेदव्यास जी ने सब वेदों और पुराणों के

उपदेशों के निचोड़ को महाभारत के अंत के इस उपदेश में भर दिया है-

न जातु कामान्न भयान्न लोभात्,
धर्मं त्येजेज्जीवितस्यापि हे तो:।
धर्मों नित्य: सुख दु:खे त्वनित्ये,
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्व नित्य:।।

अर्थात्- 'धर्म को कभी काम के वश होकर, भय से अथवा किसी प्रकार के लोभ में पड़कर भी कभी न छोड़े। प्राण बचाने के लिए भी न छोड़े। धर्म अविनाशी है, सुख और दुख आते-जाते हैं, जीव अविनाशी है, जिन कारणों से वह देह को धारण करता है, वे अनित्य हैं।'

हमको विश्वास है कि यदि आर्य सन्तानों को उनके धर्म का उपदेश होता जायेगा, तो जब से पृथ्वीमंडल पर वेद और उपनिषद्, स्मृति और पुराण, रामायण और महाभारत स्थित है। जब तक गंगा और यमुना, सिंधु और गोदावरी और अन्य पुण्यतोया नदियां भारतभूमि पर प्रवाहित हैं, जब तक मरीचिमालि भगवान सूर्य तथा सुधा-रश्मि चन्द्रमा ईश्वर की महिमा का स्मरण दिलाते भारत के गगनमंडल में उदित होते हैं- तब तक भारत सन्तान अपने पवित्र पुरातन परम उत्कृष्ट धर्म का कदापि त्याग न करेंगे। किन्तु हमारा हृदय इस बात को सोचकर दुःखित होता है कि जिस धर्म को हमारे पूर्वजों ने, हमारे भाइयों ने और हमारी बहिनों ने अनेक प्रकार की यातनाएं सहने पर, अनेक प्रकार का लालच दिखाये जाने पर भी नहीं छोड़ा, उस धर्म की महिमा न जानने के कारण आज हम उसकी उपेक्षा करने लगे हैं।

हम उस लोभ के वश में हो रहे हैं, जिसको भीष्म पितामहजी ने सब पापों का मूल कहा है और जिसके विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है-

यशो यशस्विनां शुद्धं श्लाघ्या ये
गुणिनां गुणा:।
लोभ: स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्रो रूपमिवेप्सितम्।।

अर्थात्- 'जिस प्रकार सुन्दर रूप को श्वेत कुष्ठ का एक छोटा सा भी दाग नष्ट कर देता है, उसी प्रकार थोड़ा सा लोभ भी यशस्वियों के शुद्ध यश को और गुणवानों के प्रशंसनीय गुणों को नष्ट कर देता है।'

जो लोग अज्ञान के कारण अपने धर्म से विमुख हो जाते हैं, उनके विषय में समस्त हिन्दू अपराधी हैं, जो अपने धर्म का ज्ञान अपने भाइयों में नहीं फैलाते।

ज्ञानं प्राप्यं तु संसारे य: परेभ्यो न यच्छति।
ज्ञानरूपी हरिस्तस्मै अप्रसन्नो हि लक्ष्यते।।

अर्थात्- 'संसार में ज्ञान प्राप्त करके, जो दूसरों को ज्ञान नहीं देता, उसके ऊपर ज्ञानरूपी ईश्वर अप्रसन्न से दिखलायी देते हैं।' ▪

प्रस्तुती - पं. सलिल मालवीय

सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक उद्बोधन

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है।

पं. नेहरू ने राष्ट्रपति के सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के लिए जाने का जोरदार विरोध किया। लेकिन राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने उनके विरोध की ओर ध्यान नहीं दिया और अपने वचन का पालन किया। इस अवसर पर दिया गया उनका भाषण भारत के किसी राष्ट्रपति द्वारा पंथनिरपेक्षवाद पर दिए गए सबसे महत्वपूर्ण भाषणों में एक है। सृष्टि अथवा ब्रम्हांड की रचना करने वाले ब्रह्मा भी भगवान विष्णु की नाभि में रहते हैं। इसी तरह मनुष्य के हृदय में भी सृजन-शक्ति और धार्मिक आस्था का वास होता है, जो संसार के बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों, बड़ी-बड़ी सेनाओं और सम्राटों की शक्ति से भी बढ़कर है। प्राचीन युग में भारत सोने और चांदी का भंडार था। सदियों पूर्व दुनिया के कुल सोने का अधिकांश भाग भारत के मंदिरों में था। मेरा विश्वास है कि सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार उस दिन पूर्ण होगा जब इस आधारशिला पर न केवल एक भव्य मूर्ति खड़ी होगी, बल्कि उसके साथ ही भारत की वास्तविक समृद्धि का महल भी खड़ा होगा, वह समृद्धि जिसका सोमनाथ का यह प्राचीन मंदिर प्रतीक रहा है।

सोमनाथ मंदिर को राष्ट्रीय श्रद्धा व विश्वास का प्रतीक बताते हुए राजेन्द्र बाबू ने आगे कहा था- अपने ध्वंसावशेषों से ही पुनः पुनः खड़ा होने वाला सोमनाथ का यह मंदिर पुकार-पुकार कर दुनिया से कह रहा है कि जिसके प्रति लोगों के हृदय में अगाध श्रद्धा है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। आज जो कुछ हम कर रहे हैं, वह इतिहास के परिमार्जन के लिए नहीं है। हमारा एकमात्र उद्देश्य अपने परंपरागत मूल्यों, आदर्शों और श्रद्धा के प्रति अपने लगाव को एक बार फिर दोहराना है, जिन पर आदिकाल से ही हमारे धर्म और धार्मिक विश्वास की इमारत खड़ी हुई है। यहाँ यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार की पाकिस्तान ने कड़ी निंदा की थी। इस संबंध में भारत सरकार की निंदा के लिए कराची में एक जनसभा भी आयोजित की गई थी।

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है। वह अपनी सांस्कृतिक विरासत भी खो बैठता है, और यही सांस्कृतिक विरासत भारत की आत्मा है। महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शुभाशीष से भारत सरकार की ओर से सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार करके सरदार पटेल और के.एम. मुंशी ने यह गौरवपूर्ण प्रमाण दे दिया कि भारत में वह दृढ़ इच्छा शक्ति है, जिसके बल पर वह धर्मांधता से प्रेरित विदेशी आक्रमणों के इतिहास को मिटाकर अपने खोए हुए सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्राप्त कर सकता है, और अपना मस्तक ऊँचा करके खड़ा रह सकता है। इस संदर्भ में देखा जाए तो सोमनाथ मंदिर भारत भर में स्थित सैकड़ों-हजारों मंदिरों से सचमुच बिल्कुल अलग और अनोखा है। ▪

ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है : लालकृष्ण आडवाणी

बहुतों को पं. दीनदयाल जी को प्रत्यक्ष देखने का शायद अवसर न मिला हो, लेकिन दीनदयाल जी की संगठन में जो भूमिका थी और जिसके कारण संगठन इतना व्यापक और मजबूत बना है, वो गुण अगर किसी में कूट-कूट कर भरे हुए थे, तो कह सकते हैं वह कुशाभाऊ ठाकरे में थे। खासकर स्वयं के बारे में कभी न सोचने की प्रवृत्ति, केवल संगठन कार्य के बारे में सोचना और उसी के लिए समर्पित जीवन बिताना। वो प्रकृति से इतने सरल थे कि पिछले दिनों में उनके देहान्त के बाद जो बातें छपी, वो पढ़-पढ़ के लोग हैरान होते हैं कि जिस पार्टी की केन्द्र में सत्ता हो और उस पार्टी का प्रमुख व्यक्ति जो उसके अध्यक्ष रहे, वह कहां रहते थे? उनके कमरे को कोई जाकर देखेगा, जहां वो रहते थे, अकल्पनीय है। इतना सादगीपूर्ण जीवन। कभी कामना नहीं की कि मैं किसी अच्छे स्थान पर रहूँ। एक बार रहना पड़ा था अध्यक्ष के नाते, लेकिन जिस दिन अध्यक्षता पूर्ण हुई उसके अगले दिन वापस आकर भाजपा मुख्यालय स्थित कमरे में रहने लगे। मुझे रायपुर या भोपाल में प्रवास के दौरान ऐसा महसूस होता है कि उनके जीवन की एक बहुत बड़ी साज पूरी हुई। हममें से जिन लोगों ने देश भर में भाजपा का कार्य देखा है, वे इस बात को स्वीकार करेंगे कि बाकी प्रदेशों में पार्टी का उतार-चढ़ाव होता रहा होगा, कभी सत्ता पक्ष बना, कभी विपक्ष बना लेकिन अगर कोई ऐसा एक क्षेत्र है कि जहां पर पार्टी का विस्तार और पार्टी का कार्य सर्वाधिक मजबूत हुआ और सबसे गहरे रूप में पार्टी का प्रभाव बढ़ा तो वो शायद मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए हजारों कार्यकर्ताओं ने परिश्रम किया है, लेकिन अगर किसी एक व्यक्ति को उसका सबसे अधिक श्रेय दिया जा सकता है तो वह कुशाभाऊ ठाकरे को है। जिन्होंने जनसंघ की स्थापना से लेकर भाजपा के इस सशक्त रूप को प्राप्त करने में अथक परिश्रम किया। पहले उन्होंने जनसंघ के मध्य भारत प्रान्त के संगठन मंत्री के रूप में कार्य किया। आगे चलकर व्यवस्था थोड़ी बदली तो संगठन मंत्री के स्थान पर मंत्री का दायित्व संभाला और फिर आगे चलकर के उनको केन्द्र में जवाबदारी मिली और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने।

भले ही दायित्व उनका राष्ट्रीय अध्यक्ष का था, लेकिन प्रकृति से वे संगठन मंत्री की भूमिका में ही रहे। सन् 1951 में जब डॉ. मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की, तब जो कल्पना की थी कि एक ऐसा व्यक्ति कि जिसकी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा न हो, केवल संगठन की चिंता करने वाला, कार्यकर्ताओं को जोड़ने वाला, कार्यकर्ताओं की देखभाल करने वाला हो, जिसका नाम पत्र-पत्रिकाओं में न छपे यानि मीडिया से दूर और एक मजबूत संगठन के नींव का पत्थर बनकर चले। ऐसे दायित्व वाले संगठन मंत्री हो और कुशाभाऊ इन आदर्शों की साकार प्रतिमूर्ति साबित हुए। ठीक है कि वो हमसे अलग हो गए, बिछुड़ गए। उन्हें उनके मन पर इस बात का संतोष झलकता था कि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में, जहां उन्होंने गांव-गांव घूमकर संगठन को मजबूत बनाया, वहां पर इस प्रकार पार्टी का वर्चस्व बना है और उनके सहयोगी वहां के मुख्यमंत्री बनकर गए हैं, लेकिन ऐसा भी अनुभव होता था कि मानो उनके जीवन की सार्थकता पूरी हो गई। कुशाभाऊ कह रहे थे कि 'अब तो मेरा कार्य पूरा हो गया है। मैं वापस जा रहा हूँ' और उसके बाद मुझे याद है बिना डाक्टर की अनुमति से अशोक रोड आ गए। उनके सहयोगियों से सूचना मिली कि वो भोजन भी नहीं कर रहे हैं, दवाई भी नहीं ले रहे है और वो कह रहे है कि मेरा तो समय अब आ गया जाने का। मुझे जाने की आप छुट्टी दीजिए। मुझे जबर्दस्ती भोजन मत करवाइए। मुझे जबर्दस्ती दवाई मत दीजिए और मैं जब मिलने गया था, वो दृश्य मैं भूल नहीं सकता हूं कि किस प्रकार से एक व्यक्ति, जो कष्ट में है, लेकिन इसकी चिंता नहीं, मन ही मन में उनको लगता है कि मुझे ईश्वर ने जिस कार्य के लिए भेजा, वह अपने सामर्थ्य से पूरा किया और अब मेरे जाने का समय हो गया। इस परिस्थिति में हम लोगों ने प्रयास कर उन्हें हॉस्पिटल में भेजा, लेकिन उन्होंने अपने जीवन का अंत मान लिया था और चले गए। हां, इतना जरूर है कि बाकी महापुरूषों के बारे में लोगों से सुना जाता है, इस महापुरूष के जीवन को मुझे स्वयं देखने का सौभाग्य मिला। वे सदैव प्रेरणापुंज बने रहेंगे। राजनीतिक जीवन में एक आदर्श कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए उसके लिए एक उदाहरण है कुशाभाऊ।

आज भारतीय जनता पार्टी के ऊपर देश की इतनी बड़ी जवाबदारी है। उसका आधार राष्ट्रवाद की विचारधारा है। मुझे याद है कि 1989 में जब भाजपा को बड़ी सफलता मिली थी और लोकसभा में हमारे 86 सांसद निर्वाचित हुए थे। जनता दल सबसे बड़ी पार्टी उभरकर आई थी और उसी दल के प्रधानमंत्री बने, तब एक पत्रिका ने 1989 के चुनाव पर टिप्पणी करते हुए छापा था और उसका शीर्षक था- Winner comes to come. माने जो विजयी दल है वो दूसरे नम्बर पर आया है। उन्होंने जनता दल को विजयी नहीं माना। भारतीय जनता पार्टी को विजयी मानकर कहा कि It has come Second और विश्लेषण करते हुए कहा कि इसके कारण लोग बड़े विश्लेषण करते है कि इस कारण हुआ, इस कारण हुआ लेकिन उसका विश्लेषण था, कांग्रेस पार्टी की जो हार हुई है, उसका कारण है कि उनके लोगों का पतन हुआ है, वे भ्रष्टाचार में फंसे है। भाजपा के बारे में यह धारणा बनी कि उसमें पतन नहीं हुआ है, ये लोग सात्विक है, अच्छे है, समाज की सेवा के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते है। इस पार्टी को जनता ने आगे बढ़ाया। यह विश्लेषण एक विदेशी अखबार ने किया। तब से लेकर कार्यकर्ताओ के मन में यह बात पैदा करने की कोशिश की जाती है कि हमारी विचारधारा बड़ी ताकत है, लेकिन उसके पीछे असली ताकत हमारे कुशाभाऊ जैसे आदर्श कार्यकर्ता हैं। जिसके आचरण और व्यवहार के कारण पार्टी की विश्वसनीयता बढ़ी है और इस विश्वसनीयता को जितनी मात्रा में हम सबल बनायेंगे, उतनी ही मात्रा में पार्टी आगे बढ़ती जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने वरिष्ठ सहयोगी और हमारे लिए आदर्श बने हुए आदरणीय कुशाभाऊ को नमन् करता हूं। ▪

मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस

बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था- "यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।"

परमपूज्य बालासाहब देवरस का जन्म 11 दिसम्बर 1915, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी वि. संवत 1972 को नागपुर के इतवारी क्षेत्र के देवरस बाड़े में हुआ। देवरस परिवार मूलतः बालाघाट म.प्र. का रहने वाला था। बालाघाट जिले के कारंजा नामक स्थान में उनकी कृषि थी। यह लांजी तहसील में है। बालासाहब पाँच भाई थे। इनका स्थान भाईयों में चौथे क्रम पर था। उनकी तीन बहनें थीं। 1927 में बालासाहब प. पू. डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के सम्पर्क में आए। यहीं से उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश हुआ। 1925 में संघ प्रारंभ हुआ था। अतः यह कहना उचित होगा कि बालासाहब प्रारंभ से ही संघ के स्वयंसेवक थे।

1931 में बालासाहब ने न्यू इंग्लिश हाईस्कूल नागपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1932 में डॉ. हेडगेवार ने उन्हें इतवारी शाखा प्रारंभ करने का दायित्व सौंपा। 1935 में उन्होंने मारेस महाविद्यालय नागपुर से संस्कृत एवं दर्शन शास्त्र में स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1937 में एल.एल.बी. मैरिट में उत्तीर्ण की। उसी वर्ष उन्हें नगर कार्यवाह की जिम्मेदारी सौंपी गई। अपने निजी खर्च की व्यवस्था हेतु अनाथ विद्यार्थी-गृह नागपुर में शिक्षक की नौकरी शुरु की। इस बीच पुणे के संघ प्रशिक्षण वर्ग में मुख्य शिक्षक के दायित्व का भी संपादन किया। 1939 में वे कलकत्ता में प्रचारक बन कर गए।

1940 में प.पू. डॉ. हेडगेवार जी का निधन हो गया। उनके बाद परम पूज्यनीय गुरुजी को सरसंघचालक का दायित्व सौंपा गया। 1946-47 में बाला साहब को सह-सरकार्यवाह का अखिल भारतीय दायित्व सौंपा गया। 1948 में महात्मा गाँधी जी की हत्या का मिथ्या आरोप लगाकर संघ पर प्रथम प्रतिबंध लगाया गया। इस सिलसिले में बालासाहब जी चार मास तक कारागार में रहे। प्रतिबंध उठवाने के लिए राजकीय नेताओं से भेंट वार्तालाप करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

1949 में प.पू. गुरुजी ने उन्हें नागपुर से तरुण भारत के संपादन तथा प्रकाशन की विशेष जिम्मेदारी सौंपी। 1965 में माननीय भैयाजी दाणी के देहावसान के बाद इनको सरकार्यवाह का दायित्व सौंपा गया जिसका 1973 तक उन्होंने सफलता पूर्वक निर्वहन किया।

1973 में प.पू. गुरुजी के स्वर्गवास के उपरान्त बालासाहब ने संघ के सरसंघचालक पद का दायित्व संभाला। संगठन की दृष्टि से यह सर्वोत्तम दायित्व था। परम पूज्य गुरुजी पूर्व में यह उद्घोषणा मा. दादा गोरवाडकर जी के सम्मुख कर गए थे कि बाला साहब अपने संघ के भावी सरसंघचालक हैं। 21 वर्ष तक बालासाहब ने सरसंघचालक के दायित्व का अत्यंत कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। इस अवधि में अनेक आनुषांगिक कार्यों के रूप में संघ कार्य का विस्तार हुआ। 1975 में संघ पर आपातकाल के कारण दोबारा प्रतिबंध लगा। 1977 में यह प्रतिबंध उठा। 1992 में संघ पर तीसरा प्रतिबंध लगा जो एक साल बाद उठा। 11 मार्च 1994 को बालासाहब ने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण सरसंघचालक के पद से निवृत्ति की घोषणा की। 17 जून 1996 रात्रि 8 बजकर 10 मिनट पर, पुणे के रूबी हाल क्लीनिक नाम के प्रसिद्ध चिकित्सालय में इनकी इहलीला समाप्त हो गई। 18 जून 1996 को सायंकाल को नागपुर के गंगाघाट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

प.पू. बालासाहब एक मौन कर्मसाधक थे। किसी भी समस्या पर शीघ्र एवं अचूक निर्णय की उनकी क्षमता असाधारण थी। व्यवस्थापन में कुशलता, अनुभव, समृद्धता, गहन चिंतन उनके व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण गुण थे। उनका ध्यान सैद्धान्तिक की बजाय व्यवहार्य बातों पर अधिक रहता था। भारतीय जन समाज ने समाज के इस मौन साधक को उनकी सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में अनेक बार सम्मानित किया। 01 अगस्त 1991 को उन्हें लोकमान्य तिलक सम्मान से, अक्टूबर 2 को नागपुर के विश्व हिन्दू परिषद् के संत सम्मेलन में 'यति सम्राट की उपाधि से', 1994 में जीजामाता प्रतिष्ठान की ओर से जीजामाता पुरस्कार से तथा 1996 में स्वातंत्र्यवीर सावरकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-''यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।'' सामाजिक समरसता के लिए प्रत्येक विद्यालय उपेक्षित बस्तियों में एक संस्कार केन्द्र चलाए, यह उनकी बड़ी आंकाक्षा थी। उनके व्यक्तित्व में आदर्शवादिता एवं व्यवहारिकता का बहुत ही संतुलित समन्वय एवं मेल था। उनका पूरा जीवन भारतीय संस्कृति एंव हिन्दुत्व की रक्षा के लिए समर्पित रहा। संघ को बालासाहब की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने संघ के तत्वज्ञान को, समाज कार्य के लिए व्यवहार रूप में रूपान्तरित किया। वे हमेशा स्वयंसेवकों को संघ के तत्वज्ञान को अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करते रहते थे। संगीत, साहित्य एवं अध्यात्म से उनका गहरा लगाव था। उन्हें श्रीमद्भागवद्गीता एंव महाकवि कालिदास का मेघदूत पूरी तरह कंठस्थ था। वीर सावरकर जी की कविताएं भी उन्हें बहुत प्रिय थी। विशेषकर उनकी लिखी स्वातंत्रदेवता की आरती 'ज्योस्तुते श्री महन्मंगले' को वे अक्सर सुनना पसन्द करते थे। उनके देहान्त पर रांची एक्सप्रेस, रांची बिहार ने अपने संपादकीय में लिखा था- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख के रूप मे, बालासाहब ने अपने लगभग दो दशकों के कार्यकाल के दौरान न केवल लाखों लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया बल्कि भारतीयता के गंध में, रचे-बसे नए भारत के निर्माण की राह भी दिखलाई। वे मानते थे कि सेवा भाव से ही समाज की विभिन्न इकाइयों का दिल जीता जा सकता है और उन्हें आपस में जोड़कर, अन्ततः राष्ट्रचेतना का विकास किया जा सकता है।

प.पू. बालासाहब देवरस सांस्कृतिक एकता के प्रबल समर्थक थे और इस अर्थ में वे एक सामाजिक अभियन्ता के रूप में, नए भारत के नव निर्माण के लिए एक-एक ईंट जोड़ते रहे। संघ का बीजारोपण यदि डॉक्टर हेडगेवार ने किया तो प.पू. गुरुजी ने उसे पुष्पित और पल्लवित किया और उसे अपार विस्तार माननीय बालासाहब देवरस ने दिया। आधुनिक भारतीय इतिहास उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उल्लेख के बिना अपूर्ण है। ▪

भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था

भारतीय संस्कृति में भौतिक विकास के लिए उतना ही स्थान है, जितना आध्यात्मिक विकास के लिए। हमारे अपने आर्थिक मूल्य हैं, अपनी अर्थव्यवस्था है। उस अर्थव्यवस्था का देश और काल दोनों से ही संबंध है। इसलिए हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात आज सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने अर्थ का है। सामाजिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम उसके आर्थिक पहलू पर भी विचार करें। हमारे आर्थिक मूल्य क्या हैं और जीवन के किन मूल्यों के आधार पर हम समाज को सुख, श्री और समृद्धि से संपन्न कर सकते हैं- इन प्रश्नों पर भी विचार करना आवश्यक है, क्योंकि भारतीय संस्कृति में हमारे आर्थिक और भौतिक जीवन के विकास की भी समुचित व्यवस्था की गई है। जो यह बात सोचते हैं कि भारतीय संस्कृति तो केवल अध्यात्मवाद पर ही जोर देती है तथा भौतिक उन्नति को उसमें कोई स्थान नहीं, उनकी यह धारणा बिल्कुल ही निर्मूल है। भारतीय संस्कृति में भौतिक विकास के लिए उतना ही स्थान है, जितना आध्यात्मिक विकास के लिए। हमारे अपने आर्थिक मूल्य हैं, अपनी अर्थव्यवस्था है। उस अर्थव्यवस्था का देश और काल दोनों से ही संबंध है। इसलिए हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

राष्ट्रधर्म

आज युग की दृष्टि से हम काफी आगे बढ़ गए हैं। हमारे भौतिक साधनों का भी विकास हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय समानता की बात भी हम कहते हैं। परंतु तथ्य फिर भी कुछ और है। प्रत्येक राष्ट्र के भिन्न-भिन्न स्तर हैं। वे अपने राष्ट्रीय हित की दृष्टि से ही विचार करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र के आर्थिक और भौतिक साधन भी भिन्न-भिन्न हैं। अतः हम अंतर्राष्ट्रीय समानता के आधार पर युगधर्म की बात कहकर राष्ट्रधर्म को भुला नहीं सकते।

मानसिक वृत्तियां और आर्थिक प्रयत्न

एक बात और, आर्थिक पहलू पर विचार करते समय लोग मानसिक प्रवृत्तियों पर विचार नहीं करते, जबकि हमारे आर्थिक प्रयत्नों पर मानसिक प्रवृत्तियों का विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। मानसिक प्रवृत्तियां सांस्कृतिक जीवन से प्रभावित होती हैं। अतः हमारे आर्थिक प्रयत्नों पर संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव रहता है। हमारी संस्कृति में भी हमारे आर्थिक प्रयास किस आधार पर चलें, इस बात की स्पष्ट व्यवस्था है, भौतिक विकास के लिए उसमें समुचित स्थान है।

आर्थिक विकास को स्थान

हमारे धर्म में पग-पग पर इहलोक और परलोक बनाने की बात कही गई है। इसलिए हमने लक्ष्मी को देवी स्वरूपा माना है, उसमें देवत्व की स्थापना की है। इसलिए हम उसे काम्य और भोग्य भाव से न देखकर पूज्य और श्रद्धा भाव से देखते हैं। 'वंदेमातरम्' में भी जब हम भारतमाता की वंदना करते हैं, सबसे पहले उसका 'सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्' वाला रूप ही हमारे सामने आता है, अर्थात (प्रथम हम उसकी भौतिक श्रीसमृद्धि का ही विचार करते हैं, उसके अन्य रूपों की कल्पना तो बाद में ही की जाती है। अतः भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की बात कहकर हम यह तो कह ही नहीं सकते कि इस संस्कृति में केवल अध्यात्म और ब्रह्म पर ही विचार किया जाता है तथा मौलिक विकास को पूर्ण रूप से उपेक्षित किया जाता है। अब जब भौतिक विकास की बात को हमारी संस्कृति प्रतिपादित करती है तो उसके लिए उसकी समुचित व्यवस्था भी की गई है। हमारा अपना एक आर्थिक दर्शन है, उसके आधार पर हमारे मनीषियों ने आर्थिक व्यवस्थाओं का निर्माण किया है। उन व्यवस्थाओं में भिन्नता मिल सकती है, क्योंकि मनु महाराज ने यदि अभिनवीकरण का बहिष्कार किया है तो कौटिल्य ने उसका प्रतिपादन, परंतु दोनों का दर्शन फिर भी एक है। अतः हम उसके व्यावहारिक पहलू पर विचार न कर दार्शनिक पहलू पर ही विचार करें। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए जैसा कि पूर्व में भी कहा जा चुका है, हमारे यहां युगधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों की अलग-अलग बात कही गई है, अर्थात युग और देश की परिस्थिति के अनुसार ही हम अपनी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करें।

संपत्ति का अधिकार

अब हमारे सामने दूसरा प्रश्न यह उठता है कि समाज में संपत्ति पर किसका अधिकार हो। कुछ लोग यह नारा लगाते हैं कि 'कमाने वाला खाएगा'। एक दृष्टि यह ठीक भी है, क्योंकि यह मनुष्य की प्रकृति है। अर्थशास्त्र इसी का प्रतिपादन करता है। परंतु मानव और समाज कल्याण के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है, उसके लिए स्वयं कर्म करके, उसके फल को स्वेच्छा से प्रसन्नता पूर्वक दूसरे को अर्पण कर देने के भाव का आदर्श भी आवश्यक है। यही संस्कृति है, परंतु इस प्रकार की संस्कृति आज व्यवहार में कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती और प्रकृति का केवल नारा भर लगाया जाता है। व्यवहार में आज इन दोनों से भिन्न एक तीसरी चीज ही सामने है-विकृति अर्थात कर्म तो कोई करे कमाए कोई, और खाए कोई अन्य। यह जबरदस्ती ही आज चारों ओर दिखाई देती है। यही विकृति है। परंतु भारतीय संस्कृति प्रकृति से भी ऊपर उस परम आदर्श पर बल देती है, जिसको गीता के कर्म के सिद्धांत में व्यक्त किया गया है-अर्थात फल की भावना से रहित होकर कर्म करो और उससे अर्जित फल को भगवतार्पण कर दो। भगवान अर्थात समाज। ईश्वर का प्रत्यक्ष और विराट् स्वरूप आज समाज ही है। वही विराट पुरुष है-यही मानकर हम चलें और अपने समस्त कर्मों के फल हम समाज को अर्पण कर दें।

हमारी समाज कल्पना

अब जब समाज की बात उठती है तो उसके विषय में भी हमारी कल्पना स्पष्ट हो जानी आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के अनुसार समाज के बहुत से रूप हैं। रूस के अनुसार उसका 'स्टेट' रूप में कभी प्रयोग नहीं होता और न उसमें रूस की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीयकरण को ही महत्व दिया जाता है। भारतीय समाज रचना में व्यक्ति अर्थात् व्यष्टि को प्रमुख स्थान दिया गया है। व्यष्टि से ही समष्टि का निर्माण होता है। हम समाज में व्यक्ति और परिवार से लेकर ग्राम, राष्ट्र और अखिल विश्व तक की कल्पना करते हैं। इसलिए जो कुछ हम उत्पन्न करें, उसे संपूर्ण राष्ट्र के हित में व्यय कर दें। राष्ट्र ही हमारे कर्म की प्रेरणा का स्रोत रहे। यही भावना भारतीय संस्कृति के आर्थिक रूप का मूल आधार है। इसी आधार पर हम समाज को सुख, श्री और समृद्धि से संपन्न बना सकते हैं और यह तभी संभव है जब हम भारतवर्ष को कर्मभूमि मानकर चलें, भोगभूमि नहीं। जहां भोग की भावना आ जाती है, वहां परिश्रम और कर्म चाहे स्वयं ही क्यों न किया जाए एक पूंजीवादी व्यवस्था का निर्माण हो जाता है, वह हमें मान्य नहीं, क्योंकि 'प्रकृति' होते हुए भी वहां 'जंगल का कानून' होता है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रधान होता है तथा समाज और राष्ट्र का सामूहिक हित गौण पड़ जाता है। वहां फिर ठीक वितरण नहीं हो पाता और समाज के सामूहिक विकास का मार्ग सिमटकर कुछ लोगों की पकड़ में चला जाता है। अतः राष्ट्र की चिंता को प्रधान मानकर हम अपनी 'प्रकृत' अवस्था से भी ऊपर उठकर 'संस्कृत' अवस्था को प्राप्त हों। जहां त्याग ही सब कुछ है और उसी में परम आनंद है। व्यावहारिक रूप में यदि हम इस प्रकार न्यूनतम वेतन कल्पना लेकर चलें तो फिर हमें इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि कर्म का परिश्रम यदि हम समाज को अर्पण कर देंगे तो हमारी चिंता कौन करेगा। तब समाज हमारी चिंता करेगा, क्योंकि हम समाज के अंग हैं और समाज का जब सामूहिक विकास होगा तो कोई कारण नहीं कि हमारा विकास न हो। ▪

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संविधान दिवस पर लंदन में डॉ.भीमराव अंबेडकर को श्रध्दा सुमन अर्पित किए।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी प्रदेश कार्यालय में आयोजित विजय उत्सव में शामिल हुए।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने गोवर्धन पूजा में गौ पूजन किया।

- प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी बूथ अध्यक्षों के सम्मान के लिए निकाली गई रथ यात्रा में शामिल हुए।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शौर्य वीरा कार्यक्रम में शस्त्रकला प्रदर्शन किया।

- श्री विष्णुदत्त शर्मा जी एवं प्रदेश सह प्रभारी श्री सतीश उपाध्याय जी ने जगतगुरू स्वामी श्री राघवाचार्य जी महाराज से श्रीमदभागवत कथा का श्रवण किया।

- मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने लंदन के स्वामीनारायण मंदिर में पूजा अर्चना की।

- प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने मैहर शारदा माता मंदिर में दर्शन व पूजन किया।

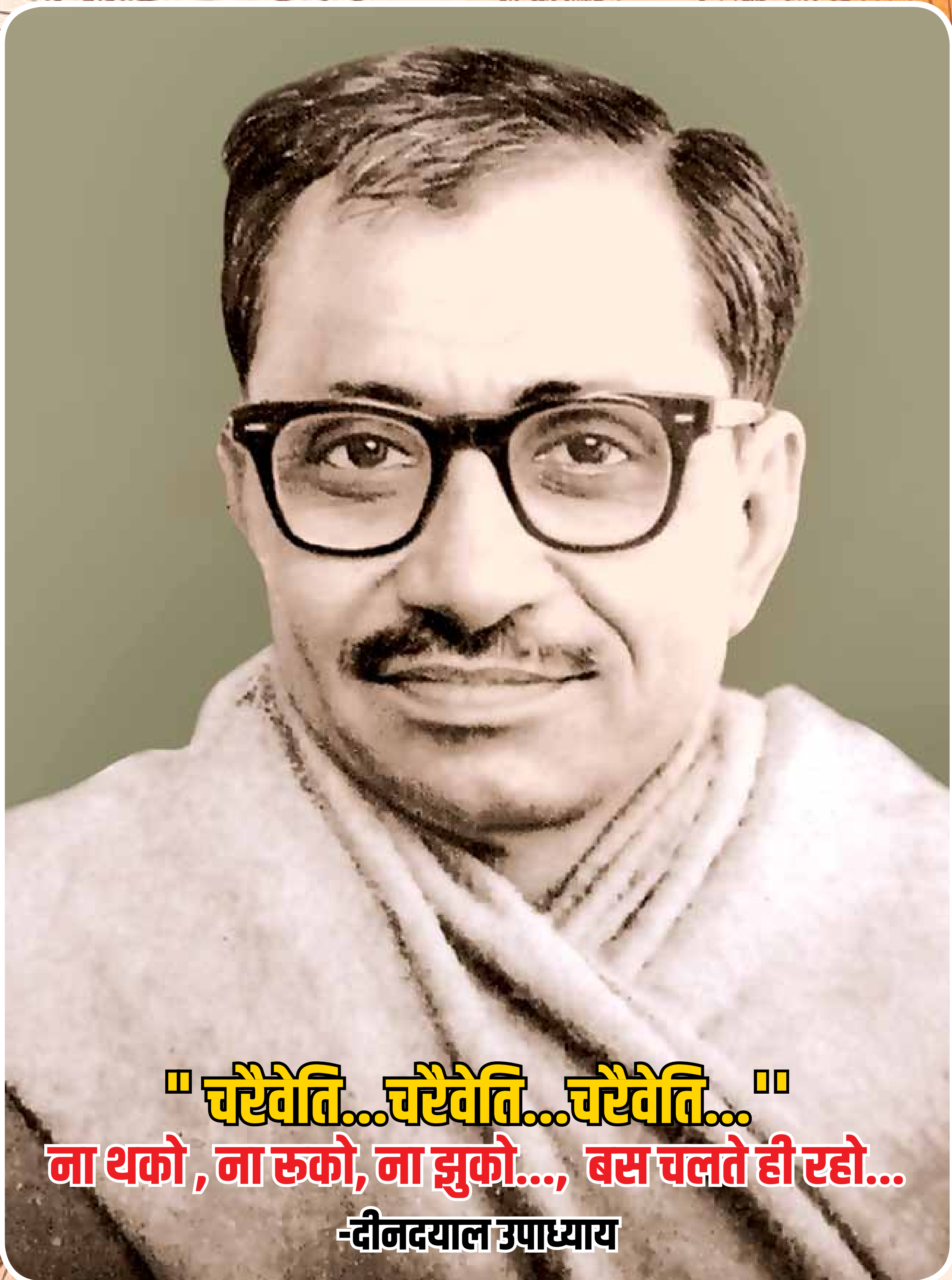
" चरैवेति...चरैवेति...चरैवेति... ''
ना थको , ना रूको, ना झुको..., बस चलते ही रहो...
-दीनदयाल उपाध्याय